DEPARTMENT OF HINDI

RABINDRNATH THAKUR VISHWAVIDYALAYA

NEP-2020 FYUGP/FYIMP SYLLABUS

हिन्दी विभाग

रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम/पंच-वर्षीय एकीकृत स्नातकोत्तर कार्यक्रम का संशोधित पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम परिचय (Course Introduction)

FYUGP (स्नातक / Four Year Undergraduate Programme) पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम चार-वर्षीय स्नातक (FYUGP) स्तर के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के आलोक में तैयार किया गया एक व्यावहारिक व शोध-उन्मुख अकादमिक उपक्रम है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास (आदिकाल से आधुनिक काल), प्रमुख काव्य-धाराओं, गद्य-विधाओं, भाषा-विज्ञान और देवनागरी लिपि के मूलभूत सिद्धांतों से समृद्ध कराना है। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम भारतीय काव्यशास्त्र, प्रयोजनमूलक हिंदी, प्रशासनिक पत्राचार, अनुवाद और डिजिटल मीडिया के व्यावहारिक प्रयोगों से विद्यार्थियों को परिचित कराता है। इस स्नातक पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक शोध में बदलने के लिए परियोजना कार्य (Project Work / DSC-454) को विशेष रूप से शामिल किया गया है। इसके तहत विद्यार्थी आवंटित शोध-निर्देशक के अधीन किसी साहित्यिक विभूति या विषय पर गहन साहित्य-सर्वेक्षण करते हुए 10,000 शब्दों का लघु शैक्षणिक परियोजना-कार्य तैयार करते हैं। इसके अलावा, स्नातक (Honours with Research) स्तर के अंतिम चरण में लघु शोध-प्रबंध (Dissertation) का भी प्रावधान है, जहाँ विद्यार्थी APA संदर्भ प्रणाली, यूनिकोड टंकण, प्लैजियारिज्म-मुक्त शोध-नैतिकता और पावरपॉइंट (PPT) प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अपनी शोध-क्षमता का विकास करते हैं। समग्र रूप से, यह स्नातक पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर उन्हें उच्च शिक्षा, अध्यापन, मीडिया, अनुवाद और प्रशासनिक क्षेत्रों में रोजगार के योग्य बनाता है।

PG (स्नातकोत्तर / 1-Year Master's Programme) पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (PG) स्तर के विद्यार्थियों के लिए निर्मित एक उच्च-स्तरीय, वैचारिक और शोध-केंद्रित पाठ्यक्रम है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि (मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण, अस्तित्ववाद), दार्शनिक सिद्धांतों और आधुनिक विमर्शों (स्त्री, दलित, आदिवासी) का सूक्ष्म एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन कराना है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी विभाजन-केंद्रित कथा-साहित्य, पूर्वोत्तर भारत में हिंदी साहित्य, संत काव्य, कृष्ण काव्य, समकालीन साहित्य, प्रवासी साहित्य, आत्मकथा व जीवनी तथा पटकथा एवं संवाद लेखन (DSC-555) जैसे विशिष्ट क्षेत्रों का गहन अनुशीलन करते हैं। इस पाठ्यक्रम के एक अनिवार्य और अति-महत्वपूर्ण घटक के रूप में लघु शोध-प्रबंध (Dissertation / Research Project) को समाविष्ट किया गया है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी आवंटित शोध-निर्देशक के मार्गदर्शन में विषय-चयन, परिकल्पना निर्माण, विस्तृत डेटा संकलन व वर्गीकरण करते हुए मौलिक शोध-आलेख तैयार करते हैं। इसमें 300 अंकों के लिखित मूल्यांकन तथा 200 अंकों के त्रिस्तरीय समिति (जिसमें कुलपति प्रतिनिधि, विभागाध्यक्ष और शोध-निर्देशक शामिल हैं) के समक्ष पावरपॉइंट प्रस्तुतीकरण व मौखिक परीक्षा (Viva-Voce) का स्पष्ट प्रावधान है। यह PG पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में न केवल गहन समीक्षात्मक व तुलनात्मक दृष्टि विकसित करता है, बल्कि उन्हें शोध-नैतिकता और तकनीकी दक्षता प्रदान कर भविष्य में Ph.D. जैसे उच्च-स्तरीय अनुसंधान और अकादमिक नेतृत्व के लिए पूरी तरह सक्षम बनाता है।

<u>प्रथम छमाही</u>

PAPER TITLE : हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)
PAPER CODE : DSM-101
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक) विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के विकासक्रम से परिचित कराता है। इसमें आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियों, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों और प्रमुख कवियों का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी साहित्येतिहास-लेखन की परंपरा, काल-विभाजन एवं नामकरण की प्रक्रिया को समझेंगे। साथ ही, वे यह भी जान पाएंगे कि किस प्रकार साहित्य समाज, धर्म और संस्कृति से जुड़कर विकसित हुआ। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल ऐतिहासिक जानकारी देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और तुलनात्मक अध्ययन की क्षमता विकसित करना भी है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन की परंपरा और काल-विभाजन की पद्धति से अवगत कराना।
- आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का विश्लेषण कराना।
- प्रमुख काव्यधाराओं (सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, निर्गुण, सगुण, रीतिबद्ध आदि) की विशेषताओं और प्रवृत्तियों का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना ताकि वे साहित्य को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में समझ सकें।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा और काल-विभाजन को स्पष्ट रूप से समझ पाएंगे।
- आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों और कवियों का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विभिन्न काव्यधाराओं की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- साहित्यिक इतिहास को सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आंदोलनों से जोड़कर देखने की क्षमता विकसित करेंगे।

इकाई – 1 **हिन्दी साहित्येतिहास लेखन:** हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन की परंपरा का परिचय।
काल-विभाजन एवं नामकरण (आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के संदर्भ में)।

इकाई – 2 **आदिकाल:** आदिकाल की परिस्थितियाँ एवं काव्य प्रवृत्तियाँ। सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य ।

इकाई – 3 **भक्तिकाल:** भक्तिकाल की परिस्थितियाँ एवं काव्य प्रवृत्तियाँ। भक्ति आंदोलन के उदय के कारण। भक्तिकाल की काव्य-धाराएँ - निर्गुण काव्य-धारा : ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेममार्गी शाखा (सामान्य परिचय, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि)। सगुण काव्य-धारा : रामभक्ति शाखा, कृष्णभक्ति शाखा (सामान्य परिचय, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि)।

इकाई – 4 **रीतिकाल:** रीतिकाल की परिस्थितियाँ एवं काव्य प्रवृत्तियाँ। रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्यधारा (सामान्य परिचय एवं प्रमुख कवि)। वीरकाव्य, भक्तिकाव्य, नीतिकाव्य।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

द्वितीय छमाही

PAPER TITLE : हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)
PAPER CODE : DSM-151
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकासक्रम से अवगत कराता है। इसमें भारतेन्दु युग से लेकर द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता और समकालीन कविता तक की प्रमुख प्रवृत्तियों और कवियों का अध्ययन कराया जाएगा। साथ ही, हिन्दी गद्य के स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उत्तर विकास की जानकारी दी जाएगी। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह समझाना है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य किस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होकर विकसित हुआ और खड़ीबोली हिन्दी गद्य ने किस प्रकार अपनी सशक्त पहचान बनाई।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को आधुनिक काल के सीमांकन, नामकरण और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराना।
- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और उनकी साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कराना।
- छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता और समकालीन कविता की विशेषताओं एवं प्रमुख कवियों का परिचय देना।
- हिन्दी गद्य के स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उत्तर विकास की समझ प्रदान करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकासक्रम और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझ पाएंगे।
- भारतेन्दु और द्विवेदी युग की प्रवृत्तियों तथा प्रमुख कवियों का गहन अध्ययन कर सकेंगे।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की विभिन्न धाराओं (छायावाद से समकालीन कविता तक) का तुलनात्मक विश्लेषण कर पाएंगे।
- हिन्दी गद्य के विकासक्रम को समझकर साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उसका मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई – 1 **आधुनिक काल:** सीमांकन, नामकरण, पृष्ठभूमि (सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक) भारतेन्दु युग : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि, द्विवेदी युग : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि

इकाई – 2 **छायावाद एवं छायावादोत्तर काव्य धाराएँ:** छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद (सामान्य परिचय, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि)

इकाई – 3 **स्वातंत्र्योत्तर काव्य धाराएँ:** नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता (सामान्य परिचय, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि)

इकाई – 4 **हिन्दी गद्य का विकास:** स्वतंत्रता-पूर्व हिन्दी गद्य**,** स्वतंत्रता पश्चात हिन्दी गद्य।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाब राय, लक्ष्मीनारायण प्रकाशन, आगरा।
7. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ.अमित कुमार सिंह, साहित्य सरोवर प्रकाशन, आगरा।
9. हिन्दी का गद्य साहित्य-डॉ. रामचन्द्र तिवारी,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

तृतीय छमाही

PAPER TITLE : भारतीय काव्यशास्त्र
PAPER CODE : DSC-201
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "भारतीय काव्यशास्त्र" विद्यार्थियों को भारतीय काव्य-परम्परा के प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित कराता है। इसमें रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य जैसे सिद्धान्तों की अवधारणा, स्वरूप और महत्त्व का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य कविता के उन तत्त्वों को समझाना है जो उसे ग्राह्य और प्राणवान बनाए रखते हैं, साथ ही अन्य साहित्यिक विधाओं की शास्त्रीय समीक्षा की पद्धति की जानकारी देना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा और प्रमुख सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य सिद्धान्तों की अवधारणा और महत्त्व को समझाना।
- कविता के सौंदर्यबोध और कलात्मक तत्त्वों की पहचान कराना।
- विद्यार्थियों में शास्त्रीय समीक्षा की पद्धति और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा और प्रमुख सिद्धान्तों की गहन समझ प्राप्त करेंगे।
- वे रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य सिद्धान्तों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कविता के कलात्मक तत्त्वों और सौंदर्यबोध को पहचानने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी शास्त्रीय समीक्षा की पद्धति अपनाकर साहित्यिक कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई – 1 **भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा :** काव्य-लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन। रस सिद्धान्त: रस की अवधारणा, परिभाषा, रसांग, रस-निष्पति और साधारणीकरण।

इकाई – 2 **अलंकार सिद्धान्त :** अलंकार का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं काव्य में अलंकारों का महत्त्व। प्रमुख अलंकारों का परिचय (अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, यमक, रुपक, शलेष, वक्रोक्ति,विभावना, अतिशयोक्ति एवं विरोधाभास)।

इकाई – 3 **रीति सिद्धान्त :** रीति का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार। काव्य-गुण एवं काव्य-दोष का संक्षिप्त परिचय। शब्द शक्ति - अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं प्रकार।

इकाई – 4 **ध्वनि सिद्धान्त :** ध्वनि की अवधारणा, अर्थ, स्वरूप, परिभाषा। ध्वनि के भेद (ध्वनि काव्य, गुणीभूतव्यंग्य काव्य और चित्र काव्य का सामान्य परिचय।

इकाई – 5 **वक्रोक्ति एवं औचित्य सिद्धान्त :** वक्रोक्ति की अवधारणा (अर्थ,परिभाषा, स्वरुप एवं प्रकार।) औचित्य की अवधारणा (अर्थ,परिभाषा एवं स्वरुप)

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. भारतीय काव्य शास्त्र - डॉ.भगीरथ मिश्र,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. काव्यालोचन - ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री,आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
3. भारतीय काव्य चिन्तन - शोभाकान्त मिश्र,अनुपम प्रकाशन,पटना।
4. रस सिद्धान्त का पुनर्विवेचन – गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारतीय काव्य शास्त्र का संक्षिप्त विवेचन - डॉ. सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरुप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय काव्य शास्त्र - प्रो.योगेन्द्रप्रताप सिंह , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

PAPER TITLE : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता
PAPER CODE : DSC-202
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता" विद्यार्थियों को लगभग आठ सौ वर्षों की काव्य-यात्रा से परिचित कराता है। इसमें विद्यापति, कबीर, सूरदास, मीराँबाई, तुलसीदास, केशवदास, बिहारी, घनानन्द, पद्माकर और भूषण जैसे प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को तत्कालीन जीवन-मूल्यों, सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना और शिल्पगत विशेषताओं की समझ प्रदान करना है, ताकि वे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कविता के विकासक्रम को आलोचनात्मक दृष्टि से देख सकें।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता के इतिहास और विकास से परिचित कराना।
- प्रमुख कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को समझाना।
- कविता की शिल्पगत विशेषताओं और कलात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और साहित्यिक संवेदनशीलता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता के इतिहास और प्रवृत्तियों की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- वे विद्यापति, कबीर, सूर, मीराँ, तुलसी, बिहारी आदि कवियों की रचनाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कविता की शिल्पगत विशेषताओं और कलात्मक अभिव्यक्ति को पहचानने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर साहित्यिक परम्परा और युगबोध को समझ पाएंगे।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें:

1. विद्यापति: सं. आनन्दप्रकाश दीक्षित, साहित्य प्रकाशन मंदिर, ग्वालियर
2. हिन्दी काव्य सुधा: संपा. भूपेन्द्र रायचौधुरी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, गौहाटी
3. रीतिकाव्य-संग्रह: संपा. विजयपाल सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

इकाई – 1	विद्यापति	: पद (क्रम संख्या 1 से 8 तक)
	कबीर	: साखी (क्रम संख्या 1 से 15 तक)

इकाई – 2	सूरदास	: विनय (क्रम संख्या 1 एवं 2), वृन्दावन लीला (क्रम संख्या 6 और 7), भ्रमरगीत (क्रम संख्या 10 एवं 12)
	मीराँबाई	: पद (क्रम संख्या 1, 2 और 5)
	तुलसीदास	: केवट प्रसंग
इकाई – 3	केशवदास	: छन्द संख्या - 2, 23, 25, 35, 38
	बिहारी	: दोहा (क्रम संख्या 1, 2, 14, 15, 23, 32, 51, 57, 58, 60, 62, 69, 72, 75, 76,)
इकाई – 4	घनानन्द	: पद (क्रम संख्या 1 से 3 तक)
	पद्माकर	: पद (क्रम संख्या 7, 8 ,9 तक)
	भूषण	: पद (क्रम संख्या 2, 3, 5, और 10)

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. विद्यापति – सं. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. कबीर – हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कबीर – सं. विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. पदुमावति – सं. कन्हैया सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. तुलसीदास – सं. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सूरदास – सं. हरबंशलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. बिहारी का नया मूल्यांकन - डॉ.बच्चन सिंह,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. घनानन्द का साहित्यिक अवदान - डॉ. हनुमंत रणखांब, विद्या प्रकाशन कानपुर।

<u>चतुर्थ छमाह</u>

PAPER TITLE : भाषा-विज्ञान
PAPER CODE : DSC-251
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "भाषा-विज्ञान" विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप, उसके परिवर्तन और विविध आयामों से परिचित कराता है। इसमें भाषा की परिभाषा, विशेषताएँ, बोली और भाषा का अंतर, तथा भाषा-विज्ञान के अध्ययन के अंगों का विवेचन किया गया है। ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान और अर्थ विज्ञान के माध्यम से भाषा की संरचना और प्रयोग को समझाया जाता है। साथ ही भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध व्याकरण, मनोविज्ञान, समाज-विज्ञान और शरीर-विज्ञान से स्पष्ट किया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा-विज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति और आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को भाषा-विज्ञान की परिभाषा, स्वरूप और अध्ययन के अंगों से परिचित कराना।
- ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान और अर्थ विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों को समझाना।
- भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध अन्य विषयों (व्याकरण, मनोविज्ञान, समाज-विज्ञान, शरीर-विज्ञान) से स्पष्ट करना।
- विद्यार्थियों में भाषा-विज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी भाषा-विज्ञान की परिभाषा, स्वरूप और अध्ययन के अंगों की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- वे ध्वनि, रूप, वाक्य और अर्थ विज्ञान के सिद्धान्तों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भाषा-विज्ञान और अन्य विषयों के परस्पर सम्बन्ध को पहचानने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी भाषा-विज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई – 1 भाषा : परिभाषा, विशेषताएँ, भाषा परिवर्तन के कारण, बोली और भाषा।
भाषा-विज्ञान : परिभाषा, अध्ययन के अंग। व्याकरण, मनोविज्ञान, समाज-विज्ञान और शरीर-विज्ञान के साथ भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध। भाषा-विज्ञान – विज्ञान है या कला?

इकाई – 2 ध्वनि विज्ञान : ध्वनि की परिभाषा, स्वरों का वर्गीकरण, स्थान और प्रयत्न के आधार पर व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण।

रूप विज्ञान : रूप की परिभाषा, सम्बन्ध तत्त्व और अर्थ तत्त्व, रूप परिवर्तन के कारण।

इकाई – 3 वाक्य विज्ञान : वाक्य की परिभाषा, वाक्य रचना में ध्यान देने योग्य बातें, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण।

अर्थ विज्ञान : अर्थ की परिभाषा, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ।

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
2. भाषविज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना।
3. सामान्य भाषाविज्ञान – डॉ. बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
4. भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. हिन्दी भाषा - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
6. हिन्दी भाषा का इतिहास – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।

PAPER TITLE : आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)
PAPER CODE : DSC-252
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "खड़ीबोली हिन्दी की आधुनिक कविता" विद्यार्थियों को भारतेंदुयुगीन, द्विवेदीयुगीन और छायावादयुगीन कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं से परिचित कराता है। इसमें भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की कविताओं का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक-बोध, काव्य शिल्प और खड़ीबोली हिन्दी के निरंतर निखरते स्वरूप की समझ प्रदान करना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को भारतेंदु, द्विवेदी और छायावाद युगीन कवियों की प्रमुख रचनाओं से परिचित कराना।
- आधुनिक हिन्दी कविता के उद्भव, स्वरूप और शिल्पगत विशेषताओं को समझाना।
- कविता के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक-बोध का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और साहित्यिक संवेदनशीलता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी भारतेंदु, द्विवेदी और छायावाद युगीन कवियों की रचनाओं का गहन अध्ययन कर सकेंगे।
- वे आधुनिक हिन्दी कविता की शिल्पगत विशेषताओं और भाषा के विकास को समझ पाएंगे।
- कविता के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक-बोध का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर खड़ीबोली हिन्दी के निरंतर निखरते स्वरूप को पहचान सकेंगे।

पाठ्य पुस्तक:
'आधुनिक काव्य संग्रह', संपादक - रामवीर सिंह, प्रस्तुतकर्ता केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

इकाई – 1 भारतेन्दु हरिश्चंद्र – यमुना-शोभा
मैथिलीशरण गुप्त – यशोधरा
माखनलल चतुर्वेदी – कैदी और कोकिला, पुष्प की अभिलाषा

इकाई - 2 जयशंकर प्रसाद – हे लाज भरे सौंदर्य बता दो**,** अरुण यह मधुमय देश हमारा
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – जूही की कली, संध्या सुंदरी

इकाई – 3 सुमित्रानंदन पंत - ताज, परिवर्तन

महादेवी वर्मा – मैं नीर भरी दुख की बदली, यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. आधुनिक हिन्दी कविता - डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ - डॉ० रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. भारतेन्दु : एक नयी दृष्टि - लहरी राम मीणा, स्वराज प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की अंतर्कथाओं के स्रोत - शशि अग्रवाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
5. निराला की साहित्य-साधना - डॉ० रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. कवि सुमित्रानन्दन पन्त - आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
7. महादेवी - डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. कामायनी : एक पुनर्विचार - गजानन माधव 'मुक्तिबोध', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
9. छायावाद की परिक्रमा - श्याम किशोर मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. प्रसाद, पन्त और मैथिलीशरण - रामधारी सिंह 'दिनकर', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. जयशंकर प्रसाद - आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

PAPER TITLE **: हिन्दी कथा साहित्य**
PAPER CODE **: DSC-253**
PAPER CREDIT **: 4 (व्याख्यान-4)**
TOTAL MARKS **: 100 (TH: 60 + IA: 40)**

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी कथा साहित्य के उद्भव, विकास और स्वरूप से परिचित कराता है। इसमें स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्र्योत्तर भारतीय समाज के विविध आयामों को प्रेमचंद, प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा, भीष्म साहनी, ज्ञानरंजन आदि कथाकारों की रचनाओं के माध्यम से समझने का अवसर मिलता है। विद्यार्थी न केवल कथा साहित्य की ऐतिहासिक यात्रा को जानेंगे, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील दृष्टि भी विकसित करेंगे।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी कहानी और उपन्यास के उद्भव एवं विकास-क्रम से अवगत कराना।
- प्रमुख कथाकारों की चयनित रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज और जीवन की यथार्थपरक समझ विकसित करना।
- साहित्यिक कृतियों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि, साहित्यिक संवेदनशीलता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी कथा साहित्य के ऐतिहासिक विकास और प्रमुख प्रवृत्तियों को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- वे प्रेमचंद, प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा, भीष्म साहनी आदि कथाकारों की रचनाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण कर पाएंगे।
- विद्यार्थी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से भारतीय समाज के विविध आयामों—नैतिकता, राजनीति, संस्कृति और मानवीय संबंधों की गहरी समझ प्राप्त करेंगे।
- वे आलोचनात्मक लेखन, प्रस्तुतीकरण और रचनात्मक अभिव्यक्ति में दक्षता हासिल करेंगे, जिससे आगे के अध्ययन और शोध के लिए आधार तैयार होगा।

पाठ्य पुस्तकें एवं ऑनलाइन लिंक्स:

1. कर्मभूमि – मुंशी प्रेमचंद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

2. चित्रलेखा - भगवतीचरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. https://www.hindisamay.com/content/ek-tokari-bhar-mitti
4. https://hindisamay.com/premchand%20samagra/mansarovar8/budhi-kaki.htm
5. https://hindisamay.com/kahani/akashdeep.htm
6. https://www.hindwi.org/story/chief-ki-dawat-bhisham-sahn-story
7. https://www.hindwi.org/story/pita-gyanranjan-story

इकाई - 1 हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास
हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास

इकाई - 2 एक टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)
बूढ़ी काकी (प्रेमचंद)
आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद)
चीफ की दावत (भीष्म साहनी)
पिता (ज्ञानरंजन)

इकाई - 3 कर्मभूमि (प्रेमचंद)

इकाई - 4 चित्रलेखा (भगवतीचरण वर्मा)

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. प्रेमचन्द - डॉ० रामविलास शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. प्रेमचन्द : साहित्य-विवेचन - आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा - डॉ० रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सृजन और आलोचना - डॉ चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
6. हिन्दी कहानी की विकास-प्रक्रिया - आनन्द प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. नयी कहानी की भूमिका - कमलेश्वर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी कहानी: अंतरंग पहचान – डॉ. रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
9. हिन्दी कहानी के आन्दोलन: उपलब्धियाँ और सीमाएं -रजनीश कुमार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
10. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

पंचम छमाही

PAPER TITLE : हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता
PAPER CODE : DSC-301
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 80 + IA: 20)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम ''हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता'' विद्यार्थियों को हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव, विकास और समकालीन स्वरूप से परिचित कराता है। इसमें साहित्यिक पत्रकारिता के अर्थ, अवधारणा और महत्त्व को स्पष्ट करते हुए स्वतंत्रता पूर्व के विभिन्न युगों—भारतेन्दु, द्विवेदी और छायावाद—की प्रवृत्तियों तथा चुनौतियों का अध्ययन कराया जाता है। स्वतंत्रता पश्चात साहित्यिक पत्रकारिता में लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक चेतना और विकास की चुनौतियों को समझने का अवसर मिलता है। भूमण्डलीकरण के बाद व्यवसायीकरण, विज्ञापन संस्कृति और ऑनलाइन पत्रकारिता के प्रभावों का विश्लेष भी इसमें सम्मिलित है। विद्यार्थी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के योगदान से अवगत होकर हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता की निरंतरता और परिवर्तनशीलता को समझेंगे। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम भाषा, साहित्य और संस्कृति को उर्जस्वित बनाने में साहित्यिक पत्रकारिता की भूमिका को रेखांकित करता है और विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि तथा सामाजिक सरोकारों से जोड़ता है

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के उद्भव, विकास और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से अवगत कराना।
- स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात साहित्यिक पत्रकारिता की प्रवृत्तियों, चुनौतियों और योगदान का विश्लेषण कराना।
- भूमण्डलीकरण, विज्ञापन और ऑनलाइन पत्रकारिता के प्रभावों को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि, सामाजिक चेतना और साहित्यिक पत्रकारिता के व्यावहारिक महत्व की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास, स्वरूप और विकास की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- वे स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात की पत्रकारिता की प्रवृत्तियों एवं चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- भूमण्डलीकरण और डिजिटल युग में साहित्यिक पत्रकारिता के बदलते स्वरूप को पहचान सकेंगे।
- विद्यार्थी साहित्यिक पत्रकारिता को भाषा, साहित्य और संस्कृति के संवर्धन तथा सामाजिक चेतना के उपकरण के रूप में ग्रहण कर सकेंगे।

इकाई – 1 हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास

साहित्यिक पत्रकारिता: अर्थ, अवधारणा एवं महत्त्व

हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के उदय के कारण

इकाई – 2 स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी पत्रकारिता

भारतेन्दु युगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

द्विवेदी युगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता : परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

स्वतंत्रतापूर्व साहित्यिक पत्रकारिता के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ एवं ज्वलंत मुद्दे।

इकाई – 3 स्वतंत्रता पश्चात हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

आजादी के बाद जनतंत्र एवं विकास की चुनौतियाँ तथा हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता

समकालीन हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

स्वतंत्रता पश्चात हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं चुनौतियाँ

इकाई – 4 भूमण्डलीकरण के बाद की हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का व्यवसायीकरण

विज्ञापन और हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

ऑनलाइन हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

अद्यतन प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ- कविवचन सुधा, हिन्दी प्रदीप, सरस्वती, हँस, अछूत भारत का सामान्य परिचय।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम - डॉ. वेदप्रताप वैदिक, हिन्दी बुक सेंटर नई दिल्ली।
2. हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास - जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिन्दी पत्रकारिता और भूमण्डलीकरण - विजेन्द्र कुमार, नटराज प्रकाशन।
4. पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य,राजकिशोर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियाँ - पृथ्वीनाथ पाण्डेय,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. हिन्दी पत्रकारिता - कृष्णबिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

PAPER TITLE : छायावादोत्तर हिन्दी कविता
PAPER CODE : DSC-302
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "छायावादोत्तर हिन्दी कविता" विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी कविता के विविध आयामों से परिचित कराता है। छायावाद के बाद के दौर में हिन्दी कविता ने जीवन-मूल्यों, सामाजिक यथार्थ और राजनीतिक चेतना को नए रूप में अभिव्यक्त किया। अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, भवानीप्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती, केदारनाथ सिंह, श्रीकान्त वर्मा और धूमिल जैसे कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को तत्कालीन युग-बोध, सामाजिक संघर्ष, जनतांत्रिक आकांक्षाओं और मानवीय संवेदनाओं का साक्षात्कार कराया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में कविता के सौंदर्यबोध के साथ-साथ विचारधारा, प्रयोगशीलता और सामाजिक सरोकारों को समझने पर बल दिया गया है। निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन से विद्यार्थी न केवल कवियों की काव्य-दृष्टि और शैलीगत विशेषताओं को पहचानेंगे, बल्कि बदलते जीवन-मूल्यों और साहित्यिक चेतना के विकासक्रम को भी समझ सकेंगे। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम उन्हें आलोचनात्मक दृष्टि, साहित्यिक संवेदनशीलता और युगानुकूल सामाजिक चेतना से समृद्ध करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को छायावादोत्तर हिन्दी कविता के प्रमुख कवियों और उनकी प्रतिनिधि रचनाओं से परिचित कराना।
- कविता में निहित सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण कराना।
- आधुनिक हिन्दी कविता की प्रयोगशीलता, विचारधारा और शैलीगत विशेषताओं को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और साहित्यिक संवेदनशीलता का विकास करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी छायावादोत्तर हिन्दी कविता के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं की गहन समझ प्राप्त करेंगे।
- वे कविता में निहित सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आधुनिक हिन्दी कविता की प्रयोगशीलता और शैलीगत विविधता को पहचान सकेंगे।
- विद्यार्थी बदलते जीवन-मूल्यों और साहित्यिक चेतना के विकासक्रम को समझते हुए आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करेंगे।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें:

1. अस्मिता – सम्पादक डॉ. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव एवं जितेन्द्र पाठक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

2. एकत्र – सम्पादक डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

इकाई – 1 अज्ञेय - कलगी बाजरे की, साँप
गजानन माधव मुक्तिबोध - भूल-गलती, मैं दूर हूँ

इकाई – 2 वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' - अकाल और उसके बाद, कालिदास
भवानीप्रसाद मिश्र - गीतफरोश, टूटने का सुख

इकाई – 3 धर्मवीर भारती - पंख, पहिए और पट्टियाँ, पराजित पीढ़ी का गीत
केदारनाथ सिंह - फर्क नहीं पड़ता, दिग्विजय का अश्व

इकाई – 4 श्रीकान्त वर्मा - टूटी पड़ी है परम्परा, भद्रवंश का प्रेत
सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' - मोचीराम, रोटी और संसद, धूमिल की अंतिम कविता

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. आधुनिक कविता यात्रा - डॉ रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद।
2. कवि अज्ञेय - नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. समकालीन हिन्दी कविता - ए. अरविन्दाक्षण, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली।
4. नागार्जुन और उनकी कविता - नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नई कविता और उसका मूल्यांकन - सुरेशचन्द्र सहगल, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. कविता के नए प्रतिमान – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

PAPER TITLE : प्रयोजनमूलक हिन्दी
PAPER CODE : DSC-303
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "प्रयोजनमूलक हिन्दी" विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के विविध रूपों और उसके व्यावहारिक प्रयोग से परिचित कराता है। इसमें सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी और प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप एवं अंतर को स्पष्ट किया गया है। कार्यालयीन, वैज्ञानिक, व्यावसायिक तथा संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी के प्रकार और लक्षणों का अध्ययन कराते हुए आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था में हिन्दी की भूमिका समझाई जाती है। प्रशासनिक पत्राचार जैसे आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, ज्ञापन और प्रेस विज्ञप्ति के प्रारूपों के साथ टिप्पण लेखन का अभ्यास कराया जाता है। साथ ही व्यावसायिक पत्र लेखन, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद (हिन्दी से अंग्रेज़ी) के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक दक्षता प्रदान की जाती है। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम उन्हें हिन्दी के व्यावहारिक स्वरूपों से भली-भाँति परिचित कराकर आजीविका के विविध क्षेत्रों में अवसर तलाशने योग्य बनाता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को सामान्य, साहित्यिक और प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप एवं अंतर से परिचित कराना।
- कार्यालय, विज्ञान, व्यवसाय और संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी के प्रकार और लक्षणों का अध्ययन कराना।
- प्रशासनिक पत्राचार और टिप्पण लेखन के विविध प्रारूपों की जानकारी देना।
- व्यावसायिक पत्र लेखन, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद के माध्यम से व्यावहारिक दक्षता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप और विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- वे कार्यालयीन, वैज्ञानिक, व्यावसायिक और संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- प्रशासनिक पत्राचार और टिप्पण लेखन के विविध प्रारूपों को व्यवहार में ला सकेंगे।
- विद्यार्थी व्यावसायिक पत्र लेखन, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद के माध्यम से रोजगारोन्मुख दक्षता प्राप्त करेंगे।

इकाई - 1 प्रोयजनमूलक हिन्दी का अर्थ, स्वरूप एवं विशेषताएँ। सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी तथा प्रोयजनमूलक हिन्दी, संबंध तथा अंतर।

इकाई - 2 प्रोयजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रकार और लक्षण : कार्यालयीन हिन्दी, वैज्ञानिक हिन्दी, व्यावसायिक हिन्दी, संचार माध्यम की हिन्दी।

इकाई - 3 आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था में हिन्दी की भूमिका : प्रशासनिक व्यवस्था में पत्राचार का स्वरूप और महत्त्व, प्रशासनिक पत्राचार के विविध प्रकार, सामान्य परिचय और प्रारूप (कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, कार्यालय ज्ञापन और प्रेस विज्ञप्ति) टिप्पण लेखन।

इकाई - 4 भाषा व्यवहार के अन्य क्षेत्र – व्यावसायिक पत्र लेखन, पारिभाषिक शब्दावली, अनुवाद (हिन्दी से अंग्रेजी कुछ अंश)।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी, अनुपम प्रकाशन, पटना।
3. राजभाषा हिन्दी – डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. राजभाषा हिन्दी : विकास के विविध आयाम – डॉ. मलिक मोहम्मद, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण - प्रो० विराज, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली ।
6. व्यावहारिक आलेखन और टिप्पण - डॉ० अमूल्य चन्द्र बर्मन, असम हिन्दी प्रकाशन, गुवाहाटी।
7. कार्यालयी सहायिका – हरिबाबू कंसल, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद, दिल्ली।
8. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. अनुवाद-सुधा (भाग-1) डॉ० अच्युत शर्मा (संपा.), शब्द भारती, गुवाहाटी।
10. अनुवाद-सुधा (भाग-2) डॉ० अच्युत शर्मा (संपा.), शब्द भारती, गुवाहाटी।

PAPER TITLE : हिन्दी निबन्ध और अन्य गद्य विधाएँ
PAPER CODE : DSC-304
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "हिन्दी निबन्ध और अन्य गद्य विधाएँ" विद्यार्थियों को निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज तथा हास्य-व्यंग्य जैसी गद्य विधाओं के स्वरूप और विकास से परिचित कराता है। इसमें भारतेन्दु, द्विवेदी, शुक्ल, बेनीपुरी, दिनकर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, तुलसीराम और परसाई जैसे लेखकों की प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में गद्य विधाओं के प्रति रुचि जगाना, उनकी रचना-प्रक्रिया की समझ विकसित करना और बदलते जीवन-मूल्यों व सामाजिक चेतना से उन्हें जोड़ना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- हिन्दी निबन्ध और अन्य गद्य विधाओं के स्वरूप, उद्भव और विकास से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
- प्रमुख गद्यकारों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना का अध्ययन कराना।
- गद्य विधाओं की रचना-प्रक्रिया और शैलीगत विशेषताओं को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और बदलते जीवन-मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज और हास्य-व्यंग्य जैसी गद्य विधाओं की गहन समझ प्राप्त करेंगे।
- वे प्रमुख गद्यकारों की रचनाओं के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण कर सकेंगे।
- गद्य विधाओं की शैलीगत विशेषताओं और रचना-प्रक्रिया को पहचान सकेंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि और जीवन-मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता विकसित कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें:

1. हिन्दी निबन्ध - संपा. डॉ. शिवप्रसाद सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
2. हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र - संपा. डॉ. चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. हिन्दी हास्य-व्यंग्य संकलन - संपा. श्रीलाल शुक्ल एवं प्रेम जनमेजय, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
4. मुर्दहिया - डॉ. तुलसीराम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

इकाई – 1	हिन्दी निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण एवं रिपोर्ताज: अर्थ, स्वरुप, परिभाषा एवं तत्त्व हिन्दी निबन्ध का उद्भव एवं विकास	
इकाई – 2	एक अद्भूत अपूर्व स्वपन	: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
	हँस संदेश	: महावीर प्रसाद द्विवेदी
	ईर्ष्या	: रामचन्द्र शुक्ल
	गेहूँ बनाम गुलाब	: रामवृक्ष बेनीपुरी
इकाई – 3	ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से	: रामधारी सिंह 'दिनकर'
	कुटज	: आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
	प्रेचन्द	: महादेवी वर्मा
	यथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा	: राहुल सांकृत्यायन
इकाई – 4	मुर्दहिया	: डॉ.तुलसी राम
	इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर	: हरिशंकर परसाई
	एक दीक्षांत भाषण	: रवीन्द्रनाथ त्यागी

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वराणसी।
2. हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार - डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद मन्दिर,आगरा।
3. हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार - डॉ. राजकिशोर सिंह, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ।
4. ललित निबन्ध - केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सम्पादक नगेन्द्र एवं हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

षष्ठ छमाही

PAPER TITLE : पाश्चात्य काव्यशास्त्र
PAPER CODE : DSC-351
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख परंपराओं और सिद्धांतों से परिचित कराता है। प्लेटो और अरस्तू से लेकर लोंजाइनस, वर्डस्वर्थ, क्रोचे, टी.एस. इलियट तथा आई.ए. रिचर्ड्स तक के चिंतन का अध्ययन विद्यार्थियों को काव्य-दृष्टि, साहित्यिक वादों और शैली-विज्ञान की गहन समझ प्रदान करता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि, तुलनात्मक विवेचना और साहित्यिक सिद्धांतों की व्यावहारिक उपयोगिता से जोड़ना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को प्लेटो, अरस्तू, लोंजाइनस आदि द्वारा प्रतिपादित काव्य-सिद्धांतों की मूलभूत अवधारणाओं से अवगत कराना।
- आधुनिक चिंतकों जैसे वर्डस्वर्थ, क्रोचे, टी.एस. इलियट और आई.ए. रिचर्ड्स की काव्य-दृष्टि और साहित्यिक वादों का तुलनात्मक अध्ययन कराना।
- स्वच्छंदतावाद, यथार्थवाद और अस्तित्ववाद जैसे साहित्यिक आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और महत्त्व को समझाना।
- शैली-विज्ञान की परिभाषा, स्वरूप और उपयोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को आलोचनात्मक विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों और चिंतकों की अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझ और व्याख्यायित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न साहित्यिक वादों और आंदोलनों की तुलनात्मक विवेचना कर सकेंगे और उन्हें भारतीय साहित्यिक परंपरा से जोड़ पाएंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि से काव्य और साहित्य का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी शैली-विज्ञान और संप्रेषण-सिद्धांत का प्रयोग कर साहित्यिक पाठों की गहन व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई - 1 प्लेटो – काव्य सम्बन्धी मान्यताएं
अरस्तू – अनुकरण एवं विरेचन सिद्धांत

इकाई - 2 लोंजाइनस - काव्य में उदात्त की अवधारणा
वर्डस्वर्थ – काव्यभाषा का सिद्धांत
क्रोचे – अभिव्यंजनावाद

इकाई - 3 टी .एस. इलियट – परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत
आई. ए. रिचर्ड्स - मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण-सिद्धांत

इकाई - 4 स्वच्छंदतावाद, यथार्थवाद एवं अस्तित्ववाद का स्वरूप एवं महत्त्व
शैली विज्ञान - परिभाषा स्वरूप एवं उपयोगिता

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ० भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
3. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन –डॉ. सत्यदेव चौधरी और डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
4. पाश्चात्य साहित्य-चित्तन – डॉ. निर्मला जैन और कुसुम बंठिया, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. साहित्यिक निबन्ध – डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. पाश्चात्य काव्य-चिन्तन - करुणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।

PAPER TITLE	**: हिन्दी नाटक एवं एकांकी**
PAPER CODE	**: DSC-352**
PAPER CREDIT	**: 4 (व्याख्यान-4)**
TOTAL MARKS	**: 100 (TH: 60 + IA: 40)**

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम हिन्दी नाटक और एकांकी विधा के उद्भव, विकास और स्वरूप को समझने के साथ-साथ प्रमुख नाटककारों और एकांकिकारों के प्रतिनिधि नाटकों/एकांकियों का अध्ययन कराता है। अंधा युग और महाभारत की एक साँझ जैसे ग्रंथों के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा, महाकाव्यात्मक दृष्टि और सांस्कृतिक मूल्यों से रूबरू कराया जाता है। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम आधुनिक जीवन-मूल्यों और भारतीय परम्परा के बीच सेतु का कार्य करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- हिन्दी नाटक और एकांकी की विधागत परिभाषा, तत्त्व, उद्भव और विकास-क्रम को समझाना।
- प्रमुख नाटककारों और एकांकिकारों के प्रतिनिधि नाटकों/एकांकियों का गहन अध्ययन कराना।
- अंधा युग और महाभारत की एक साँझ के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ना।
- आधुनिक जीवन-मूल्यों, सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को नाट्य-साहित्य के माध्यम से समझाना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी नाटक और एकांकी की विधागत विशेषताओं और विकास-क्रम को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी मोहन राकेश, धर्मवीर भारती और अन्य प्रमुख नाटककारों के नाटकों/एकांकियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अंधा युग और महाभारत की एक साँझ के अध्ययन से भारतीय ज्ञान परम्परा, महाकाव्यात्मक दृष्टि और सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात कर सकेंगे।
- विद्यार्थी नाट्य-साहित्य के माध्यम से आधुनिक जीवन-मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को पहचानने और आलोचनात्मक दृष्टि से विवेचन करने में सक्षम होंगे।

पाठ्य-पुस्तकें:

1. आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, राजपाल एण्ड सन्स, नयी दिल्ली।

2. अंधा युग - धर्मवीर भारती, किताब महल, इलाहाबाद।
3. श्रेष्ठ एकांकी - डॉ० विजयपाल सिंह (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

इकाई - 1 नाटक – परिभाषा, तत्त्व, उद्भव और विकास।
एकांकी – परिभाषा, तत्त्व, उद्भव और विकास, नाटक एवं एकांकी में अंतर।

इकाई - 2 आषाढ़ का एक दिन : मोहन राकेश

इकाई - 3 अंधा युग : धर्मवीर भारती

इकाई - 4 औरंगजेब की आखिरी रात : डॉ. रामकुमार वर्मा
भोर का तारा : जगदीशचंद्र माथुर
नए मेहमान : उदयशंकर भट्ट
सूखी डाली : उपेन्द्रनाथ अश्क
महाभारत की एक साँझ : भरत भूषण अग्रवाल

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. मोहन राकेश और उनके नाटक - डॉ० गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. हिन्दी नाटक - डॉ० बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. हिन्दी नाटक: उद्भव और विकास- डॉ० दशरथ ओझा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
5. कृति मूल्यांकन : आषाढ़ का एक दिन - आशीष त्रिपाठी (संपा.), राजपाल एण्ड सन्स, नयी दिल्ली।
6. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का रचना-संसार : एक पुनर्मूल्यांकन - डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव, साहित्य रत्नाकर, कानपुर।
7. नाटककार भारतेन्दु की रंग-परिकल्पना - सत्येन्द्र कुमार तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
8. समकालीन हिन्दी नाटक - नरनारायण राय, सन्मार्ग प्रकाशन, नयी दिल्ली।
9. हिन्दी एकांकी - सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
10. नाटककार : जगदीशचन्द्र माथुर - गोविन्द चातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।

PAPER TITLE	**: हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि**
PAPER CODE	**: DSC-353**
PAPER CREDIT	**: 4 (व्याख्यान-4)**
TOTAL MARKS	**: 100 (TH: 60 + IA: 40)**

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप और ऐतिहासिक विकास की गहन समझ प्रदान करता है। इसमें हिन्दी के भौगोलिक विस्तार, उपभाषाओं और बोलियों का अध्ययन कराया जाता है, जिससे भाषा की विविधता और सांस्कृतिक आधार स्पष्ट होता है। साथ ही, हिन्दी शब्द-रचना और वाक्य संरचना के नियमों का अभ्यास विद्यार्थियों को भाषिक दक्षता प्रदान करता है। देवनागरी लिपि के विकास, विशेषताओं और वैज्ञानिकता का अध्ययन विद्यार्थियों को भारतीय भाषिक परम्परा और मानकीकरण की प्रक्रिया से परिचित कराता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के उद्भव, स्वरूप और ऐतिहासिक विकास-क्रम की जानकारी देना।
- हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों के स्वरूप, वर्गीकरण और विशेषताओं का अध्ययन कराना।हिन्दी शब्द-रचना और वाक्य संरचना के नियमों के माध्यम से भाषिक दक्षता विकसित करना।
- देवनागरी लिपि के विकास, विशेषताओं, वैज्ञानिकता और मानकीकरण की प्रक्रिया से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उद्भव, स्वरूप और ऐतिहासिक विकास को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों का वर्गीकरण कर उनकी विशेषताओं का विवेचन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी शब्द-रचना और वाक्य संरचना के नियमों का प्रयोग कर शुद्ध एवं प्रभावी भाषा-प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और मानकीकरण की प्रक्रिया को समझकर भाषा-अध्ययन को अधिक व्यवस्थित बना सकेंगे।

इकाई - 1 हिन्दी – अर्थ, हिन्दी का भौगोलिक विस्तार,
हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल।

इकाई - 2 हिन्दी की उपभाषाएं, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी वर्ग और उनकी बोलियाँ, खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

इकाई - 3 हिन्दी शब्द रचना – उपसर्ग, प्रत्यय, समास।
वाक्य संरचना- वाक्य की परिभाषा, वाक्य के भेद - रचना और अर्थ की दृष्टि से, वाक्य रचना के सामान्य नियम।

इकाई - 4 देवनागरी लिपि - देवनागरी लिपि का विकास, विशेषता एवं वैज्ञानिकता।
देवनागरी लिपि का मानकीकरण।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी, किताबमहल, इलाहाबाद ।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद ।
3. हिन्दी भाषा का विकास - आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा और रामदेव त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि - लक्ष्मीकान्त वर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।
5. हिन्दी भाषा संरचना और प्रयोग - डॉ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
6. हिन्दी भाषा: इतिहास और स्वरूप राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
7. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास - डॉ उदयनारायण तिवारी, भारती भण्डार, इलाहाबाद।
8. हिन्दी व्याकरण - पं० कामताप्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
9. हिन्दी व्याकरण - विमर्श तेजपाल चौधरी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
10. आधुनिक हिन्दी व्याकरण एवं रचना - डॉ.वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना।
11. देवनागरी लिपि और हिन्दी संघर्षों की ऐतिहासिक यात्रा - रामनिरंजन परिमलेन्दु, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
12. हिन्दी भाषा इतिहास और स्वरूप - डॉ. राजमणि शर्मा,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

PAPER TITLE : प्रादेशिक साहित्य (असमीया)
PAPER CODE : DSC-354
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के साथ-साथ प्रादेशिक साहित्य की विविधता से परिचित कराता है। विशेष रूप से असमीया भाषा और साहित्य के उद्भव, विकास और विभिन्न युगों (आदियुग, वैष्णव युग, रोमांटिक युग और आधुनिक युग) की साहित्यिक विशेषताओं का अध्ययन कराया जाता है। बरगीत, कविताओं और कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों को असमीया साहित्य की संवेदना, शिल्पगत विशेषताओं और सांस्कृतिक चेतना का अनुभव कराया जाता है। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम भारतीय भाषाओं और साहित्यिक परम्पराओं के बीच सेतु का कार्य करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को असमीया भाषा के उद्भव और विकास की जानकारी देना।
- असमीया साहित्य के विभिन्न युगों (आदियुग, वैष्णव युग, रोमांटिक युग और आधुनिक युग) का सामान्य परिचय कराना।
- असमीया पद्य और गद्य के प्रमुख रचनाकारों की कृतियों के माध्यम से साहित्यिक संवेदना और शिल्पगत विशेषताओं का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों को प्रादेशिक साहित्य के अध्ययन के जरिए भारतीय भाषाओं और साहित्यिक परम्पराओं की विविधता और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी असमीया भाषा के उद्भव, विकास और स्वरूप को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी असमीया साहित्य के विभिन्न युगों की विशेषताओं और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी असमीया पद्य और गद्य की प्रतिनिधि कृतियों का अध्ययन कर उनकी संवेदना और शिल्पगत विशेषताओं को आत्मसात कर सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रादेशिक साहित्य के अध्ययन से भारतीय भाषाओं और साहित्यिक परम्पराओं की विविधता तथा सांस्कृतिक चेतना को पहचानने में सक्षम होंगे।

पाठ्य-पुस्तक:

1. असमीया साहित्य निकष – विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

इकाई - 1 असमीया भाषा : उद्भव और विकास

इकाई - 2 असमीया साहित्य का इतिहास – आदियुग, वैष्णव युग, रोमांटिक युग (सामान्य परिचय)

इकाई - 3 **असमीया पद्य**

श्रीमंत शंकरदेव	: मन मेरी राम चरनहि लागु, मधुर मुरुति मुरारू, नारायण काहे भकति करो तेरा, नाहि नाहि रमया बिने
मधावदेव	: गोविन्द दुध पिउ पिउ, तेजरे कमलापति, मेरो माइ ओहो यशोवा, नजाओ नजाओ तुमि
चंदरकुमार आगरवाला	: मानव वन्दना,
देवकान्त बरुवा	: सागर देखिछा

इकाई – 4 **असमीया गद्य**

सैयद अब्दुल मालिक	: मरम मरम लागे
स्नेह देवी	: विचित्र
भवेन्द्रनाथ शइकिया	: गह्वर

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. असमिया साहित्यर समीक्षात्मक इतिबृत्त – डॉ. सत्येन्द्रनाथ शर्मा, सौमार प्रिटिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी, गुवाहाटी।
2. नुतन पोहरत असमीया साहित्यर बुरंजी – डिम्बेश्वर नेओग, शुवानी प्रकाश, गुवाहाटी।
3. श्री श्री शंकरदेव – महेश्वर नेओग, लयार्स बुक स्टॉल, गुवाहाटी।
4. शंकरदेव व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व – भूपेन्द्र रॉय चौधरी, श्री मंत शंकरदेव संघ।
5. महापुरूष श्री श्री माधवदेव – भूपेन्द्र रॉय चौधरी (संपा) बरपेटा सत्र।

प्रथम छमाही

PAPER TITLE : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता
PAPER CODE : DSM-101
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता का यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य की महान परंपरा से जोड़ता है। इसमें विद्यापति, कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराँबाई, रसखान, बिहारी, भूषण और घनानन्द जैसे अमर कवियों की रचनाओं का अध्ययन कराया जाएगा। इन कवियों की रचनाओं में निहित भाव, विचार और दर्शन के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय समाज, संस्कृति और अध्यात्म की गहरी समझ प्राप्त करेंगे। साथ ही, यह पाठ्यक्रम मैथिली, सधुक्कड़ी, अवधी, ब्रज और राजस्थानी जैसी विविध हिन्दी भाषिक शैलियों से भी परिचित कराता है। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम साहित्यिक सौंदर्य, भाषिक विविधता और सांस्कृतिक गहराई का समन्वित अध्ययन प्रस्तुत करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रमुख कवियों की रचनाओं से परिचित कराना।
- विभिन्न भाषिक शैलियों (मैथिली, सधुक्कड़ी, अवधी, ब्रज, राजस्थानी) की विशेषताओं को समझाना।
- भक्तिकालीन और रीतिकालीन काव्य में निहित भाव, विचार और दर्शन का विश्लेषण कराना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी विद्यापति, कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराँबाई, रसखान, बिहारी, भूषण और घनानन्द की रचनाओं का गहन अध्ययन कर सकेंगे।
- विभिन्न भाषिक शैलियों और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्तियों को पहचानने और समझने की क्षमता विकसित करेंगे।
- भक्तिकालीन और रीतिकालीन काव्य में निहित भावनात्मक, दार्शनिक और सांस्कृतिक पक्षों का विश्लेषण कर पाएंगे।
- साहित्यिक अध्ययन के माध्यम से भारतीय समाज और संस्कृति की विविधता को समझने और उससे जुड़ने की दृष्टि प्राप्त करेंगे।

पाठ्य पुस्तकें :

1. विद्यापति : सं. आनन्द प्रकाश दीक्षित, साहित्य प्रकाशन मंदिर, ग्वालियर।
2. मध्यकालीन काव्य संग्रह : प्रस्तुतकर्त्ता – केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. जायसी ग्रन्थावली : सं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।
4. मीराँबाई की पदावली : सं. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

इकाई – 1 विद्यापति : पद (क्रम संख्या 1 से 8 तक)
कबीर : पद (क्रम संख्या 1 से 5 तक), साखी (सुमिरन भजन महिमा)
जायसी : नागमती वियोग खंड (क्रम संख्या 1, 4, 5, 6, 7)

इकाई – 2 सूरदास : विनय (क्रम संख्या 1 एवं 2), भ्रमरगीत (क्रम संख्या 1 से 3 तक), पुनर्मिलन (क्रम संख्या 1 एवं 2)
तुलसीदास : विनय-पत्रिका (क्रम संख्या 1 से 5 तक)

इकाई – 3 मीराँबाई : पद (क्रम संख्या 1, 3, 18, 19 और 20)
रसखान : पद (क्रम संख्या 1 से 5 तक)

इकाई – 4 बिहारी : दोहा (क्रम संख्या 1 से 10 तक)
भूषण : पद (क्रम संख्या 1 से 5 तक)
घनानन्द : पद (क्रम संख्या 1 से 4 तक)

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. विद्यापति – सं. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. कबीर – हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कबीर – सं. विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. पदुमावति – सं. कन्हैया सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. तुलसीदास – सं. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सूरदास – सं. हरबंसलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

द्वितीय छमाही

PAPER TITLE : आधुनिक हिन्दी कविता
PAPER CODE : DSM-151
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी कविता के विकासक्रम से अवगत कराता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर धूमिल तक के कवियों की रचनाओं के माध्यम से आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न वादों भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता और समकालीन कविता—का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी कविता के शिल्प, संवेदना और विचारधारा को समझेंगे तथा यह जान पाएंगे कि आधुनिक हिन्दी कविता किस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की प्रतिक्रिया स्वरूप विकसित हुई।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी कविता के विकासक्रम और विभिन्न वादों से परिचित कराना।
- प्रमुख कवियों की रचनाओं के माध्यम से कविता के शिल्प और संवेदना का अध्ययन कराना।
- आधुनिक हिन्दी कविता में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और तुलनात्मक अध्ययन की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न वादों और युगों की विशेषताओं को समझ पाएंगे।
- भारतेन्दु, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, दिनकर, नागार्जुन, अज्ञेय, भवानीप्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती और धूमिल जैसे कवियों की रचनाओं का गहन अध्ययन कर सकेंगे।
- कविता के शिल्प, संवेदना और विचारधारा का विश्लेषण कर पाएंगे।
- आधुनिक हिन्दी कविता को सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में देखने की क्षमता विकसित करेंगे।

पाठ्य पुस्तकें:

1. हिन्दी काव्य सुधा : सं. भूपेन्द्र रायचौधुरी, गुवाहाटी विश्वविद्यालय
2. आधुनिक काव्यधारा : सं. डॉ. विजयपाल सिंह, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

इकाई – 1	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	: निज भाषा उन्नति,
	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	: पवनदूत
	मैथिलीशरण गुप्त	: पंचवटी में लक्ष्मण,
	माखनलाल चतुर्वेदी	: पुष्प की अभिलाषा,
इकाई – 2	जयशंकर प्रसाद	: श्रद्धा
	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	: तोड़ती पत्थर
	सुमित्रानंदन पंत	: पतझर
	महादेवी वर्मा	: बीन भी हूँ
इकाई – 3	दिनकर	: हिमालय,
	केदारनाथ अग्रवाल	: चन्द्रगहना से लौटती बेर
	नागार्जुन	: अकाल और उसके बाद
इकाई – 4	अज्ञेय	: साँप,
	भवानीप्रसाद मिश्र	: गीत फरोश,
	धर्मवीर भारती	: पराजित पीढ़ी का गीत
	धूमिल	: मोचीराम

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – सं. डॉ. नामवर सिंह सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कविता और संवेदना – विजयबहादुर सिंह, रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा, मध्य प्रदेश।
4. प्रसाद, निराला, अज्ञेय – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. प्रसाद, निराला, और पंत –. विजयबहादुर सिंह, स्वराज्य प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. निराला – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. महादेवी – इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. आधुनिक प्रतिनिधि कवि, भाग –1 – डॉ. हरिचरण शर्मा, मल्लिक एंड कम्पनी, जयपुर।
10. आधुनिक हिन्दी के प्रतिनिधि कवि- द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

तृतीय छमाही

PAPER TITLE : हिन्दी कथा साहित्य
PAPER CODE : DSM-201
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "आधुनिक हिन्दी उपन्यास और कहानी" विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधाओं—उपन्यास और कहानी—के उद्भव, स्वरूप और विकास से परिचित कराता है। इसमें प्रेमचन्द, ओमप्रकाश वाल्मीकी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र कुमार, राजेन्द्र यादव और उषा प्रियम्बदा जैसे प्रमुख रचनाकारों की प्रतिनिधि कृतियों का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को बदलते जीवन-मूल्यों, सामाजिक यथार्थ और मानवीय प्रवृत्तियों से साक्षात्कार कराना है, ताकि वे आलोचनात्मक दृष्टि से इन विधाओं की साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्ता को समझ सकें।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी उपन्यास और कहानी के उद्भव, स्वरूप और विकास से परिचित कराना।
- प्रमुख उपन्यासकारों और कथाकारों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ को समझाना।
- उपन्यास और कहानी की कलात्मक विशेषताओं तथा साम्य-वैषम्य का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और साहित्यिक संवेदनशीलता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास और कहानी के इतिहास और विकासक्रम की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- वे प्रेमचन्द, वाल्मीकी, प्रसाद, जैनेन्द्र, यादव आदि की रचनाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- उपन्यास और कहानी की कलात्मक विशेषताओं तथा सामाजिक यथार्थ को पहचानने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर बदलते जीवन-मूल्यों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

पाठ्य पुस्तकें एवं ऑनलाइन लिंक्स:

1. निर्मला – प्रेमचन्द, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली।
3. https://www.hindisamay.com/kahani/usne-kaha-tha.htm

4. https://hindisamay.com/premchand%20samagra/mansarovar7/Bade%20Ghar%20ki%20beti.htm
5. https://hindisamay.com/kahani/akashdeep.htm
6. https://www.hindwi.org/story/patni-jainendra-kumar-story
7. http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%AC%E0%A4%BF%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A5%80_
8. https://www.hindwi.org/story/wapsi-usha-priyamvada-story

इकाई – 1 **कहानी :** अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं तत्त्व, हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास।
उपन्यास : अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं तत्त्व, हिन्दी उपन्यास का उद्भव एवं विकास, उपन्यास एवं कहानी में साम्य-वैषम्य।

इकाई – 2 निर्मला – प्रेमचंद
जूठन – ओमप्रकाश वाल्मीकि

इकाई – 3 उसने कहा था - चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
बड़े घर की बेटी - प्रेमचन्द
अकाशदीप - जयशंकर प्रसाद

इकाई – 4 पत्नी - जैनेन्द्र कुमार
बिरादरी बाहर - राजेन्द्र यादव
वापसी - उषा प्रियम्बदा

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. कहानी की विकास-प्रक्रिया - आनन्द प्रकाश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. एक दुनियाँ समानान्तर - राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास - गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - डॉ.शरणकुमार लिंबाले, वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली।

PAPER TITLE : हिन्दी साहित्य सिद्धांत
PAPER CODE : DSM-202
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख स्तंभों- काव्यशास्त्र और आलोचना-की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों और समकालीन विमर्शों पर केंद्रित है। इसमें रस-अलंकार की परंपरागत व्याख्याओं के साथ-साथ हिन्दी आलोचना के ऐतिहासिक विकास और उत्तर आधुनिक विमर्शों को समाहित किया गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को साहित्यिक पाठों के विश्लेषण, आलोचना लेखन और सिद्धांतों की व्यावहारिक समझ प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को काव्य की मूल अवधारणाओं से परिचित कराना।
- रस और अलंकार सिद्धांतों की शास्त्रीय समझ विकसित करना।
- हिन्दी आलोचना के विकासक्रम और प्रमुख आलोचकों की दृष्टि से अवगत कराना।
- समकालीन विमर्शों (दलित, स्त्री, आदिवासी) की आलोचना दृष्टि को समझाना।
- आलोचना लेखन की क्षमता और पाठ विश्लेषण की दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम के अंत तक विद्यार्थीः

- काव्य के स्वरूप, प्रयोजन और लक्षणों की व्याख्या कर सकेंगे।
- रस और अलंकारों की अवधारणाओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कर सकेंगे।
- हिन्दी आलोचना के ऐतिहासिक विकास और प्रमुख आलोचकों की दृष्टि को समझ सकेंगे।
- समकालीन विमर्शों के आलोचना पक्ष को विश्लेषित कर सकेंगे।
- साहित्यिक पाठों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे और आलोचना लेखन में दक्षता प्राप्त करेंगे।

इकाई – 1 : काव्य की मूल अवधारणाएँ

- काव्य का स्वरूप, काव्य-लक्षण
- काव्य-हेतु एवं काव्य-प्रयोजन

इकाई – 2 : रस और अलंकार सिद्धांत

- रस - रस की अवधारणा, रस-निष्पत्ति और साधारणीकरण
- अलंकार - अलंकार की अवधारणा (परिभाषा एवं स्वरूप)
- प्रमुख अलंकार (अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, यमक, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, श्लेष)

इकाई – 3 : आलोचना का परिचय

- आलोचना – व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, महत्त्व
- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।

इकाई – 4 : आलोचना दृष्टि और समकालीन विमर्श

- हिन्दी के प्रमुख आलोचक- आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रामविलास शर्माः देन एवं आलोचना-दृष्टि
- उत्तर आधुनिकता और विमर्श आधारित आलोचना (दलित, स्त्री, आदिवासी)

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. भारतीय काव्य शास्त्र- डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. काव्यालोचन- ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
3. भारतीय काव्य चिन्तन शोभाकान्त मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. रस सिद्धान्त का पुनर्विवेचन- गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारतीय काव्य शास्त्र का संक्षिप्त विवेचन- डॉ. सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरुप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय काव्य शास्त्र- प्रो. योगेन्द्रप्रताप सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी आलोचना का विकास- नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. चिंतामणि- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।
9. शुक्ल और हिन्दी आलोचना- डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. हिन्दी आलोचना- विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

चतुर्थ छमाही

PAPER TITLE : प्रयोजनमूलक हिन्दी
PAPER CODE : DSM-251
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "प्रयोजनमूलक हिन्दी" विद्यार्थियों को सामान्य हिन्दी और प्रयोजनमूलक हिन्दी के अंतर तथा उसके विविध प्रयोग क्षेत्रों से परिचित कराता है। इसमें कार्यालयीन, व्यावसायिक और संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी की विशेषताओं का अध्ययन कराया जाता है। साथ ही सरकारी पत्राचार-टिप्पण, प्रतिवेदन, सूचना, ज्ञापन के प्रारूपों और पारिभाषिक शब्दावलियों का अभ्यास कराया जाता है। अनुवाद (अंग्रेज़ी से हिन्दी) के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक दक्षता प्रदान की जाती है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य उन्हें प्रयोजन सापेक्ष भाषा के स्वरूप और नियमों की जानकारी देकर रोजगारोन्मुख कौशल से लैस करना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective)

- विद्यार्थियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी के स्वरूप एवं अंतर से परिचित कराना।
- कार्यालयीन, व्यावसायिक और संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी की विशेषताओं को समझाना।
- सरकारी पत्राचार और टिप्पण लेखन के विविध प्रारूपों का अभ्यास कराना।
- पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद के माध्यम से व्यावहारिक दक्षता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिन्दी की स्थिति, स्वरूप और सम्भावनाओं को समझ सकेंगे।
- वे कार्यालयीन, व्यावसायिक और संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- सरकारी पत्राचार और टिप्पण लेखन के विविध प्रारूपों को व्यवहार में ला सकेंगे।
- विद्यार्थी पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद कौशल के माध्यम से रोजगारोन्मुख दक्षता प्राप्त करेंगे।

इकाई – 1 प्रयोजनमूलक हिन्दी: अभिप्राय तथा उद्देश्य
प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी में अन्तर
प्रयोजनमूलक हिन्दी की स्थिति एवं सम्भावनाएँ

इकाई – 2 प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रयोग क्षेत्र
कार्यालयीन हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण

व्यावसायिक हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण
संचार माध्यम, आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र में प्रयुक्त हिन्दी की विशेषताएँ

इकाई – 3 कार्यालयीन पत्राचार के विविध रुप : सामान्य परिचय
सरकारी पत्राचार-टिप्पण, प्रतिवेदन, सूचना, ज्ञापन

इकाई – 4 पारिभाषिक शब्दावलियाँ/अभिव्यक्तियाँ, अनुवाद (अंग्रेजी से हिन्दी में)

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – बालेन्दुशेखर तिवारी, संजय बुक सेंटर, गोलघर, वाराणसी।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कार्यालय सहायिका - हरिबाबू कंसल, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद दिल्ली।
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका - कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद।
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी के आधुनिक आयाम - डॉ. महेन्द्र सिंह राणा।
6. अतिरिक्त स्रोत– http://rajbhasha.gov.in/sites/default/files/saralshabdavali.pdf

PAPER TITLE : हिन्दी साहित्य सिद्धांत
PAPER CODE : DSM-252
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख स्तंभों- काव्यशास्त्र और आलोचना-की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों और समकालीन विमर्शों पर केंद्रित है। इसमें रस-अलंकार की परंपरागत व्याख्याओं के साथ-साथ हिन्दी आलोचना के ऐतिहासिक विकास और उत्तर आधुनिक विमर्शों को समाहित किया गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को साहित्यिक पाठों के विश्लेषण, आलोचना लेखन और सिद्धांतों की व्यावहारिक समझ प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective)

- विद्यार्थियों को काव्य की मूल अवधारणाओं से परिचित कराना।
- रस और अलंकार सिद्धांतों की शास्त्रीय समझ विकसित करना।
- हिन्दी आलोचना के विकासक्रम और प्रमुख आलोचकों की दृष्टि से अवगत कराना।
- समकालीन विमर्शों (दलित, स्त्री, आदिवासी) की आलोचना दृष्टि को समझाना।
- आलोचना लेखन की क्षमता और पाठ विश्लेषण की दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम के अंत तक विद्यार्थीः

- काव्य के स्वरूप, प्रयोजन और लक्षणों की व्याख्या कर सकेंगे।
- रस और अलंकारों की अवधारणाओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कर सकेंगे।
- हिन्दी आलोचना के ऐतिहासिक विकास और प्रमुख आलोचकों की दृष्टि को समझ सकेंगे।
- समकालीन विमर्शों के आलोचना पक्ष को विश्लेषित कर सकेंगे।
- साहित्यिक पाठों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे और आलोचना लेखन में दक्षता प्राप्त करेंगे।

इकाई – 1 : काव्य की मूल अवधारणाएँ

- काव्य का स्वरूप, काव्य-लक्षण
- काव्य-हेतु एवं काव्य-प्रयोजन

इकाई – 2 : रस और अलंकार सिद्धांत

- रस - रस की अवधारणा, रस-निष्पत्ति और साधारणीकरण
- अलंकार - अलंकार की अवधारणा (परिभाषा एवं स्वरूप)
- प्रमुख अलंकार (अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, यमक, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, श्लेष)

इकाई – 3 : आलोचना का परिचय

- आलोचना – व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, महत्त्व
- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।

इकाई – 4 : आलोचना दृष्टि और समकालीन विमर्श

- हिन्दी के प्रमुख आलोचक- आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रामविलास शर्माः देन एवं आलोचना-दृष्टि
- उत्तर आधुनिकता और विमर्श आधारित आलोचना (दलित, स्त्री, आदिवासी)

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. भारतीय काव्य शास्त्र- डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. काव्यालोचन- ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
3. भारतीय काव्य चिन्तन शोभाकान्त मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना।
4. रस सिद्धान्त का पुनर्विवेचन- गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारतीय काव्य शास्त्र का संक्षिप्त विवेचन- डॉ. सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरुप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. भारतीय काव्य शास्त्र- प्रो. योगेन्द्रप्रताप सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी आलोचना का विकास- नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. चिंतामणि- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।
9. शुक्ल और हिन्दी आलोचना- डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. हिन्दी आलोचना- विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

<u>पंचम छमाही</u>

PAPER TITLE : हिन्दी साहित्य का इतिहास
PAPER CODE : DSM-301
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "हिन्दी साहित्य का इतिहास" विद्यार्थियों को साहित्येतिहास लेखन की परम्परा और काल-विभाजन की प्रक्रिया से परिचित कराता है। इसमें आदिकाल से आधुनिककाल तक की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कराया जाता है। आदिकालीन धार्मिक, रासो और लौकिक साहित्य से लेकर भक्तिकाल की निर्गुण-सगुण परम्पराएँ, रीतिकाल की विविध काव्यधाराएँ और आधुनिककालीन कविता व गद्य विधाओं का विकास इसमें सम्मिलित है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना और उन्हें युगबोध के आलोक में साहित्यिक प्रवृत्तियों को समझने योग्य बनाना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा और काल-विभाजन की प्रक्रिया से अवगत कराना।
- आदिकाल से आधुनिककाल तक की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कराना।
- विभिन्न कालों के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक-विश्लेषणात्मक दृष्टि और युगबोध की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों और उनकी प्रमुख प्रवृत्तियों की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- वे साहित्येतिहास लेखन की परम्परा और काल-विभाजन की प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आदिकाल से आधुनिककाल तक के साहित्य को सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में समझ पाएंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि और युगबोध के आलोक में साहित्यिक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई – 1 **आदिकाल -** हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन की परंपरा का परिचय। हिन्दी साहित्य : काल-विभाजन एवं नामकरण, आदिकाल की परिस्थितियाँ, आदिकालीन साहित्य : धार्मिक साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य । आदिकालीन साहित्य की प्रमुख काव्य प्रवृत्तियाँ।

इकाई – 2 **भक्तिकाल -** भक्ति आंदोलन के उदय के कारण एवं नामकरण। भक्तिकालीन काव्य धाराएँ: निर्गुण और सगुण काव्यधाराओं का सामान्य परिचय, भक्तिकालीन साहित्य की प्रमुख काव्य प्रवृत्तियाँ।

इकाई – 3 **रीतिकाल**: नामकरण विषयक विभिन्न मतों की समीक्षा, रीतिकालीन प्रमुख काव्यधाराओं का सामान्य परिचय (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त काव्यधारा, वीरकाव्य और नीतिकाव्य), रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

इकाई – 4 **आधुनिककाल**: नामकरण एवं सीमांकन, आधुनिककालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ: (भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता), गद्य विधाओं का उद्भव एवं विकास : उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध ।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

PAPER TITLE : हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार
PAPER CODE : DSM-302
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार के बुनियादी सिद्धांतों से परिचित कराना है। इस कोर्स के माध्यम से छात्र न केवल हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास और उसकी विकास यात्रा को समझेंगे, बल्कि व्यावहारिक रूप से समाचार लिखना, संपादन और फीचर लेखन जैसी कला भी सीखेंगे। इसके साथ ही, यह पाठ्यक्रम छात्रों को मीडिया से जुड़े कानूनी अधिकारों, नैतिक मूल्यों और आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर पर हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग के योग्य बनाएगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- छात्रों को हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास, अर्थ और समाज में उसके महत्व से सरल भाषा में परिचित कराना।
- छात्रों में हिन्दी में समाचार, फीचर, और संपादकीय लिखने की व्यावहारिक क्षमता पैदा करना।
- छात्रों को अखबारों में समाचार चयन, भाषा सुधार और संपादन की बुनियादी तकनीकों से अवगत कराना।
- छात्रों को अभिव्यक्ति की आजादी (Article 19), सूचना के अधिकार (RTI) और पत्रकारिता की आचार-संहिता के प्रति जागरूक करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे:

- छात्र हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास, उसके विविध प्रकारों और स्वाधीनता आंदोलन में इसके योगदान को आसानी से समझकर समझा सकेंगे।
- छात्र विभिन्न स्रोतों से समाचार इकट्ठा करने की कला सीख जाएंगे और स्वयं सरल हिन्दी में समाचार, इंट्रो, हेडिंग और फीचर लिख सकेंगे।
- छात्र न्यूज़ रूम में एक उप-संपादक की भूमिका को समझकर, खबरों की भाषा-शैली को सुधारने और सामग्री का विभाजन करने में सक्षम होंगे।
- छात्र मीडिया से जुड़े कानूनों (जैसे- RTI) और एक जिम्मेदार पत्रकार के कर्तव्यों एवं नैतिक मूल्यों का पालन कर सकेंगे।

इकाई 1: पत्रकारिताः सैद्धांतिक अवधारणा एवं इतिहास

- पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य और समाज पर इसका प्रभाव।
- पत्रकारिता के विविध प्रकार।
- हिन्दी पत्रकारिता का ऐतिहासिक विकास।

इकाई 2: समाचार लेखन, संपादन एवं व्यावहारिक पद्धतियाँ

- समाचार की अवधारणा और समाचार के प्रमुख स्रोत, संवाददाता की योग्यताएँ।
- शीर्षक-निर्माण कला, इंट्रो और समाचार का मुख्य ढांचा।
- समाचार पत्र में संपादक और उप-संपादक की भूमिका

इकाई 3: साहित्यिक पत्रकारिताः परंपरा एवं प्रमुख स्तंभ

- साहित्यिक पत्रकारिता का परिचय, प्रवृत्तियाँ और महत्त्व।
- पत्रकार भारतेंदु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी का परिचय।
- मुख्य पत्रिकाएं और अखबार: उदन्त मार्तण्ड, सरस्वती, जनसत्ता और दैनिक पूर्वोदय का सामान्य परिचय।

इकाई 4: कानून, नियम और कंप्यूटर का प्रयोग

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Article 19(1)(a)), सूचना का अधिकार (RTI) और प्रेस काउंसिल के नियम।
- पत्रकार के कर्तव्य, पीत पत्रकारिता की चुनौतियां और समाज के प्रति जिम्मेदारी।
- डिजिटल पत्रकारिता, सोशल मीडिया, कंप्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग (Unicode) और MS Office का सामान्य ज्ञान।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. सिर्फ पत्रकारिता - अजय कुमार सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. हिन्दी पत्रकारिता - कृष्ण बिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
3. पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियाँ- पृथ्वीनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
4. पत्रकारिता के नए आयाम - एस.के. दुबे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
5. हिन्दी पत्रकारिता: संवाद और विमर्श- कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

6. हिन्दी पत्रकारिता का प्रतिनिधि संकलन - तरुशिखा सुरजन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. पत्रकारिता और पत्रकारिता- अरुण जैन, हिन्दी बुक सेंटर, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली।
8. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम - वेद प्रताप वैदिक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
9. साहित्यिक पत्रकारिता - राममोहन पाठक, ज्ञानमंदन, वाराणसी।
10. समकालीन पत्रकारिता: मूल्यांकन और मुद्दे -- राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
11. वृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश - सूर्यप्रसाद दीक्षित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
12. सम्पादन कला -- पी. के. नारायण, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
13. जनसंचार के सामाजिक संदर्भ - जबरीमल पारख, हिन्दी बुक सेंटर, नयी दिल्ली।
14. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

षष्ठ छमाही

PAPER TITLE : हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि
PAPER CODE : DSM-351
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप और ऐतिहासिक विकास की जानकारी प्रदान करता है। इसमें हिन्दी के भौगोलिक विस्तार, उपभाषाओं और बोलियों का अध्ययन कराया जाता है, जिससे भाषा की विविधता और सांस्कृतिक आधार स्पष्ट होता है। साथ ही, हिन्दी भाषा के प्रयोग के विविध रूपों (बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और कम्प्यूटर में हिन्दी) का विवेचन विद्यार्थियों को आधुनिक संदर्भों में भाषा की उपयोगिता से जोड़ता है। देवनागरी लिपि के नामकरण, विकास, गुण-दोष और सुधार के प्रयासों का अध्ययन विद्यार्थियों को भारतीय भाषिक परम्परा और लिपि-विज्ञान की वैज्ञानिकता से परिचित कराता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के उद्भव, स्वरूप और ऐतिहासिक विकास-क्रम की जानकारी देना।
- हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों के स्वरूप तथा विशेषताओं का अध्ययन कराना।
- हिन्दी भाषा के प्रयोग के विविध रूपों (बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और कम्प्यूटर में हिन्दी) की समझ विकसित करना।
- देवनागरी लिपि के नामकरण, विकास, गुण-दोष और सुधार के प्रयासों से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी भाषा के उद्भव, स्वरूप और ऐतिहासिक विकास को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों का वर्गीकरण कर उनकी विशेषताओं का विवेचन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी भाषा के विविध प्रयोगों को पहचानकर आधुनिक संदर्भों में उनका उपयोग कर सकेंगे।
- विद्यार्थी देवनागरी लिपि के गुण-दोष और सुधार के प्रयासों को समझकर भाषा-अध्ययन को अधिक व्यवस्थित बना सकेंगे।

इकाई - 1 हिन्दी – अर्थ, हिन्दी का भौगोलिक विस्तार,
हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल।

इकाई - 2 हिन्दी की उपभाषाएं, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

इकाई – 3 हिन्दी भाषा : प्रयोग के विविध रूप - बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, कम्प्यूटर और हिन्दी।

इकाई - 4 देवनागरी लिपि : नामकरण और विकास, देवनागरी लिपि के गुण-दोष, देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयास।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी, किताबमहल, इलाहाबाद।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास- डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।
3. हिन्दी भाषा का विकास- आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा और रामदेव त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि- लक्ष्मीकान्त वर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।
5. हिन्दी भाषा संरचना और प्रयोग-डॉ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
6. हिन्दी भाषा: इतिहास और स्वरूप राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
7. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास- डॉ. उदयनारायण तिवारी, भारती भण्डार, इलाहाबाद।
8. हिन्दी व्याकरण - पं० कामताप्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणीss सभा, वाराणसी।
9. हिन्दी व्याकरण-विमर्श - तेजपाल चौधरी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
10. आधुनिक हिन्दी व्याकरण एवं रचना- डॉ.वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना।
11. देवनागरी लिपि और हिन्दी संघर्षों की ऐतिहासिक यात्रा - रामनिरंजन परिमलेन्दु, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
12. हिन्दी भाषा इतिहास और स्वरूप- डॉ. राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

PAPER TITLE : हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार
PAPER CODE : DSM-352
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार के बुनियादी सिद्धांतों से परिचित कराना है। इस कोर्स के माध्यम से छात्र न केवल हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास और उसकी विकास यात्रा को समझेंगे, बल्कि व्यावहारिक रूप से समाचार लिखना, संपादन और फीचर लेखन जैसी कला भी सीखेंगे। इसके साथ ही, यह पाठ्यक्रम छात्रों को मीडिया से जुड़े कानूनी अधिकारों, नैतिक मूल्यों और आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर पर हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग के योग्य बनाएगा।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- छात्रों को हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास, अर्थ और समाज में उसके महत्व से सरल भाषा में परिचित कराना।
- छात्रों में हिन्दी में समाचार, फीचर, और संपादकीय लिखने की व्यावहारिक क्षमता पैदा करना।
- छात्रों को अखबारों में समाचार चयन, भाषा सुधार और संपादन की बुनियादी तकनीकों से अवगत कराना।
- छात्रों को अभिव्यक्ति की आजादी (Article 19), सूचना के अधिकार (RTI) और पत्रकारिता की आचार-संहिता के प्रति जागरूक करना।

पाठ्यक्रम के परिणाम (Course Outcomes)

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे:

- छात्र हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास, उसके विविध प्रकारों और स्वाधीनता आंदोलन में इसके योगदान को आसानी से समझकर समझा सकेंगे।
- छात्र विभिन्न स्रोतों से समाचार इकट्ठा करने की कला सीख जाएंगे और स्वयं सरल हिन्दी में समाचार, इंट्रो, हेडिंग और फीचर लिख सकेंगे।
- छात्र न्यूज़ रूम में एक उप-संपादक की भूमिका को समझकर, खबरों की भाषा-शैली को सुधारने और सामग्री का विभाजन करने में सक्षम होंगे।
- छात्र मीडिया से जुड़े कानूनों (जैसे- RTI) और एक जिम्मेदार पत्रकार के कर्तव्यों एवं नैतिक मूल्यों का पालन कर सकेंगे।

इकाई 1: पत्रकारिताः सैद्धांतिक अवधारणा एवं इतिहास

- पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य और समाज पर इसका प्रभाव।
- पत्रकारिता के विविध प्रकार।
- हिन्दी पत्रकारिता का ऐतिहासिक विकास।

इकाई 2: समाचार लेखन, संपादन एवं व्यावहारिक पद्धतियाँ

- समाचार की अवधारणा और समाचार के प्रमुख स्रोत, संवाददाता की योग्यताएँ।
- शीर्षक-निर्माण कला, इंट्रो और समाचार का मुख्य ढांचा।
- समाचार पत्र में संपादक और उप-संपादक की भूमिका

इकाई 3: साहित्यिक पत्रकारिताः परंपरा एवं प्रमुख स्तंभ

- साहित्यिक पत्रकारिता का परिचय, प्रवृत्तियाँ और महत्त्व।
- पत्रकार भारतेंदु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी का परिचय।
- मुख्य पत्रिकाएं और अखबार: उदन्त मार्तण्ड, सरस्वती, जनसत्ता और दैनिक पूर्वोदय का सामान्य परिचय।

इकाई 4: कानून, नियम और कंप्यूटर का प्रयोग

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Article 19(1)(a)), सूचना का अधिकार (RTI) और प्रेस काउंसिल के नियम।
- पत्रकार के कर्तव्य, पीत पत्रकारिता की चुनौतियां और समाज के प्रति जिम्मेदारी।
- डिजिटल पत्रकारिता, सोशल मीडिया, कंप्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग (Unicode) और MS Office का सामान्य ज्ञान।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. सिर्फ पत्रकारिता - अजय कुमार सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. हिन्दी पत्रकारिता - कृष्ण बिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियाँ- पृथ्वीनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. पत्रकारिता के नए आयाम - एस.के. दुबे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. हिन्दी पत्रकारिता: संवाद और विमर्श- कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

6. हिन्दी पत्रकारिता का प्रतिनिधि संकलन - तरुशिखा सुरजन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. पत्रकारिता और पत्रकारिता- अरुण जैन, हिन्दी बुक सेंटर, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली।
8. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम - वेद प्रताप वैदिक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
9. साहित्यिक पत्रकारिता - राममोहन पाठक, ज्ञानमंदन, वाराणसी।
10. समकालीन पत्रकारिता: मूल्यांकन और मुद्दे -- राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
11. वृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश - सूर्यप्रसाद दीक्षित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
12. सम्पादन कला -- पी. के. नारायण, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
13. जनसंचार के सामाजिक संदर्भ - जबरीमल पारख, हिन्दी बुक सेंटर, नयी दिल्ली।
14. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

प्रथम छमाही

PAPER TITLE : हिन्दी साहित्य का इतिहास
PAPER CODE : IDC-101
PAPER CREDIT : 3 (व्याख्यान-3)
TOTAL MARKS : 75 (TH: 45 + IA: 30)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास की परंपरा और विकासक्रम से अवगत कराता है। इसमें आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की साहित्यिक प्रवृत्तियों, प्रमुख कवियों और गद्य विधाओं का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी साहित्येतिहास-लेखन की परंपरा, काल-विभाजन एवं नामकरण की प्रक्रिया को समझेंगे। साथ ही, वे यह भी जान पाएंगे कि किस प्रकार साहित्य समाज, धर्म, राजनीति और संस्कृति से जुड़कर विकसित हुआ। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल ऐतिहासिक जानकारी देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि, तुलनात्मक अध्ययन की क्षमता और साहित्यिक परंपरा की गहरी समझ विकसित करना भी है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन की परंपरा और काल-विभाजन की पद्धति से अवगत कराना।
- आदिकाल, मध्यकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण कराना।
- प्रमुख कवियों, काव्यधाराओं और गद्य विधाओं के उद्भव एवं विकास का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करना ताकि वे साहित्य को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में समझ सकें।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा और काल-विभाजन को स्पष्ट रूप से समझ पाएंगे।
- आदिकाल से आधुनिक काल तक की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों और कवियों का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विभिन्न काव्यधाराओं और गद्य विधाओं की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- साहित्यिक इतिहास को सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय आंदोलनों से जोड़कर देखने की क्षमता विकसित करेंगे।

इकाई - 1 **कालविभाजन एवं नामकरण:** काल-विभाजन एवं नामकरण, साहित्येतिहास लेखन की परम्परा।

आदिकाल: आदिकालीन काव्य धाराएँ - सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, आदिकाल की परिस्थितियाँ एवं काव्य प्रवृत्तियाँ।

इकाई - 2 **मध्यकाल: भक्तिकाल की** सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भक्तिकाल के प्रमुख कवि- निर्गुण (कबीर एवं जायसी), सगुण (सूरदास एवं तुलसीदास), भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ।

रीतिकाल: रीतिकाल की पृष्ठभूमि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराएँ।

इकाई - 3 **आधुनिक काल:** नामकरण एवं परिस्थितियाँ, भारतेन्दु एवं उनका युग, भारतेन्दु युगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ। महावीरप्रसाद द्विवेदी एवं उनका युग, द्विवेदी युगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता एवं साठोत्तरी कविता के प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय।

इकाई - 4 **हिन्दी गद्य विधाओं का उद्भव एवं विकास:** कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र एवं हरदयाल, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचन्द गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

द्वितीय छमाही

PAPER TITLE : हिन्दी काव्यधारा
PAPER CODE : IDC-151
PAPER CREDIT : 3 (व्याख्यान-3)
TOTAL MARKS : 75 (TH: 45 + IA: 30)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी काव्य की प्रमुख धाराओं और कवियों से अवगत कराता है। कबीर, सूर, तुलसी से लेकर भारतेन्दु, गुप्त, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, अज्ञेय, धर्मवीर भारती और धूमिल तक की कविताओं के माध्यम से हिन्दी काव्य के शिल्प, संवेदना और विचारधारा का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी यह समझ पाएंगे कि तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप कविता में किस प्रकार बदलाव आया और काव्यधारा ने समय के साथ अपनी नई पहचान बनाई।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी काव्यधारा के विकासक्रम और प्रमुख कवियों से परिचित कराना।
- विभिन्न युगों और परिस्थितियों के अनुरूप कविता के शिल्प और संवेदना का अध्ययन कराना।
- भक्तिकाल से आधुनिक काल तक की काव्य प्रवृत्तियों और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और तुलनात्मक अध्ययन की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी कबीर, सूर, तुलसी, भारतेन्दु, गुप्त, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, अज्ञेय, धर्मवीर भारती और धूमिल जैसे कवियों की रचनाओं का गहन अध्ययन कर सकेंगे।
- कविता के शिल्प और संवेदना में आए बदलावों को ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में समझ पाएंगे।
- विभिन्न काव्यधाराओं की विशेषताओं का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- हिन्दी काव्यधारा को समाज, संस्कृति और राजनीति से जोड़कर देखने की क्षमता विकसित करेंगे।

पाठ्य पुस्तक :

1. हिन्दी काव्य सुधा, प्रो. भूपेन्द्र रायचौधुरी, गुवाहाटी विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

इकाई - 1	कबीर	: साखी (क्रम संख्या 1, 2, 5, 6, 9)
	सूरदास	: (वृन्दावन लीला पद क्रम 6 एवं 7)
	तुलसीदास	: केवट प्रसंग
इकाई - 2	भारतेन्दु	: निज भाषा उन्नति, आत्म प्रबोधन,
	गुप्त	: पंचवटी में लक्ष्मण,
	माखनलाल चतुर्वेदी	: पुष्प की अभिलाषा
इकाई - 3	निराला	: संध्या सुन्दरी
	पंत	: पतझर
	महादेवी वर्मा	: जाग तुझको दूर जाना
इकाई - 4	अज्ञेय	: साँप
	धर्मवीर भारती	: टूटा पहिया,
	धूमिल	: रोटी और संसद

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. कबीर – सं. विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. तुलसीदास – सं. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सूरदास – सं. हरवंशलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

<u>तृतीय छमाही</u>

PAPER TITLE : हिन्दी गद्य साहित्य
PAPER CODE : IDC-201
PAPER CREDIT : 3 (व्याख्यान-3)
TOTAL MARKS : 75 (TH: 45 + IA: 30)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "हिन्दी गद्य साहित्य" विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं उपन्यास, कहानी और निबन्ध के उद्भव, स्वरूप और विकास से परिचित कराता है। इसमें भीष्म साहनी का तमस, प्रेमचन्द, यशपाल और उषा प्रियम्बदा की कहानियाँ तथा रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी और महादेवी वर्मा के निबन्धों का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में गद्य विधाओं के प्रति रुचि उत्पन्न करना, उनकी कलात्मकता और सामाजिक चेतना को समझाना तथा बदलते जीवन-मूल्यों के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं—उपन्यास, कहानी और निबन्ध—के स्वरूप और विकास से परिचित कराना।
- प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से सामाजिक यथार्थ और राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन कराना।
- गद्य साहित्य की कलात्मकता और अभिव्यक्ति के विविध आयामों को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि और बदलते जीवन-मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं और उनके विकासक्रम की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- वे तमस, कफन, परदा, वापसी जैसी कहानियों और निबन्धों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- गद्य साहित्य की कलात्मकता और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को पहचानने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर बदलते जीवन-मूल्यों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

पाठ्य पुस्तकें:

1. तमस: भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. कहानी विविधा - संपा. डॉ. देवीशंकर अवस्थी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. हिन्दी निबन्ध - संपा. डॉ. शिवप्रसाद सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।

इकाई – 1 उद्भव एवं विकास, हिन्दी गद्य के विभिन्न विधाओं का संक्षिप्त परिचय
तमस: भीष्म साहनी

इकाई – 2 कफन (प्रेमचन्द),
परदा (यशपाल)
वापसी (उषा प्रियम्बदा)

इकाई – 3 ईर्ष्या (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)
कुटज (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी)
प्रेमचन्द (महादेवी वर्मा)

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वराणसी।
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास - गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. प्रेमचन्द और उनका युग - डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार - डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. तमस उपन्यास में देशविभाजन की त्रासदी - प्रो. दिलीप फोलाने, विद्या प्रकाशन, कानपुर।

प्रथम छमाही

PAPER TITLE : अनुवाद विज्ञान
PAPER CODE : SEC-101
PAPER CREDIT : 3 (व्याख्यान-3)
TOTAL MARKS : 75 (TH: 50 + PR: 25)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनुवाद की परिभाषा, प्रकार और आवश्यकता से परिचित कराता है। इसमें अनुवाद प्रक्रिया के चरणों (विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन) का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी साहित्यिक और तकनीकी अनुवाद के बीच के अंतर को समझेंगे तथा कार्यालयी दस्तावेजों के अनुवाद का व्यावहारिक अभ्यास करेंगे। साथ ही, हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद की व्यावहारिक दक्षता विकसित की जाएगी। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को प्रशासनिक, तकनीकी और सर्जनात्मक क्षेत्रों में अनुवाद कौशल से सुसज्जित करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को अनुवाद की परिभाषा, प्रकार और महत्त्व से अवगत कराना।
- अनुवाद प्रक्रिया के चरणों और अनुवादक की भूमिका को स्पष्ट करना।
- साहित्यिक और तकनीकी अनुवाद के अंतर को समझाना।
- कार्यालयी दस्तावेजों एवं व्यावहारिक अनुवाद (हिन्दी-अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिन्दी) में दक्षता विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी अनुवाद की मूलभूत अवधारणाओं और प्रकारों को समझ पाएंगे।
- अनुवाद प्रक्रिया के चरणों और अनुवादक की भूमिका का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- साहित्यिक और तकनीकी अनुवाद के अंतर को पहचान सकेंगे।
- कार्यालयी दस्तावेजों और व्यावहारिक अनुवाद में दक्षता प्राप्त कर व्यावसायिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में उसका प्रयोग कर सकेंगे।

इकाई -1 अनुवाद का अर्थ, परिभाषा, प्रकार, अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्त्व।

इकाई -2 अनुवाद प्रक्रिया के चरण- विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन। अनुवादक की भूमिका- पाठक के रुप में (अर्थ ग्रहण की), द्विभाषिक के रूप में (अर्थांतरण की) एवं रचयिता के रूप में (अर्थ सम्प्रेषण की)। साहित्यिक अनुवाद एवं तकनीकी अनुवाद में अन्तर।

इकाई -3 कार्यालयी अनुवाद-राजभाषा नीति के अनुपालन में धारा 3(3) के अन्तर्गत निर्धारित दस्तावेजों का अनुवाद- (शासकीय पत्र/ अर्द्धशासकीय पत्र/ परिपत्र/ ज्ञापन/ कार्यालयी आदेश/ अधिसूचना/ संकल्प प्रस्ताव/ निविदा-संविदा/ विज्ञापन)

व्यावहारिक अनुवाद - हिन्दी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. अनुवाद विज्ञान- डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. अनुवाद सुधा(भाग-1) डॉ. अच्युत शर्मा (संपा),शब्द भारती, गुवाहाटी।
3. अनुवाद सुधा(भाग-2) डॉ. अच्युत शर्मा (संपा),शब्द भारती, गुवाहाटी।
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण- पो. विराज, राजपाल एंड सन्स,नई दिल्ली।
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ.बालेन्दु शेखर तिवारी, अनुपम प्रकाशन, पटना।

द्वितीय छमाही

PAPER TITLE : सम्पादन प्रक्रिया
PAPER CODE : SEC-151
PAPER CREDIT : 3 (व्याख्यान-3)
TOTAL MARKS : 75 (TH: 45 + IA: 30)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को सम्पादन की अवधारणा, उद्देश्य और सिद्धान्तों से अवगत कराता है। इसमें सम्पादक और उपसम्पादक की भूमिका, सम्पादकीय लेखन की प्रविधि, समाचार मूल्यांकन, शीर्षक लेखन और प्रिंट मीडिया की प्रयोजनपरक शब्दावली का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी समाचार पत्र और पत्रिकाओं के विविध स्तम्भों की योजना और सम्पादन प्रक्रिया को समझेंगे। साथ ही, हिन्दी के राष्ट्रीय और प्रांतीय समाचार पत्रों की भाषा, आंचलिक प्रभाव और वर्तनी की समस्याओं पर भी विचार करेंगे। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सम्पादन कौशल, भाषा की शुद्धता और प्रस्तुतीकरण की दक्षता विकसित करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को सम्पादन की अवधारणा, उद्देश्य और सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- सम्पादक और उपसम्पादक की भूमिका, योग्यता और दायित्व को स्पष्ट करना।
- सम्पादकीय लेखन की प्रविधि, समाचार मूल्यांकन और शीर्षक लेखन की कला का अध्ययन कराना।
- समाचार पत्र और पत्रिकाओं के विविध स्तम्भों की योजना और सम्पादन प्रक्रिया की समझ प्रदान करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी सम्पादन की मूलभूत अवधारणाओं और सिद्धान्तों को समझ पाएंगे।
- सम्पादक और उपसम्पादक की भूमिका और दायित्व का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- सम्पादकीय लेखन, समाचार मूल्यांकन और शीर्षक लेखन में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- समाचार पत्र और पत्रिकाओं के स्तम्भों की सम्पादन प्रक्रिया को समझकर व्यावहारिक जीवन में उसका प्रयोग कर सकेंगे।

इकाई - 1 सम्पादन : अवधारणा, उद्देश्य, आधारभूत तत्त्व ।
सम्पादन कला के सामान्य सिद्धान्त।
सम्पादक और उपसम्पादक : योग्यता, दायित्व और महत्त्व।

इकाई - 2 सम्पादकीय लेखन : प्रमुख तत्त्व एवं प्रविधि, सम्पादकीय का सामाजिक प्रभाव।
समाचार मूल्य, लीड, आमुख, शीर्षक लेखन आदि प्रत्येक दृष्टि से चयनित सामग्री का मूल्यांकन और सम्पादन, प्रिंट मीडिया की प्रयोजनपरक शब्दावली।

इकाई - 3 समाचार पत्र और पत्रिका के विविध स्तम्भों की योजना और उनका सम्पादन।
हिन्दी के राष्ट्रीय और प्रांतीय समाचार पत्रों की भाषा, आंचलिक प्रभाव और वर्त्तनी की समस्याएँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. जनसंचार सिद्धान्त और अनुप्रयोग – विष्णु राजगढ़िया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. संचार के मूल सिद्धान्त – ओमप्रकाश सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. समाचार संपादन – कमल दीक्षित एवं महेश दर्पण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. समाचार संकलन और सम्पादन कला – डॉ. जितेन्द्र वत्स और डॉ. किरणवाला, सौरभ प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. पत्रकारिता और जनसंचार : सिद्धान्त एवं विकास – अनिल कुमार उपाध्याय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. संचार साक्षात्कार भाषण कला रचनात्मक लेखन एवं पत्र लेखन – अमित कुमार सिंह, हरीश प्रकाशन, आगरा।
8. सम्पादन कला : द आर्ट ऑफ एडिटिंग – राजशेखर मिश्र, डायमण्ड बुक्स, नई दिल्ली।
9. समाचार-पत्र लेखन और सम्पादन – डॉ. रमेश मेहरा, जैन बुक एजेन्सी, नई दिल्ली।
10. समाचार, फीचर-लेखन एवं सम्पादन कला – डॉ. हरिमोहन, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली।

तृतीय छमाही

PAPER TITLE : साहित्य और सिनेमा
PAPER CODE : SEC-201
PAPER CREDIT : 3 (व्याख्यान-3)
TOTAL MARKS : 75 (TH: 45 + IA: 30)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम "साहित्य और सिनेमा" विद्यार्थियों को साहित्य और सिनेमा के अंतःसम्बंध से परिचित कराता है। इसमें साहित्य की परिभाषा, तत्त्व और विधाओं के साथ-साथ सिनेमा के स्वरूप, प्रकार और इतिहास का अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम में साहित्य और सिनेमा के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव, लोकतांत्रिक चेतना तथा फिल्म समीक्षा का अभ्यास शामिल है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सिनेमा संबंधी लेखन कौशल विकसित करना और उन्हें बदलते जीवन-मूल्यों व सामाजिक यथार्थ से जोड़ना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को साहित्य और सिनेमा के मूलभूत तत्त्वों और उनके अंतःसम्बंध से परिचित कराना।
- फीचर फिल्म, डॉक्यूमेंट्री, टेलीफिल्म, एनीमेशन और कार्टून फिल्मों की निर्माण प्रक्रिया और महत्त्व समझाना।
- हिन्दी साहित्य और सिनेमा के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव तथा लोकतांत्रिक चेतना का अध्ययन कराना।
- विद्यार्थियों में फिल्म समीक्षा और सिनेमा संबंधी लेखन कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी साहित्य और सिनेमा के अंतःसम्बंध और उनके सामाजिक महत्त्व को समझ सकेंगे।
- वे विभिन्न प्रकार की फिल्मों और हिन्दी सिनेमा के इतिहास का विश्लेषण कर पाएंगे।
- साहित्य और सिनेमा के माध्यम से लोकतांत्रिक एवं सामाजिक चेतना को पहचान सकेंगे।
- विद्यार्थी फिल्म समीक्षा और सिनेमा संबंधी लेखन में दक्षता प्राप्त करेंगे।

इकाई - 1 साहित्य : साहित्य की परिभाषा एवं महत्त्व, साहित्य के तत्त्व - भाव, कल्पना, बुद्धि और शैली, साहित्य की विधाएँ - कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना का सामान्य परिचय।

इकाई - 2 सिनेमा : सिनेमा की परिभाषा महत्त्व, फिल्मों के प्रकार - फीचर फिल्म, डॉक्यूमेंट्री फिल्म, टेलीफिल्म, एनीमेशन फिल्म, कार्टून फिल्म। हिन्दी सिनेमा का इतिहास।

इकाई - 3 साहित्य सिनेमा और समाज : साहित्य और सिनेमा का अंतःसम्बन्ध, हिन्दी साहित्य और सिनेमा, भारतीय लोकतंत्र और हिन्दी सिनेमा, भारतीय समाज और हिन्दी सिनेमा।

इकाई - 4 फिल्म समीक्षा : मदर इंडिया, तारे जमीन पर, आरक्षण।
असमीया सिनेमा का परिचयात्मक इतिहास।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. साहित्य शास्त्र - विवेक शंकर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. भारतीय काव्यशास्त्र - रामानन्द शर्मा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. भारतीय काव्य शास्त्र का संक्षिप्त विवेचन - डॉ. सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरुप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष **-** प्रहलाद अग्रवाल, प्रकाशन, दिल्ली।
5. भारतीय सिने सिद्धान्त - अनुपम ओझा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. सिनेमा के बारे में - जावेद अख्तर, कबीर नसरीन मुन्नी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. फिल्म निर्देशन - कुलदीप सिन्हा, राधकृष्ण प्रकाशन।
8. साहित्य समाज और हिन्दी सिनेमा – सुनील बापू बनसोडे, शुभम पब्लिकेशन, कानपुर।
9. प्रतिरोध और सिनेमा - महेन्द्र प्रजापति, नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली।

<u>प्रथम छमाही</u>

PAPER TITLE : हिन्दी व्याकरण एवं संप्रेषण
PAPER CODE : AEC-101
PAPER CREDIT : 2 (व्याख्यान-2)
TOTAL MARKS : 50 (TH: 30 + IA: 20)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की व्याकरणिक संरचना और संप्रेषण की प्रक्रिया से अवगत कराता है। इसमें वर्ण व्यवस्था, शब्द व्यवस्था और वाक्य रचना का अध्ययन कराया जाएगा। साथ ही, संप्रेषण के विभिन्न प्रकारों (वाचिक, अवाचिक, मौखिक, लिखित, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष) की समझ विकसित की जाएगी। विद्यार्थी पत्र लेखन, सार लेखन, पल्लवन, मुहावरे और लोकोक्तियों जैसे व्यावहारिक कौशल भी सीखेंगे। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम भाषा की शुद्धता, अभिव्यक्ति की क्षमता और संप्रेषण कौशल को सुदृढ़ करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को हिन्दी संप्रेषण की अवधारणा, महत्त्व और प्रक्रिया से परिचित कराना।
- वर्ण व्यवस्था, शब्द व्यवस्था और वाक्य रचना की मूलभूत संरचना को समझाना।
- संप्रेषण के विभिन्न प्रकारों और उनके प्रयोग की जानकारी देना।
- विद्यार्थियों में व्यावहारिक लेखन कौशल (पत्र लेखन, सार लेखन, पल्लवन, मुहावरे-लोकोक्तियाँ) विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी हिन्दी संप्रेषण की प्रक्रिया और प्रकारों को स्पष्ट रूप से समझ पाएंगे।
- वर्ण, शब्द और वाक्य व्यवस्था की व्याकरणिक संरचना का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- संप्रेषण के विभिन्न रूपों का प्रयोग व्यवहारिक जीवन में कर सकेंगे।
- पत्र लेखन, सार लेखन और मुहावरों-लोकोक्तियों के प्रयोग से अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी बना पाएंगे।

इकाई – 1 **संप्रेषण और उसका स्वरूप :** संप्रेषण की अवधारणा, महत्त्व और प्रक्रिया। संप्रेषण के प्रकार - वाचिक संप्रेषण एवं अवाचिक संप्रेषण, प्रत्यक्ष संप्रेषण एवं अप्रत्यक्ष संप्रेषण, मौखिक संप्रेषण एवं लिखित संप्रेषण।

इकाई – 2 **वर्ण व्यवस्था**: स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण, स्वर एवं व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण स्थान।

इकाई – 3 **शब्द व्यवस्था**: हिन्दी में शब्द रचना (उपसर्ग, प्रत्यय, समास)। विलोम और पर्यायवाची शब्द। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, का सामान्य परिचय।

इकाई – 4 **वाक्य रचना** : परिभाषा, वाक्य के भेद, वाक्य रूपान्तरण।
रचना कौशल: पत्र लेखन, सार लेखन अथवा पल्लवन, मुहावरे एवं लोकोक्तियों का सामान्य परिचय

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. व्यावहारिक व्याकरण और वार्त्तालाप – चतुर्भुज सहाय एवं अरुण चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हिन्दी संस्थान मार्ग, आगरा।
2. मौखिक कौशल खंड- 1 एवं खंड- 2 – रवि प्रकाश गुप्त और अजेय पंडित, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हिन्दी संस्थान मार्ग, आगरा।
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी और पत्रकारिता – डॉ. निदेश प्रताप सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना।
5. हिन्दी रचना और व्याकरण – रमानाथ सहाय, रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, एनसीईआरटी, दिल्ली।

तृतीय छमाही

PAPER TITLE : व्यावहारिक हिन्दी लेखन
PAPER CODE : AEC-201
PAPER CREDIT : 2 (व्याख्यान - 2)
TOTAL MARKS : 50 (TH:30 + IA: 20)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा में व्यावहारिक लेखन कौशल विकसित करने हेतु तैयार किया गया है। इसमें औपचारिक एवं सामाजिक लेखन के विविध रूपों के साथ-साथ रिपोर्ट लेखन, विज्ञापन तथा सूचना लेखन की विधाओं का अभ्यास कराया जाएगा। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को कार्यालयीन, सामाजिक एवं सार्वजनिक संप्रेषण के लिए सक्षम बनाना है, जिससे वे विभिन्न संदर्भों में प्रभावी एवं सुसंगत लेखन कर सकें।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थीः

- औपचारिक लेखन की शैलियों (आवेदन, अनुशंसा, आदेश, सूचना, ज्ञापन, ईमेल) को समझेंगे और उनका अभ्यास करेंगे।
- सामाजिक लेखन (निमंत्रण, धन्यवाद, व्यक्तिगत पत्र) की भाषा और शैली में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- समाचार, घटना विवरण तथा सर्वेक्षण आधारित रिपोर्ट लेखन की संरचना और प्रस्तुति कौशल विकसित करेंगे।
- विज्ञापन, सूचना, पोस्टर और स्लोगन लेखन की रचनात्मकता एवं संप्रेषण क्षमता को निखारेंगे।
- हिन्दी में प्रभावी, स्पष्ट और उद्देश्यपरक लेखन के लिए आवश्यक व्याकरणिक एवं शैलीगत समझ प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थीः

- विभिन्न औपचारिक एवं सामाजिक प्रसंगों के लिए उपयुक्त पत्र लेखन में सक्षम होंगे।
- रिपोर्ट लेखन की विभिन्न विधाओं में विषयवस्तु का विश्लेषण कर सुसंगत प्रस्तुति दे सकेंगे।
- विज्ञापन एवं सूचना लेखन में रचनात्मकता और संप्रेषण की दक्षता प्रदर्शित करेंगे।
- कार्यालयीन एवं सार्वजनिक संप्रेषण के लिए हिन्दी भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकेंगे।
- व्यावहारिक लेखन के माध्यम से भाषा की सामाजिक उपयोगिता को समझेंगे और उसका प्रयोग करेंगे।

इकाई – 1 : औपचारिक लेखन एवं सामाजिक लेखन

- औपचारिक लेखन : आवेदन पत्र, अनुशंसा पत्र, कार्यालयीन पत्राचार (आदेश, सूचना, ज्ञापन), ई-मेल लेखन
- सामाजिक लेखन : निमंत्रण पत्र, धन्यवाद पत्र, व्यक्तिगत पत्र

इकाई -2 : रिपोर्ट लेखन, विज्ञापन और सूचना लेखन

- रिपोर्ट लेखन : समाचार रिपोर्ट, घटना विवरण, सर्वेक्षण आधारित रिपोर्ट
- विज्ञापन और सूचना लेखन : उत्पाद/सेवा विज्ञापन, सार्वजनिक सूचना, पोस्टर और स्लोगन

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण और वार्तालाप, चतुर्भुज सहाय एवं अरुण चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
2. व्यावहारिक हिन्दी संरचना और अभ्यास, चतुर्भुज सहाय एवं अरुण चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
3. व्यावहारिक हिन्दी संरचना और अभ्यास, महावीर सरन जैन, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
4. व्यावहारिक हिन्दी संरचना और अभ्यास, रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. व्यावहारिक पत्र लेखन कला, ब्रजकिशोर प्रसाद सिंह, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. पत्र लेखन, कैलाश सिंह, आयुष्मान पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।

4^{th} Year of FYUGP (with Honours) Syllabus

Paper Title : अस्मितामूलक विमर्श
Paper Code : DSC-401
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अस्मिता मूलक विमर्श की अवधारणा, स्वरूप और विकास की गहन समझ प्रदान करता है। इसमें स्त्री, दलित, आदिवासी तथा अन्य विमर्शों के साहित्यिक और सामाजिक संदर्भों का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी अस्मितामूलक साहित्यिक कृतियों के माध्यम से सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना और समकालीन चुनौतियों को समझेंगे। पाठ्यक्रम का उद्देश्य आलोचनात्मक दृष्टि, सामाजिक संवेदनशीलता और साहित्यिक विवेक का विकास करना है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को अस्मिता मूलक विमर्श की अवधारणा, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास से परिचित कराना।
- स्त्री, दलित, आदिवासी और अन्य विमर्शों के साहित्यिक रूपों का अध्ययन कराना।
- अस्मिता विमर्श से जुड़ी चुनौतियों और उनके समाधान की प्रक्रिया पर विचार करना।
- समकालीन हिन्दी साहित्य में अस्मिता की अभिव्यक्ति और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रासंगिकता को समझाना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी अस्मिता मूलक विमर्श की अवधारणा और उसके विविध रूपों को स्पष्ट रूप से पहचान सकेंगे।
- वे स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श से संबंधित साहित्यिक कृतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर पाएंगे।
- विद्यार्थी अस्मिता विमर्श की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रासंगिकता को वर्तमान संदर्भ में समझ सकेंगे।
- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से उनमें साहित्यिक संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास होगा।

इकाई-1 अस्मितामूलक विमर्श की अवधारणा

- अस्मिता का अर्थ, स्वरूप एवं विकास
- अस्मिता मूलक विमर्श की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- भारतीय सामाजिक संरचना में अस्मिता मूलक विमर्श
- समकालीन हिन्दी साहित्य में अस्मिता की अभिव्यक्ति

इकाई-2 अस्मितामूलक विमर्श के विविध रूप

- स्त्री विमर्श
- दलित विमर्श
- आदिवासी विमर्श
- अन्य विमर्श

इकाई-3 अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य लेखन-I

- भक्तिन (महादेवी वर्मा)
- बंद दराजों के साथ (मन्नु भंडारी)
- जूठन (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

इकाई-4 अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य लेखन-II

- पिता (ज्ञानरंजन)
- वापसी (रमाकांत बसुमतारी, अनुवाद – खगेश्वर बोरो)
- पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा-(चित्रा मुद्गल)

सहायक ग्रंथ:

1. 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र', ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन।
2. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, शरण कुमार लिंबाले (सं-रामणिका गुप्ता) -‘ वाणी प्रकाशन।
3. 'जूठन', ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन।
4. ‘हिन्दी नवजागरण और वैचारिक पृष्ठभूमि’ विवेक शंकर, वीणा प्रकाशन।
5. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा- चित्रा मुद्गल सामायिक प्रकाशन।
6. पिता - ज्ञानरंजन - https://www.hindwi.org/story/pita-gyanranjan-story

7. भक्तिन - महादेवी वर्मा – संस्मरण https://www.hindwi.org/sansmaran/bhaktin-mahadevi-varma-sansmaran
8. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी - रमणिका गुप्ता , वाणी प्रकाशन।
9. पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन स्वर - रमणिका गुप्ता (संपादक), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली।
10. आदिवासी चिंतन की भूमिका - गंगा सहाय मीणा, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली।
11. आदिवासी साहित्य संघर्ष और सृजन-रमणिका गुप्ता
12. कस्तुरी कुंडल बसै- मैत्रेयी पुष्पा

Paper Title : हिन्दी आलोचना
Paper Code : DSC-402
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम हिन्दी आलोचना की अवधारणा, स्वरूप और उसके ऐतिहासिक विकास की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करता है। इसमें शुक्ल-पूर्व काल से लेकर शुक्ल, शुक्लोत्तर और समकालीन युग तक की आलोचना प्रवृत्तियों एवं उनके प्रमुख प्रतिनिधि आलोचकों के सिद्धान्तों और दृष्टियों का अध्ययन किया जाता है। आलोचना के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों की समझ प्रदान कर यह पाठ्यक्रम स्वतंत्र आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक, विवेकपूर्ण और सृजनात्मक आलोचनात्मक दृष्टि का निर्माण करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objective)

- विद्यार्थियों को हिन्दी आलोचना की मूल अवधारणा, स्वरूप और महत्व से परिचित कराना।
- हिन्दी आलोचना के ऐतिहासिक विकास तथा उसके विभिन्न चरणों - शुक्लपूर्व, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर और समकालीन आलोचना - की विशेषताओं को समझाना।
- आलोचना के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों को समझते हुए साहित्यिक मूल्यों की पहचान और मूल्यांकन की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों में स्वतंत्र आलोचनात्मक सोच, विवेकशील दृष्टि और सृजनात्मक विश्लेषण-शक्ति का विकास करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- हिन्दी आलोचना के विकासक्रम, प्रमुख प्रवृत्तियों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- प्रमुख आलोचकों की समीक्षा दृष्टि, कार्यशैली और योगदान का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- आलोचना के सिद्धान्तों और पद्धतियों को व्यवहारिक रूप में लागू कर साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- साहित्य को विचार, समाज और संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने की क्षमता अर्जित करेंगे।

इकाई-1: आलोचना की अवधारणा एवं हिन्दी आलोचना का प्रारंभ

- आलोचना की अवधारणा। आलोचना के मुख्य प्रकार।
- आलोचक के गुण। आलोचना की उपादेयता।

- शुक्लपूर्व हिन्दी आलोचना की पृष्ठभूमि। शुक्लपूर्व प्रमुख हिन्दी आलाचकों (बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु हरिश्चन्द, प्रेमघन, महावीर प्रसाद द्विवेदी) की आलोचना दृष्टि।

इकाई 2 : शुक्ल युग

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के समीक्षा सिद्धान्त। काव्य में लोक मंगल की साधना का प्रतिमान।
- आचार्य शुक्ल की व्यवहारिक समीक्षा। आलोचक के रूप में रामचंद्र शुक्ल का मूल्याँकन।
- छायावादी आलोचना दृष्टिः छायावादी कवियों (प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी) की आलोचना दृष्टि।

इकाई 3 : शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना

- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना दृष्टि। छायाावाद एवं छायावादी कवियो के प्रति दृष्टि।
- डॉ. नगेन्द्र की काव्य दृष्टि एवं साहित्यिक मान्यताएँ। रस सिद्धान्त की व्याख्या। आलोचना-पद्धति।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य चिन्तन एवं आलोचना दृष्टि।

इकाई 4 : समकालीन हिन्दी आलोचना

- डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि।
- डॉ. नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि। मैनेजर पाण्डेय की आलोचना दृष्टि।
- कवि-आलोचक - अज्ञेय, मुक्तिबोध एवं अशोक वाजपेयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी- हिन्दी आलोचना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. विश्वनाथ त्रिपाठी — आलोचना का समाजशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. नामवर सिंह — कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. रामचन्द्र शुक्ल — हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. कमल किशोर गोयनका — भारतेन्दु युगीन आलोचना दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. नामवर सिंह — आलोचना और विचारधारा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. विश्वनाथ त्रिपाठी — आलोचना के आयाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. रामविलास शर्मा — हिन्दी आलोचना और भारतीय संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. नरेन्द्र मोहन — आचार्य शुक्ल की आलोचना दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. डॉ. नगेन्द्र — रस सिद्धान्त और उसका विकास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

11. डॉ. नगेन्द्र — साहित्य के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
12. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी — कविता क्या है, आलोचना की परम्परा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
13. गोपाल राय — शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. रामविलास शर्मा — भारतीय दृष्टि और हिन्दी आलोचना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
15. नामवर सिंह — छायावाद, वाद-विवाद-संवाद, कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
16. मैनेजर पाण्डेय — मार्क्सवाद और साहित्य, हिन्दी आलोचना की प्रवृत्तियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
17. मुक्तिबोध — नई कविता का आत्मसंघर्ष, विचार-प्रवाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18. अशोक वाजपेयी — कविता और आलोचना का संबंध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19. विजयदेव नारायण साही — आलोचना और यथार्थ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
20. नरेन्द्र मोहन (संपा.) — हिन्दी आलोचना : नये परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
21. नंदकिशोर नवल - हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
22. विश्वनाथ त्रिपाठी - हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
23. मधुरेश - हिन्दी आलोचना का विकास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
24. डॉ. अमरनाथ - हिन्दी आलोचना का आलोचनात्मक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
25. डॉ. अमरनाथ - हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Paper Title : हिन्दी साहित्य: अस्तित्ववाद और मनोविज्ञान
Paper Code : DSC-403
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम आधुनिक हिन्दी साहित्य की दो सबसे प्रभावशाली और युगांतरकारी वैचारिक धाराओं 'अस्तित्ववाद' और 'मनोविज्ञान' (मनोविश्लेषणवाद) के अंतर्संबंधों तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को जहाँ एक ओर मनुष्य की स्वतंत्रता, अजनबीपन, संत्रास और अस्तित्व की खोज से जुड़े दार्शनिक सिद्धांतों का परिचय मिलेगा, वहीं दूसरी ओर फ्रायड, एडलर और जुंग की मनोवैज्ञानिक स्थापनाओं के आलोक में मानव मन की जटिल परतों, दमित इच्छाओं और आर्थिक-सामाजिक दबावों से उत्पन्न मानसिक ग्रंथियों का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त होगा। अज्ञेय, जैनेंद्र, जयशंकर प्रसाद, निर्मल वर्मा और कमलेश्वर जैसे आधुनिक हिन्दी के शीर्ष रचनाकारों के उपन्यासों और कालजयी कहानियों के व्यावहारिक पाठ के माध्यम से यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में आधुनिक जीवनबोध और चरित्रों के सूक्ष्म मानसिक द्वंद्वों को समझने के लिए एक गहरी आलोचनात्मक व व्यावहारिक दृष्टि विकसित करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objective):

- विद्यार्थियों को पाश्चात्य और भारतीय परिप्रेक्ष्य में अस्तित्ववाद की दार्शनिक स्थापनाओं तथा मनोविज्ञान (मनोविश्लेषणवाद) के मूलभूत सिद्धांतों व पारिभाषिक शब्दावलियों का प्रामाणिक ज्ञान प्रदान करना।
- आधुनिक हिन्दी गद्य (उपन्यास और कहानी) के उद्भव और विकास पर अस्तित्ववादी दर्शन तथा मनोवैज्ञानिक चिंतन के प्रभाव को ऐतिहासिक व वैचारिक रूप से रेखांकित करना।
- निर्धारित उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों के व्यावहारिक पाठ के माध्यम से पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्व, अचेतन मन की प्रवृत्तियों तथा अस्तित्व के संकट की सूक्ष्म पड़ताल करने की क्षमता जगाना।
- विद्यार्थियों में साहित्य को दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान के चश्मे से देखने की अंतर्विषयी समझ पैदा करना, जिससे वे आधुनिक समाज और मानव व्यवहार के बदलते स्वरूप का गंभीर विश्लेषण कर सकें।

पाठ्यक्रम के परिणाम (Course Outcomes):

इस पाठ्यक्रम के सफल समापन के बाद विद्यार्थी समर्थ होंगे:

- अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद के सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझने और उनकी साहित्यिक विमर्शों में व्याख्या करने में।
- आधुनिक हिन्दी उपन्यासों और कहानियों के पात्रों की व्यावहारिक समीक्षा करते हुए उनके अवचेतन मन के व्यवहार और अस्तित्वगत संघर्षों का तार्किक मूल्यांकन करने में।

- महानगरीय बोध, अकेलेपन के संत्रास और आधुनिक जीवन की विसंगतियों के पीछे छिपे मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक कारणों को साहित्यिक कृतियों के आलोक में पहचान सकने में।
- आधुनिक हिन्दी आलोचना की वैचारिक प्रवृत्तियों को समझते हुए स्वतंत्र रूप से उच्च स्तरीय आलोचनात्मक लेख, असाइनमेंट और व्यावहारिक शोध-परियोजना तैयार करने में।

इकाई 1: अस्तित्ववाद

- अस्तित्ववाद की अवधारणा, परिभाषा और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
- अस्तित्ववाद की मुख्य विशेषताएँ।
- हिन्दी साहित्य (उपन्यास, नाटक एवं कहानी) में अस्तित्ववादी चेतना का उद्भव एवं विकास।

इकाई 2: मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान की अवधारणा एवं परिभाषा।
- मुख्य मनोवैज्ञानिक स्थापनाएँ: चेतन, अवचेतन और अचेतन मन; कामेच्छा, हीनता ग्रंथि और अहं।
- हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास और कहानी की विशेषताएँ, उनका उद्भव एवं विकास।

इकाई 3: मनोवैज्ञानिक एवं अस्तित्ववादी उपन्यास

- 'सुनीता' - जैनेंद्र कुमार (सेतु प्रकाशन)।
- 'अपने-अपने अजनबी' - अज्ञेय (भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली)।

इकाई 4: मनोवैज्ञानिक एवं अस्तित्ववादी कहानियाँ

- आकाशदीप - जयशंकर प्रसाद
- पाज़ेब - जैनेंद्र कुमार
- परिन्दे - निर्मल वर्मा
- खोई हुई दिशाएँ - कमलेश्वर

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. अस्तित्ववादी हिन्दी कहानी - डॉ चंदा गिरीश, दिव्य डिस्ट्रिब्योटर्स।
2. अस्तित्वाद और साहित्य - डॉ श्यामसुन्दर मिश्र, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

3. अस्तित्वाद: किर्कगार्ड से कामू तक - योगेन्द्र शाही, ग्रन्थलोक, दिल्ली ।
4. आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद - शिवप्रसाद सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. अस्तित्ववाद और मानववाद - ज्यां पॉल सार्त्र (अनुवाद: जे. पारीख), प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
6. अस्तित्ववाद : पक्ष और विपक्ष - रूबिचेक पाल (अनुवाद प्रभाकर माचवे), मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
7. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ० देवराज उपाध्याय ।
8. मनोवैज्ञानिक हिन्दी उपन्यास की बृहत्त्रयी - डॉ० रणवीर रांग्रा ।
9. इलाचन्द्र जोशी : साहित्य और समीक्षा - प्रेम भटनागर ।
10. हिन्दी के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास - डॉ० कमलेश अग्रवाल ।
11. हिन्दी उपन्यास शिल्प: बदलते परिप्रेक्ष्य - प्रेम भटनागर ।
12. आधुनिक समीक्षा - डॉ० देवराज उपाध्याय ।
13. हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास - डॉ० प्रताप नारायण टंडन ।

PAPER TITLE : भारतीय साहित्य
PAPER CODE : DSC-404
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम भारतीय साहित्य की समृद्ध और विविध विरासत से छात्रों को परिचित कराने का एक अनूठा प्रयास है। इसके तहत देश की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं (असमिया, बांग्ला, तमिल, ओड़िया, कश्मीरी, मणिपुरी और मैथिली) की अनूदित उत्कृष्ट रचनाओं को एक मंच पर लाया गया है। यह पाठ्यक्रम छात्रों में भाषाई सीमाओं से ऊपर उठकर 'भारतीयता' के अंतर्निहित भाषाई और सांस्कृतिक ताने-बाने को समझने की दृष्टि विकसित करता है। गद्य और पद्य के इस अनूठे समावेश के माध्यम से छात्र भारतीय समाज के विभिन्न कालखंडों, संघर्षों, संवेदनाओं और सौंदर्यबोध से साक्षात्कार कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- छात्रों को भारतीय साहित्य की सैद्धांतिक अवधारणा, इसके ऐतिहासिक स्वरूप और इसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत कराना।
- विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कहानियों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन कराना।
- आधुनिक और समकालीन भारतीय कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता, राष्ट्रवाद, प्रकृति, साम्यवाद और मानवीय मूल्यों के विविध स्वरों से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों में तुलनात्मक साहित्य के प्रति रुचि जगाना और विभिन्न लेखकों/कवियों के साहित्यिक योगदान का परिचय देना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- सांस्कृतिक समझ: छात्र भारतीय साहित्य की विविधता में एकता के सिद्धांत को गहराई से समझ सकेंगे और विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति से जुड़ पाएंगे।
- आलोचनात्मक विश्लेषण: विद्यार्थी विभिन्न भाषाओं की कहानियों और कविताओं का विषय-वस्तु एवं शिल्प के स्तर पर तार्किक और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- साहित्यिक दृष्टि: विभिन्न विधाओं के अध्ययन से छात्रों में मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक मुद्दों और समकालीन विमर्शों के प्रति संवेदनशीलता का विकास होगा।
- लेखन और संवाद कौशल: रचनाकारों के परिचय और उनकी शैलियों को समझकर छात्र स्वयं रचनात्मक लेखन, अनुवाद और तुलनात्मक विमर्श के लिए प्रेरित होंगे।

इकाई-1 : सैद्धांतिक खंड

- भारतीय साहित्य का स्वरूप
- प्रमुख विशेषता
- भारतीय साहित्य का महत्त्व

इकाई-2 : कहानी एवं लेखक परिचय खंड

- युद्ध (असमिया) - मामणि रायसम गोस्वामी
- अनुपमा का प्रेम (बांग्ला) - शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
- संतान वरदान (तमिल) - अखिलन

इकाई-3 : कविता खंड (भाग - 1)

- पृथ्वी मेरी कविता (असमिया) - हिरेन भट्टाचार्य
- धान-कटाई (ओड़िया) - सीताकांत महापात्र
- बाँसुरी वादक (कश्मीरी) - मोतीलाल 'साक़ी'
- स्वतंत्रता (तमिल) - सुब्रह्मण्यम भारती

इकाई-4 : कविता खंड (भाग - 2)

- जहाँ चित्त भय शून्य (बांग्ला) – रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- साम्यवाद (बांग्ला) – काज़ी नज़रूल इस्लाम
- आह्वान (मणिपुरी) – आशाङ्बम मिनकेतन सिंह
- आप बहुत झूठ बोलते हो (मैथिली) – वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. आधुनिक भारतीय कविता, डॉ० अवधेश नारायण मिश्र (सं), डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय (सं), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. भारतीय साहित्य संग्रह: (सं) डॉ० जोनाली बरुवा और डॉ० मनोज कुमार कलिता, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. भारतीय साहित्य परम्परा और आदिकाल, डॉ० संजू शर्मा, टू ड्रीममस्टर प्रेस एल.एल.पी., जयपुर
4. भारतीय साहित्य, डॉ० रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

Paper Title : शोध प्रविधि
Paper Code : RM-401
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध की मूल अवधारणाओं, स्वरूप और प्रक्रिया से परिचित कराता है। इसमें विषय चयन, परीक्षण, सर्वेक्षण, सामग्री संकलन, वर्गीकरण और विश्लेषण की विधियों का अध्ययन कराया जाएगा। आलोचनात्मक, सैद्धान्तिक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक और पाठानुसंधान जैसी विविध शोध प्रविधियों को समझने पर बल दिया गया है। साथ ही शोध की भाषा, उद्धरण पद्धति, पाद टिप्पणी, संदर्भ ग्रंथ सूची और इंटरनेट आधारित स्रोतों (ई-पत्रिका, ई-पुस्तक, शोध गंगा आदि) के उपयोग की जानकारी दी जाएगी। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध की वैज्ञानिकता, नैतिकता और प्रस्तुति कौशल से सुसज्जित करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों को शोध की अवधारणा, स्वरूप और अंतर्विषयक प्रासंगिकता से परिचित कराना।
- शोध प्रक्रिया के विभिन्न चरणों (विषय चयन से लेकर प्रस्तुति तक) को समझाना।
- आलोचनात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक और अन्य प्रविधियों के माध्यम से शोध की विविध पद्धतियों का अध्ययन कराना।
- शोध लेखन की भाषा, उद्धरण पद्धति और इंटरनेट आधारित स्रोतों के उपयोग की जानकारी प्रदान करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी शोध की मूल अवधारणाओं और अंतर्विषयक महत्व को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- वे शोध प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को व्यवस्थित रूप से अपनाकर शोध प्रबंध तैयार करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी आलोचनात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक जैसी विविध शोध प्रविधियों का प्रयोग कर सकेंगे।
- वे शोध लेखन में भाषा की शुद्धता, उद्धरण पद्धति और डिजिटल स्रोतों के उपयोग को आत्मसात कर सकेंगे।

इकाई-1 : शोध

- अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- शोध का उद्देश्य
- अंतर्विषयक शोध की प्रासंगिकता
- शोध और समीक्षा

इकाई 2 शोध प्रक्रिया एवं समाहार

- विषय चयन
- परीक्षण तथा सर्वेक्षण
- शोध प्रबंध की रूपरेखा
- सामग्री संकलन
- वर्गीकरण
- विश्लेषण एवं सेमिनार प्रस्तुति

इकाई-3 शोध की विविध प्रविधियाँ

- आलोचनात्मक
- शास्त्रीय या सैद्धान्तिक
- सर्वेक्षणात्मक
- तुलनात्मक
- कालखंडपरक या ऐतिहासिक
- वर्गपरक
- पाठानुसंधान

इकाई 4 शोध लेखन की भाषा एवं स्रोत

- शोध की भाषा
- उद्धरण, पाद टिप्पणी एवं संदर्भ ग्रंथ सूची,
- शोध में इंटरनेट सामग्री का उपयोग (ई-पत्रिका, ई- पुस्तक, ई- पुस्कालय, शोध गंगा)

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. विजयपाल सिंह, हिन्दी अनुसंधान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. गणेशन, अनुसंधान प्रविधि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. कन्हैया सिंह, हिन्दी पाठानुसंधान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. उर्वशी सूरती, अनुसंधान का व्यावहारिक स्वरूप, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई।
5. रवीन्द्र कुमार जैन, साहित्यिक अनुसंधान के आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

6. बैजनाथ सिंहल, शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. विनयमोहन शर्मा, शोध-प्रविधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8. राजमल बोरा, अनुसंधान प्रविधि और क्षेत्र -राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
9. सावित्री सिन्हा, अनुसंधान का स्वरूप, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

PAPER TITLE : हिन्दी नाटक
PAPER CODE : DSM-401
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम आधुनिक हिन्दी नाटक के उद्भव, विकास और विविध धाराओं का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें नाटक की परिभाषा, तत्व, प्रकार तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश जैसे प्रमुख नाटककारों की प्रतिनिधि कृतियों- अंधेर नगरी, ध्रुवस्वामिनी और आधे-अधूरे का विश्लेषणात्मक अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी नाटक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों और साहित्यिक योगदान की गहन समझ प्रदान करता है। यह अध्ययन उन्हें समकालीन विमर्शों से जोड़ते हुए आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- हिन्दी नाटक के उद्भव, विकास और प्रमुख प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक विश्लेषण करना।
- नाटक के तत्वों, प्रकारों और संरचनात्मक विशेषताओं की पहचान कराना।
- भारतेंदु, प्रसाद और राकेश की नाट्यकृतियों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भों को समझाना।
- विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, संवाद कौशल और साहित्यिक अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- नाटक की परिभाषा, तत्वों और प्रकारों की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- आधुनिक हिन्दी नाटक के ऐतिहासिक विकासक्रम और प्रमुख नाटककारों के योगदान को विश्लेषित कर सकेंगे।
- अंधेर नगरी, ध्रुवस्वामिनी और आधे-अधूरे जैसे नाटकों के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों का विवेचन कर सकेंगे।
- समकालीन संदर्भों में नाटक की प्रासंगिकता को पहचानते हुए संवाद और प्रस्तुति कौशल विकसित करेंगे।

इकाई - 1

- नाटक परिभाषा एवं तत्व, हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास, हिन्दी नाटक के प्रकार एवं विशेषताएँ।
- हिन्दी के प्रमुख नाटककार: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश , धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, गिरीश कर्नाड, हबीब तनवीर, मनोहरश्याम जोशी, स्वदेश दीपक।

इकाई - 2

- अंधेर नगरी: भारतेंदु हरिश्चंद्र

इकाई - 3

- ध्रुवस्वामिनी: जयशंकर प्रसाद

इकाई - 4

- आधे-अधूरे: मोहन राकेश

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी नाटक का विकास: डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. हिन्दी नाटक का इतिहास - डॉ. गोपाल राय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिन्दी नाटक: स्वरूप और संवेदना: डॉ. रामजी तिवारी, साहित्य भवन, इलाहबाद ।
4. अंधेर नगरी: भारतेंदु हरिश्चंद्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
5. ध्रुवस्वामिनी: जयशंकर प्रसाद, भारती भवन, इलाहाबाद ।
6. आधे-अधूरे: मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली ।
7. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
8. नाटककार : जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपयी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. हिन्दी नाटक : स्वरूप और संवेदना - डॉ. रमेशचंद्र शाह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. आधुनिक हिन्दी नाटककार - डॉ. विजय बहादुर सिंह, साहित्य भवन, इलाहाबाद

अष्टम छमाही

PAPER TITLE : राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा
PAPER CODE : DSC-451
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को आधुनिक हिन्दी कविता की उस प्रखर धारा से परिचित कराता है जिसने स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्र-निर्माण में वैचारिक अलख जगाई। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र भारतेंदु युग से लेकर छायावादोत्तर काल तक की राष्ट्रीय चेतना के विकास का अध्ययन करेंगे। साथ ही मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान और सोहनलाल द्विवेदी जैसे मूर्धन्य कवियों की चुनिंदा कालजयी रचनाओं के माध्यम से शौर्य, बलिदान और जन-जागरण की आकांक्षाओं का व्यावहारिक विश्लेषण करना सीखेंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

- हिन्दी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के ऐतिहासिक उद्भव और वैचारिक पृष्ठभूमि का सैद्धांतिक ज्ञान देना।
- प्रतिनिधि कवियों के जीवन-दर्शन और राष्ट्रीय आंदोलनों में उनकी भूमिका से छात्रों को अवगत कराना।
- निर्धारित मुख्य कविताओं के व्यावहारिक पाठ (Textual Analysis) के माध्यम से छात्रों में काव्य-समीक्षा और व्याख्या की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों, सामाजिक समरसता और देशप्रेम की भावना का संवर्धन करना।

पाठ्यक्रम के परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की ऐतिहासिक प्रवृत्तियों की स्पष्ट समीक्षा करने में सक्षम होंगे।
- छात्र स्वतंत्रता संग्राम के दौर की राष्ट्रीय चेतना के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।
- निर्धारित मूल पाठों (कविताओं) का सप्रसंग मूल्यांकन करने और उनकी युगीन प्रासंगिकता को तार्किक रूप से लिखने में निपुण होंगे।
- छात्रों में अंतर्विषयक दृष्टिकोण विकसित होगा, जिससे वे साहित्य को इतिहास और समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में देख पाएंगे।

इकाई - 1: सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

- हिन्दी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा का उद्भव एवं विकास।
- राष्ट्रीय चेतना का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद और छायावादोत्तर काल की युगीन परिस्थितियां।
- राष्ट्रीय काव्यधारा की मुख्य प्रवृत्तियां: अतीत का गौरवगान, गुलामी के प्रति क्षोभ, और जन-जागरण।

इकाई - 2: राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत (गुप्त जी और माखनलाल चतुर्वेदी)

- मैथिलीशरण गुप्त: कवि परिचय एवं राष्ट्रीय भावना। निर्धारित कविता: 'मनुष्यता'।
- माखनलाल चतुर्वेदी: कवि परिचय एवं 'एक भारतीय आत्मा' की अवधारणा। निर्धारित कविता: 'सिपाही'।

इकाई - 3: ओज, क्रांति और विप्लव का स्वर (दिनकर और नवीन)

- रामधारी सिंह 'दिनकर': कवि परिचय एवं उत्तर-छायावादी दौर में ओज का स्वर। निर्धारित कविता: 'जनतंत्र का जन्म'।
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन': कवि परिचय, स्वाधीनता आंदोलन में सक्रियता और क्रांतिकारी चेतना। निर्धारित कविता: 'विप्लव गायन'।

इकाई - 4: शौर्य, बलिदान एवं वीर रस (सुभद्रा कुमारी चौहान और सोहनलाल द्विवेदी)

- सुभद्रा कुमारी चौहान: कवि परिचय व शौर्य का प्रकटीकरण। निर्धारित कविता: 'वीरों का कैसा हो वसंत'
- सोहनलाल द्विवेदी: कवि परिचय, राष्ट्रीय काव्य में गांधीवादी जीवन-मूल्य और जन-गीतों का प्रभाव। निर्धारित कविता: 'प्रयाण गीत'।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. राष्ट्रीय काव्यधारा - कन्हैया सिंह, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ० बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
4. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : व्यक्ति एवं काव्य- डॉ लक्ष्मीनारायण दूबे, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।
5. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की अंतर्कथाओं के स्रोत - शशि अग्रवाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।
6. माखनलाल चतुर्वेदी : काव्य एवं दर्शन - डॉ० दिनेश चन्द्र वर्मा, विद्या प्रकाशन, कानपुर ।
7. राष्ट्रभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान - एम. राजस्वी, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
8. दिनकर : अर्धनारीश्वर कवि - नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

Paper Title : आधुनिक हिन्दी काव्य
Paper Code : DSC-452
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय: आधुनिक हिन्दी काव्य नामक यह पाठ्यक्रम मैथिलीशरण गुप्त के नवजागरणकालीन आदर्शवाद से लेकर रघुवीर सहाय के समकालीन नागरिक बोध तक, बीसवीं शताब्दी के हिन्दी कविता के वैचारिक और कलात्मक विकास को गहराई से समझने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह कोर्स केवल काव्य-इतिहास का अध्ययन नहीं है, बल्कि महाकाव्य (कामायनी), खंड काव्य (साकेत) और विशिष्ट लम्बी कविताओं (राम की शक्ति पूजा, अँधेरे में, असाध्य वीणा) के माध्यम से आधुनिक भारतीय समाज, राजनीति, दर्शन और आत्म-चेतना के क्रमिक विकास का विश्लेषण करता है। यह पाठ्यक्रम छात्रों को खड़ी बोली के विकास, छायावादी दर्शन, यथार्थवादी दृष्टिकोण, प्रयोगात्मक शिल्प और समकालीन मोहभंग जैसे महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्तियों को आलोचनात्मक दृष्टि से समझने और मूल्यांकन करने में सक्षम बनाएगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):

- हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों (द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, समकालीन कविता) के विकास और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ को समझाना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक कृतियों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, आदर्शवाद, सौंदर्यबोध और सामाजिक यथार्थ का बोध कराना।
- आधुनिक हिन्दी कविता में नारी-विमर्श, अस्तित्ववाद, जनतांत्रिक विसंगतियाँ और आत्म-संघर्ष जैसे विमर्शों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि, रचनात्मक अभिव्यक्ति और साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र के साथ-साथ सामाजिक-राजनीतिक चेतना से जोड़ना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी द्विवेदी युग से लेकर समकालीन कविता तक हिन्दी साहित्य के विकासक्रम को पहचान सकेंगे और उसकी विशेषताओं का विवेचन कर सकेंगे।
- वे मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, नागार्जुन, मुक्तिबोध, अज्ञेय, धूमिल और रघुवीर सहाय जैसे कवियों की कृतियों में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण को समझ पाएंगे।
- विद्यार्थी साहित्यिक पाठों में नारी-विमर्श, राष्ट्रीय चेतना, अस्तित्ववादी दर्शन और जनतांत्रिक विसंगतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व और रचनात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होगी।

इकाई - 1: नवजागरण एवं आदर्शवाद (द्विवेदी युग और खड़ी बोली का विकास)

- मैथिलीशरण गुप्त - साकेत (नवम सर्ग)
- मैथिलीशरण गुप्त - भारत-भारती (चयनित अंश), वर्तमान खंड - साहित्य, समाज।

इकाई - 2: सौंदर्य और दर्शन (छायावाद)

- जयशंकर प्रसाद - श्रद्धा और आनंद सर्ग
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' - राम की शक्ति पूजा (पूर्ण)

इकाई - 3: यथार्थ एवं आत्म संघर्ष (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता)

- नागार्जुन – हरिजन गाथा (पूर्ण)
- गजानन माधव मुक्तिबोध - अँधेरे में (पूर्ण)
- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय - असाध्य वीणा (पूर्ण)

इकाई - 4: मोहभंग एवं विसंगतियाँ (समकालीन कविता)

- सुदामा पांडेय 'धूमिल' - मोचीराम (पूर्ण)
- रघुवीर सहाय - रामदास

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्लः हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. डॉ. नगेन्द्र (संपादक): हिन्दी साहित्य का इतिहास ,मयूर पब्लिकेशन, नयी दिल्ली
3. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदीः हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
4. नामवर सिंहः कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. छबिल कुमार मेहेर: तीन लंबी कविता, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली
6. राजेंद्रप्रसाद सिंह: हिन्दी की लंबी कविताओं का आलोचना-पक्ष, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. डॉ. बलदेव वंशी: लम्बी कविताएँ : वैचारिक सरोकार,वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली

8. हजारी प्रसाद द्विवेदीः साहित्य सहचर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. डॉ. नगेन्द्रः सुमित्रानंदन पंत, साहित्य रत्न भंडार ,आगरा
10. रामविलास शर्माः निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदीः कामायनी का पुनर्मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन ,इलाहाबाद
12. नामवर सिंहः छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
13. विजयदेव नारायण साही: छठवाँ दशक, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
14. अज्ञेयः आत्मनेपद, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
15. नामवर सिंहः कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
16. नामवर सिंहः वाद-विवाद-संवाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
17. डॉ. परमानन्द श्रीवास्तवः कविता का अर्थात् ,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली का अर्थात् ,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

Paper Title : लोक साहित्य
Paper Code : DSC-453
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी लोक साहित्य की परंपरा, स्वरूप, प्रकार और अध्ययन की प्रक्रिया से परिचित कराता है। इसमें लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के साम्य-वैषम्य, लोक संस्कृति की विविधता, संकलन एवं अनुसंधान की चुनौतियाँ तथा उनके समाधान पर विचार किया जाएगा। साथ ही असमिया लोक साहित्य के अध्ययन के माध्यम से क्षेत्रीय साहित्यिक परंपराओं और उनकी प्रासंगिकता को समझने का अवसर मिलेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों को हिन्दी लोक साहित्य की अवधारणा, स्वरूप और विशेषताओं से परिचित कराना।
- लोक साहित्य के वर्गीकरण, संकलन और अनुसंधान की प्रक्रिया को समझाना।
- लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के बीच संबंधों तथा सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट करना।
- असमिया लोक साहित्य के अध्ययन के माध्यम से क्षेत्रीय साहित्यिक परंपराओं की विविधता और प्रभाव को रेखांकित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के साम्य-वैषम्य का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- वे लोक साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक जीवन की झलक को समझ पाएंगे।
- विद्यार्थी लोक साहित्य के संकलन, संग्रह और अनुसंधान की चुनौतियों को पहचानकर उनके समाधान पर विचार कर सकेंगे।
- असमिया लोक साहित्य के अध्ययन से वे क्षेत्रीय साहित्यिक परंपराओं और हिन्दी साहित्य पर उनके प्रभाव को समझ पाएंगे।

इकाई - 1: भारतीय लोक साहित्य की परम्परा

- लोक साहित्य का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएँ
- लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य में अन्तर
- लोक का क्षेत्र विस्तार
- लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के मध्य निहित साम्य-वैषम्य।

इकाई - 2: लोक साहित्य सम्बन्धी संकलन एवं अनुसंधान कार्य

- लोक साहित्य के संग्रह की कठिनाइयाँ एवं समाधान
- हिन्दी की विभिन्न बोलियों में उपलब्ध लोक साहित्य सम्बन्धी संकलन
- हिन्दी की विभिन्न बोलियों में हुए अनुसंधान कार्य का क्रमिक विकास
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोक साहित्य की प्रासंगिकता।

इकाई - 3: लोक साहित्य का वर्गीकरण

- लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-गाथा, लोक-नाट्य, लोक सुभाषित, मुहावरें एवं पहेलियाँ।

इकाई - 4 :असमिय़ा लोक साहित्य : सामान्य परिचय

- असम के प्रसिद्ध लोकगीतों, लोक कथाओं एवं लोकगाथाओं के विविध रूप।
- असमिया भाषा में संकलित एवं विश्लेषित लोक साहित्य-रूपों का संक्षिप्त परिचय।
- लोक नाट्य परम्परा एवं प्रविधि :हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोकनाट्यों का प्रभाव।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. सतेन्द्र- लोक-साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल, आगरा
2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय-लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन इलाहाबाद
3. डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय- लोक साहित्य का अध्ययन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. डॉ. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य स्वरूप और मूल्यांकन, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली
5. डॉ. हरेराम पाठक-असमिया लोक : साहित्य एक विश्लेषण
6. प्रो. भूपेन्द्रनाथ रायचौधरी-असमिया लोक साहित्य की भूमिका,भारती प्रकाशन, रिहाबारी, गुवाहाटी

Paper Title : परियोजना-कार्य
Paper Code : DSC-454
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (Project-60 + Viva-Voce-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) के व्यावहारिक शिक्षण सिद्धांतों पर आधारित है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक शोध में बदलने की क्षमता विकसित करना है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी किसी विशिष्ट साहित्यिक विषय या विभूति पर गहन साहित्य-सर्वेक्षण करते हुए एक लघु शैक्षिक परियोजना-कार्य अथवा संगोष्ठी-पत्र तैयार करते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध-प्रविधि के प्राथमिक चरणों, जैसे विषय-चयन, सामग्री-संकलन, आलोचनात्मक विश्लेषण और निष्कर्ष-लेखन से परिचित कराता है। इसके साथ ही, यह अकादमिक प्रस्तुतीकरण और मौखिकी के माध्यम से छात्रों के संचार-कौशल, तकनीकी दक्षता (यूनिकोड टंकण व पीपीटी निर्माण) और तार्किक क्षमता को सुदृढ़ कर उन्हें भविष्य के उच्च स्तरीय अनुसंधानों के लिए तैयार करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को शोध की प्राथमिक प्रणालियों, साहित्य-सर्वेक्षण और आलोचनात्मक पद्धति के व्यावहारिक अनुप्रयोग से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा और साहित्य की महान विभूतियों तथा उनकी कालजयी कृतियों के प्रति गहन विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना।
- छात्रों को आधुनिक तकनीकी उपकरणों, जैसे हिन्दी यूनिकोड टंकण और पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन (PPT) के कुशल प्रयोग में पारंगत बनाना।
- अकादमिक संगोष्ठियों और मंचों पर प्रभावी ढंग से अपने विचारों को प्रस्तुत करने तथा तार्किक विमर्श की क्षमता जाग्रत करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

सम्बन्धित कोर्स के सफल अध्ययन से हिन्दी के विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे:

- चयनित विषयानुसार हिन्दी साहित्य की महान विभूतियों के जीवन, कृतियों एवं साहित्यिक उपलब्धियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर पायेंगे।
- हिन्दी टंकण (यूनिकोड) और पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन आदि के माध्यम से अपनी तकनीकी क्षमता तथा मंच-प्रस्तुतीकरण के कौशल को प्रदर्शित कर पायेंगे।

- शोध-सम्बन्धी बुनियादी सैद्धांतिक नियमों, संदर्भ-ग्रंथ सूची निर्माण तथा पद्धतियों का अपने लघु परियोजना-कार्य में व्यावहारिक अनुप्रयोग कर पायेंगे।
- अकादमिक लेखन और मौखिकी के माध्यम से अपनी तार्किक क्षमता, शोधपरक नैतिकता और उन्नत शोधान्वेषी दृष्टिकोण का विकास कर पायेंगे।

परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-पत्र लेखन एवं प्रस्तुति की शर्तें :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थी को किसी एक हिन्दी साहित्यिक विभूति के जीवन एवं साहित्यिक उपलब्धियों पर साहित्य-सर्वेक्षण के तहत एक लघु शैक्षिक परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-पत्र एक शोध-निर्देशक के अधीन रहकर संपादित करना होगा।
2. परियोजना-कार्य / संगोष्ठी-पत्र के लिए शोध-निर्देशक का आवंटन विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के संबद्ध विभाग द्वारा छमाही के आरम्भ में ही किया जाएगा। लघु परियोजना के विषय के चयन से लेकर संगोष्ठी-पत्र के लेखन, संपादन और अंतिम प्रस्तुतीकरण तक का संपूर्ण कार्य विद्यार्थी को अपने आवंटित शोध-निर्देशक के कुशल निर्देशन, परामर्श और रेखदेख में ही पूर्ण करना होगा।
3. शोध की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए छमाही के प्रथम दो महीनों में विषय चयन व रूपरेखा, चौथे महीने में प्रथम प्रारूप तथा अंतिम परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व अंतिम परियोजना-रिपोर्ट जमा करनी होगी।
4. परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-पत्र 10,000 (दस हजार) शब्दों में सीमित हो। प्राध्यापकों द्वारा निर्धारित किए गए विषय पर विद्यार्थी को अपने परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-पत्र को स्वयं कम्प्यूटर में मानक यूनिकोड (Unicode - Arial Unicode / Mangal / Kokila font) में टंकित कर जमा करना होगा। विद्यार्थी को परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-पत्र की प्रचलित मानक पद्धति (यथा APA प्रारूप अथवा स्वीकृत भारतीय मानक पद्धति) में तैयार किए गए अपने परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-पत्र को उक्त छमाही की अन्तिम परीक्षा के आरम्भ से एक सप्ताह पूर्व ही जमा करना होगा।
5. परियोजना-कार्य पूरी तरह मौलिक होना चाहिए। किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी (Plagiarism या कट-पेस्ट) पाए जाने पर परियोजना-कार्य निरस्त किया जा सकता है। विद्यार्थी को रिपोर्ट के साथ मौलिकता का एक स्व-घोषणा पत्र भी संलग्न करना होगा।
6. विद्यार्थी पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन (PPT) द्वारा अपना प्रस्तुतीकरण देंगे। इस प्रस्तुति में विभागीय अध्यक्ष, परियोजना-निर्देशक, विभागीय प्राध्यापकगण एवं विश्वविद्यालय के संदर्भ में कुलपति/नामित प्रतिनिधि अथवा महाविद्यालय के संदर्भ में प्राचार्य/नामित प्रतिनिधि की उपस्थिति अपेक्षित है।
7. विभाग के अध्यक्ष, परियोजना-कार्य के निर्देशक और महाविद्यालय / विश्वविद्यालय के अध्यक्ष / प्राचार्य / कुलपति या उनके द्वारा नामित प्रतिनिधि से बनी मूल्यांकन-समिति में से:

- अध्यक्ष / कुलपति / प्राचार्य या उनके प्रतिनिधि: 40 अंक (लेखन : 25 + प्रस्तुति : 15)
- विभाग के अध्यक्ष: 35 अंक (लेखन : 20 + प्रस्तुति : 15)
- परियोजना-कार्य के निर्देशक: 25 अंक (लेखन : 15 + प्रस्तुति : 10) के अन्तर्गत मूल्यांकन करेंगे।

8. परियोजना-कार्य/संगोष्ठी-कार्य के मूल्यांकन के दौरान अन्य बातों के साथ ही विद्यार्थी की आलोचनात्मक समीक्षा की योग्यता, शोध-प्रविधि के सही अनुप्रयोग और अंतःविषयी दृष्टिकोण को ध्यान में रखा जायेगा।

हिन्दी साहित्यिक विभूति (अनुमोदित सूची) :

चन्दबरदाई, विद्यापति, कबीरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, सूरदास, मीराँबाई, गोस्वामी तुलसीदास, रहीम, रसखान, केशवदास, बिहारीलाल, देव, भूषण, घनानन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, भगवतीचरण वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', हरिवंशराय 'बच्चन', रामधारी सिंह 'दिनकर', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ० नगेन्द्र, जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, लक्ष्मीनारायण मिश्र, भवानीप्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती, नागार्जुन, 'मुक्तिबोध', फणीश्वरनाथ 'रेणु', उषा प्रियम्बदा, मन्नू भण्डारी, अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, श्रीलाल शुक्ल, कमलेश्वर, लक्ष्मीनारायण लाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, राहुल सांकृत्यायन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मोहन राकेश, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल', शंकरशेष, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी, शेखर जोशी, अरुण कमल, दुष्यन्त कुमार, विनोद कुमार शुक्ल।

विशेष टिप्पणी: विशेष परिस्थितियों में, विभाग की अनुमति से इस सूची से इतर अन्य महत्वपूर्ण समकालीन, आंचलिक अथवा लोक-साहित्यकारों को भी शोध-परियोजना का विषय बनाया जा सकता है।

Paper Title : लघु शोध-प्रबंध (Dissertation)
Paper Code : DSR-452
Paper Credit : 12
Total Marks : 300 (Project-180 + Viva-Voce-120)

पाठ्यक्रम परिचय: यह पाठ्यक्रम स्नातक (शोध सहित) अथवा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए एक उच्च स्तरीय अकादमिक उपक्रम है, जिसका उद्देश्य छात्रों को स्वतंत्र और मौलिक अनुसंधान के योग्य बनाना है। 12 क्रेडिट का यह लघु शोध-प्रबंध विद्यार्थियों को केवल सतही अध्ययन से आगे ले जाकर शोध प्रविधि के गहन और व्यावहारिक अनुप्रयोग का अवसर देता है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी अपने आवंटित शोध-निर्देशक के कुशल मार्गदर्शन में विषय-चयन, परिकल्पना निर्माण, विस्तृत साहित्य-सर्वेक्षण, और अंतःविषयी या बहुविषयी दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए एक संरचित लघु शोध-प्रबंध तैयार करते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में शोधपरक नैतिकता, वस्तुनिष्ठता, गहन आलोचनात्मक विश्लेषण और अकादमिक लेखन की क्षमता विकसित करता है, जिससे वे भविष्य में पी-एच.डी. जैसे उच्च स्तरीय शोधों तथा अकादमिक क्षेत्रों में नेतृत्व करने के लिए पूरी तरह सक्षम हो सकें।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को शोध प्रविधि के वैज्ञानिक सिद्धांतों, अध्यायीकरण और संदर्भ ग्रंथ सूची पद्धति (यथा APA प्रारूप) से गहनता से परिचित कराना।
- छात्रों में हिन्दी भाषा और साहित्य के स्वतंत्र अध्ययन के साथ-साथ अन्य भाषाओं या अनुशासनों के साथ तुलनात्मक, व्यतिरेकी और अंतःविषयी शोध दृष्टिकोण विकसित करना।
- विद्यार्थियों को साहित्यिक चोरी के प्रति जागरूक करते हुए उनमें शोधपरक नैतिकता, मौलिकता और वैज्ञानिक विवेचन की क्षमता का विकास करना।
- विस्तृत शोध आलेख लेखन तथा उच्च स्तरीय राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के अनुरूप पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन और प्रभावी मौखिक साक्षात्कार के लिए तैयार करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

सम्बन्धित कोर्स के सफल अध्ययन से हिन्दी के विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगे :

- शोध प्रविधि के शुद्ध प्रयोग द्वारा किसी भी जटिल साहित्यिक व भाषाई विषय पर स्वतंत्र रूप से परिकल्पना तैयार कर एक व्यवस्थित और संरचित लघु शोध-प्रबंध लिखने में सक्षम होंगे।

- हिन्दी साहित्य का समाजशास्त्र, पर्यावरण, जनसंचार या अन्य भारतीय/विदेशी भाषाओं के साथ तुलनात्मक और बहुविषयी धरातल पर मूल्यांकन कर ज्ञान के मौजूदा क्षेत्र में मौलिक योगदान दे पाएंगे।
- मानक यूनिकोड टंकण, व्यवस्थित पाद-टिप्पणियों और ग्रंथ-सूची निर्माण के वैश्विक अकादमिक मानकों का पालन करते हुए त्रुटिहीन शोध-प्रारूप तैयार कर सकेंगे।
- वैज्ञानिकता, मौलिक उद्भावनागत क्षमता तथा शोधपरक नैतिकता का परिचय देते हुए उच्च स्तरीय अकादमिक मंचों पर अपने शोध-निष्कर्षों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत कर पाएंगे।

लघु शोध-प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुति की शर्तें :

1. लघु शोध-प्रबंध का विषय हिन्दी भाषा और साहित्य से संबंधित होना अनिवार्य है। तुलनात्मक शोध के सन्दर्भ में हिन्दी भाषा या साहित्य के साथ किसी अन्य भाषा या साहित्य का अध्ययन किया जा सकता है।
2. लघु शोध-प्रबंध के लिए शोध-निर्देशक का आवंटन विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के संबद्ध विभाग द्वारा छमाही के आरम्भ में ही किया जाएगा। शोध-विषय के निर्धारण से लेकर शोध-प्रबंध के लेखन, संपादन और अंतिम प्रस्तुतीकरण तक का संपूर्ण कार्य विद्यार्थी को अपने आवंटित शोध-निर्देशक के कुशल निर्देशन और रेखदेख में ही संपादित करना होगा।
3. लघु शोध-प्रबंध 35,000 से 40,000 शब्दों में सीमित हो। प्रस्तावना, उपसंहार, ग्रंथ-सूची, संलग्नक आदि के अतिरिक्त कम-से-कम चार अध्यायों में शोध-कार्य सम्पन्न हो। प्रत्येक अध्याय में लगभग समान शब्द हों।
4. विद्यार्थी को अपने लघु शोध-प्रबंध को स्वयं कम्प्यूटर में मानक यूनिकोड में टंकित कर जमा करना होगा। विद्यार्थी को लघु शोध-प्रबंध की प्रचलित मानक पद्धति (यथा APA प्रारूप) के आधार पर अपने लघु शोध-प्रबंध को तैयार कर उक्त छमाही के अंतिम महीने के प्रथम 15 दिन के भीतर जमा करना होगा।
5. लघु शोध-प्रबंध पूरी तरह मौलिक होना चाहिए। किसी भी प्रकार की आधिकारिक साहित्यिक चोरी (Plagiarism या कट-पेस्ट) पाए जाने पर विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। विद्यार्थी को शोध प्रबंध के साथ मौलिकता का एक स्व-घोषणा पत्र संलग्न करना होगा।
6. मौखिकी में विद्यार्थी पावर पॉइंट प्रेज़ेंटेशन (PPT) द्वारा अपनी प्रस्तुति देंगे। इस प्रस्तुति में विभागीय अध्यक्ष, लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक, विभागीय प्राध्यापकगण एवं विश्वविद्यालय के संदर्भ में कुलपति/नामित प्रतिनिधि अथवा महाविद्यालय के संदर्भ में प्राचार्य (Principal)/नामित प्रतिनिधि की उपस्थिति अपेक्षित है।

7. मूल्यांकन व्यवस्था :

- भाग क: लेखन (180 अंक): इसका मूल्यांकन शोध-निर्देशक (आंतरिक) द्वारा 90 अंक तथा बाह्य परीक्षक अथवा विभागाध्यक्ष द्वारा 90 अंकों के अंतर्गत किया जाएगा।
- भाग ख: प्रस्तुति एवं मौखिकी (120 अंक): मूल्यांकन-समिति में से अध्यक्ष/कुलपति/प्राचार्य के प्रतिनिधि 40 अंक, विभाग के अध्यक्ष 40 अंक एवं लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक 40 अंक के अंतर्गत (कुल 120 अंक) मूल्यांकन करेंगे।

8. लघु शोध-प्रबंध के मूल्यांकन के दौरान अन्य बातों के साथ ही विद्यार्थी की शोधपरक नैतिकता, वैज्ञानिकता, शोध-प्रविधि के शुद्ध प्रयोग तथा मौलिक उद्भावनागत क्षमता को ध्यान में रखा जायेगा।

Paper Title : प्रेमचन्द
Paper Code : DSE-451
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम हिन्दी साहित्य के महान यथार्थवादी लेखक प्रेमचन्द के जीवन, साहित्यिक योगदान और उनकी रचनाओं के गहन अध्ययन पर केंद्रित है। इसमें प्रेमचन्द के उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध और नाटक का विश्लेषण किया जाता है। विद्यार्थी प्रेमचन्द के साहित्य में यथार्थवाद और आदर्शवाद की विशेषताओं, उनकी भाषा और शैली, तथा समाज से उनके साहित्यिक संबंधों को समझते हैं। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रेमचन्द के साहित्यिक अवदान का समग्र दृष्टिकोण प्रदान करना है, जिससे वे हिन्दी साहित्य के विकासक्रम में उनकी भूमिका को समझ सकें और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर सकें।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को प्रेमचन्द के जीवन और साहित्यिक परिचय से अवगत कराना।
- प्रेमचन्द के उपन्यास और कहानियों के माध्यम से हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद और आदर्शवाद की समझ विकसित करना।
- प्रेमचन्द की भाषा, शैली और कथेतर साहित्य (निबन्ध, नाटक) का अध्ययन कराना।
- प्रेमचन्द के साहित्य और समाज के परस्पर संबंधों का विश्लेषण कराना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी प्रेमचन्द के जीवन और साहित्यिक योगदान को समझकर हिन्दी साहित्य में उनकी उपस्थिति का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- वे उपन्यास कर्मभूमि और प्रमुख कहानियों (बड़े घर की बेटी, सवासेर गेंहूँ, पंच परमेश्वर, पूस की रात, कफन) का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रेमचन्द की भाषा, शैली और कथेतर साहित्य (निबन्ध एवं नाटक) की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।
- वे प्रेमचन्द के साहित्य में यथार्थवाद और आदर्शवाद की प्रवृत्तियों तथा समाज से उनके गहरे संबंधों को स्पष्ट कर सकेंगे।

इकाई - 1: हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द की उपस्थिति

- जीवन एवं साहित्यिक परिचय
- कहानीकार प्रेमचन्द
- उपन्यासकार प्रेमचन्द
- हिन्दी साहित्य को प्रेमचन्द की देन।

इकाई - 2: हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द

- कर्मभूमि

इकाई - 3: प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियाँ

- बड़े घर की बेटी,
- सवासेर गेंहूँ,
- पंच परमेश्वर,
- पूस की रात
- कफन

इकाई - 4: प्रेमचन्द का कथेतर साहित्य

- साहित्य का उद्देश्य (निबन्ध)
- प्रेम की वेदी (नाटक)

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. जैनेन्द्र कुमार-प्रेमचन्द एक कृति व्यक्तित्व, पूर्वोदय प्रकाशन,दिल्ली
2. अमृतराय-प्रेमचन्द: कलम का सिपाही, हँस प्रकाशन इलाहाबाद
3. डॉ. गोपाल राय- गोदान: अध्ययन की समस्याएँ, ग्रंथ निकेतन, पटना
4. रामविलास शर्मा- प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. रामविलास शर्मा-प्रेमचन्द: आलोचनात्मक परिचय, सरस्वती प्रेस, बनारस
6. जनार्दन प्रसाद झा द्विज, प्रेमचन्द की उपन्यास कला, वाणी मन्दिर, छपरा
7. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- प्रेमचन्द: सम्पादक,प्रकाशन संस्थान, शाहदरा, दिल्ली

Paper Title : हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
Paper Code : DSC-501
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम 'हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि' विद्यार्थियों को उन दार्शनिक, सामाजिक और राजनैतिक आंदोलनों से परिचित कराता है जिन्होंने आधुनिक हिन्दी साहित्य को आकार दिया है। इसके अंतर्गत भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की वैचारिक नींव से लेकर आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता और समकालीन सामाजिक विमर्शों (दलित, स्त्री व आदिवासी) का गहन अध्ययन शामिल है। साथ ही, विद्यार्थी गांधी, अम्बेडकर, लोहिया और विवेकानंद के भारतीय दर्शन के साथ-साथ मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद और त्रासदी जैसे पाश्चात्य सिद्धांतों के प्रभाव का भी विश्लेषण करेंगे। यह पाठ्यक्रम रटने की प्रवृत्ति से इतर विद्यार्थियों में एक मजबूत आलोचनात्मक व विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित करता है, जो उच्च शिक्षा और शोध के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक आधारशिला तैयार करती है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को भारतीय नवजागरण और उसके साहित्यिक एवं सामाजिक प्रभाव से गहराई से परिचित कराना।
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक व दार्शनिक पृष्ठभूमि और उसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति की समझ विकसित करना।
- उन विभिन्न दर्शनों और विचारधाराओं के मूल तत्वों का परिचय देना जिन्होंने समाज और आधुनिक हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया है।
- हिन्दी साहित्य पर विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों और वैचारिक प्रवृत्तियों (जैसे-स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, और मनोविश्लेषणवाद) के प्रभाव का गंभीर परीक्षण करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

- विद्यार्थी साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भारतीय नवजागरण का समग्र मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थियों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि की एक सुदृढ़ और व्यापक समझ विकसित होगी।

- विद्यार्थी समाज और साहित्य को आंदोलित करने वाले विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों तथा दार्शनिक सिद्धांतों के मूलभूत प्रवृत्तियों से पूर्णतः परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी साहित्यिक रचनाओं के आलोचनात्मक विश्लेषण और व्याख्या में सैद्धांतिक एवं वैचारिक ढांचों को प्रभावी ढंग से लागू कर सकेंगे।

इकाई 1: भारतीय नवजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन

- भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि।
- प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन: ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी।
- फोर्ट विलियम कॉलेज का ऐतिहासिक योगदान और हिन्दी गद्य का विकास।

इकाई 2: आधुनिकता और समकालीन वैचारिक विमर्श

- आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता की अवधारणा।
- उत्तर-आधुनिक विमर्श: दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श एवं अल्पसंख्यक विमर्श।
- संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद और विखंडनवाद।

इकाई 3: प्रमुख दार्शनिक एवं राजनीतिक विचारधाराएँ

- गांधीवादी दर्शन, अम्बेडकरवादी दर्शन, लोहिया दर्शन।
- स्वच्छंदतावाद और मनोविश्लेषणवाद।
- स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचार एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता।

इकाई 4: पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यिक सिद्धांत

- स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत: त्रासदी सिद्धांत - अरस्तू, अभिव्यंजनावाद - क्रोचे।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. गणपतिचन्द्र गुप्त – हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, प्रभात प्रकाशन।
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन।
3. नगेन्द्र एवं हरदयाल (संपादक) – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

4. डी. के. प्रभाकर – डॉ. अम्बेडकर दर्शन, नोशन प्रेस, 2021।
5. धीरेन्द्र वर्मा (संपादक) – हिन्दी साहित्य, भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग।
6. चन्द्र देव प्रसाद – गांधी दर्शन, अटलांटिक पब्लिशर, 2014।
7. गोपाल यादव – राममनोहर लोहिया का इतिहास दर्शन, कला प्रकाशन, वाराणसी।
8. नामवर सिंह – दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाशन।
9. रामविलास शर्मा – भारतीय नवजागरण और यूरोप, राजकमल प्रकाशन।
10. मैनेजर पाण्डेय – साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन।
11. शान्तिस्वरूप गुप्त – पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, अशोक प्रकाशन।
12. धर्मवीर भारती – मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ।

PAPER TITLE : विभाजन केन्द्रित कथा-साहित्य
PAPER CODE : DSC-502
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम का परिचय : सन 1947 का भारत-विभाजन केवल एक राजनीतिक घटना या भौगोलिक सीमाओं का पुनर्निर्धारण नहीं था, बल्कि वह मानवीय सभ्यता की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक था। इस ऐतिहासिक घटना ने रातों-रात लाखों लोगों को अपनी जड़ों से काटकर विस्थापित कर दिया। प्रस्तुत पाठ्यक्रम 'विभाजन केंद्रित कथा साहित्य और विस्थापन का समाजशास्त्र' विद्यार्थियों को इतिहास के इसी मानवीय और सामाजिक पक्ष से परिचित कराने का एक प्रयास है। यह पाठ्यक्रम आधिकारिक और राजनैतिक इतिहास के समानांतर साहित्य के माध्यम से उस दौर के यथार्थ को समझने की दृष्टि देता है। भीष्म साहनी के संस्मरण 'आज के अतीत' से शुरू होकर यह पाठ्यक्रम 'तमस' और 'झूठा सच' जैसे वृहद् आख्यानों (उपन्यासों) के ज़रिये सांप्रदायिकता, सत्ता की राजनीति और शरणार्थी संकट के विविध आयामों की पड़ताल करता है। इसके साथ ही, मंटो, अज्ञेय, मोहन राकेश और कृष्णा सोबती की कहानियों के माध्यम से यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विभाजन के दौरान उपजे मनोवैज्ञानिक यथार्थ, मानवीय मूल्यों के संकट और विस्थापन के उत्तर-प्रभावों को समझने का एक बहु-विषयक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- विद्यार्थियों को इतिहास और साहित्य के अंतर्संबंधों को समझाना, ताकि वे जान सकें कि इतिहास जहाँ तथ्य देता है, वहीं साहित्य उस दौर के मानवीय सत्य और दर्द को दर्ज करता है।
- जन-विस्थापन, शरणार्थी समस्या, जड़ों से कटने की पीड़ा और नई जगहों पर पहचान के संकट जैसे सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
- उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों को यह समझाना कि किस प्रकार सांप्रदायिक मानसिकता और राजनैतिक स्वार्थ आम जनता के सांझे सौहार्द और मानवीय मूल्यों को नष्ट कर देते हैं।
- विद्यार्थियों में लोक-स्मृतियों और संस्मरणों के महत्व को स्थापित करना, जो सरकारी दस्तावेज़ों से परे आम इंसानों (विशेषकर महिलाओं और हाशिए के समाज) के अनुभवों को सामने लाते हैं।

पाठ्यक्रम का परिणाम (Course Outcomes)

इस पाठ्यक्रम के सफल समापन के बाद, विद्यार्थी समर्थ होंगे:

- वे विभाजन से संबंधित कथा साहित्य का केवल साहित्यिक मूल्यांकन ही नहीं, बल्कि एक समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से भी आलोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

- सांप्रदायिकता, दंगे और विस्थापन के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझकर, विद्यार्थियों में मानवीय संवेदना, सहिष्णुता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति गहरी समझ और संवेदनशीलता विकसित होगी।
- विद्यार्थी साहित्य, इतिहास और समाजशास्त्र को एक साथ जोड़कर देखने की दृष्टि विकसित कर सकेंगे, जो उन्हें भविष्य के शोध और अकादमिक लेखन में मदद करेगी।
- भीष्म साहनी, यशपाल, मंटो और कृष्णा सोबती जैसे रचनाकारों की शिल्प-विधि और वैचारिक दृष्टिकोण को समझकर, विद्यार्थी समकालीन समय में भी विभाजनकारी प्रवृत्तियों और विस्थापन की समस्याओं पर अपनी तार्किक राय व्यक्त करने में सक्षम होंगे।

इकाई 1: वैचारिक परिप्रेक्ष्य

- विभाजन का इतिहास और समाजशास्त्र: राष्ट्र-निर्माण, सीमा-रेखाएँ और जन-विस्थापन की समस्या।
- स्मृति और साहित्य : इतिहास के समानांतर लोक-स्मृतियों में दर्ज विभाजन का दर्द।
- आज के अतीत - भीष्म साहनी (राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली)

इकाई 2: उपन्यास

- **तमस -** भीष्म साहनी (राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली)

इकाई 3: उपन्यास

- झूठा सच - यशपाल (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

इकाई 4: विभाजन की त्रासदी और मानवीय सरोकार (कहानियाँ - भाग 1)

- टोबा टेक सिंह - साआदत हसन मंटो (अनुवाद)
- शरणदाता - अज्ञेय (अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली)
- मलबे का मालिक - मोहन राकेश (मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एंड सन्स, नयी दिल्ली)
- सिक्का बदल गया - कृष्णा सोबती (बादलों के घेरे, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली)

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. भारत विभाजन और हिन्दी उपन्यास हरियाश।
2. भारत विभाजन और कथा साहित्य डॉ० प्रमिला अग्रवाल।
3. विभाजन और हिन्दी साहित्य के डी शर्मा, साहित्य अकादेमी।
4. भारत-पाक विभाजन और मानव पीड़ा मेहरा, वाणी प्रकाशन।
5. विभाजन का साहित्यिक प्रतिबिम्ब - स शर्मा, वाणी प्रकाशन।

Paper Title : पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी साहित्य
Paper Code : DSC-503
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पूर्वोत्तर भारत के समृद्ध भाषायी, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिदृश्य तथा वहाँ हिन्दी भाषा और साहित्य के उद्भव एवं विकास से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। यह पाठ्यक्रम पूर्वोत्तर की विविध लोक-संस्कृतियों, साहित्यिक परंपराओं तथा राष्ट्रीय चेतना एवं बहुभाषिकता के निर्माण में हिन्दी की भूमिका का गहन विश्लेषण करता है। पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रतिनिधि उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, कहानियों तथा लोक-कथाओं के माध्यम से पूर्वोत्तर के सामाजिक यथार्थ, जनजीवन की संवेदनाओं और स्थानीय सरोकारों का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थी पूर्वोत्तर भारत के हिन्दी साहित्य, अनुवाद परंपरा और संस्थागत प्रयासों का अध्ययन कर बहुसांस्कृतिक समन्वय एवं शोधपरक दृष्टि विकसित करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

- पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के उद्भव, विकास और वर्तमान स्वरूप का ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- पूर्वोत्तर भारत की भाषायी, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परम्पराओं तथा हिन्दी के साथ उनके अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।
- पूर्वोत्तर के प्रमुख हिन्दी रचनाकारों, साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं साहित्यिक संस्थाओं के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे।
- पूर्वोत्तर भारत के साहित्य, लोकसंस्कृति एवं अनुवाद परम्परा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय एवं बहुभाषिकता की अवधारणा को समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के ऐतिहासिक विकास का विवेचन कर सकेंगे।
- पूर्वोत्तर भारत की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं भाषायी परम्पराओं का विश्लेषण कर सकेंगे तथा हिन्दी के साथ उनके अंतर्संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे।
- पूर्वोत्तर के प्रमुख हिन्दी साहित्यकारों, साहित्यिक कृतियों तथा साहित्यिक आंदोलनों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

- पूर्वोत्तर भारत के हिन्दी साहित्य का भारतीय साहित्य, अनुवाद अध्ययन एवं सांस्कृतिक विमर्श के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

इकाई-1 : पूर्वोत्तर भारत

- भाषायी, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिदृश्य
- पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी भाषा एवं साहित्य का विकास (संस्थाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ, हिन्दी प्रचार)

इकाई-2 : उपन्यास

- ब्रह्मपुत्र- देवेन्द्र सत्यार्थी प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 02

इकाई-3 : यात्रा वृत्तांत

- वह भी कोई देस है महाराज- अनिल यादव, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली

इकाई-4 : कहानी

- मिनाम - मोर्जिम लोई, बोधिप्रकाशन, जयपुर
- हुनबा-हुनबी पान थाबा, पुइना-पुइदा - मणिपुर की लोक कथाएँ प्रो. यशवंत सिंह, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. रामविलास शर्मा - भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी - साहित्य का मर्म, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. श्यामाचरण दुबे - भारतीय संस्कृति के स्वरूप, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. नंदकिशोर आचार्य - संस्कृति का व्याकरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. संपा. देवेन्द्र चन्द्र दास - पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी : स्थिति और संभावनाएँ, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
6. हेरराम पाठक - पूर्वोत्तरीय राज्यों में हिन्दी साहित्यलेखन का इतिहास, अनंग प्रकाशन, दिल्ली-53
7. संपा. चन्द्रशेखर चौबे - पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी : भाषा, साहित्य और संस्कृति ,केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
8. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (संपा.) भारतीय साहित्य : विविध आयाम, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

PAPER TITLE	**: हिन्दी का जीवनी साहित्य**
PAPER CODE	**: DSC-504**
PAPER CREDIT	**: 4 (व्याख्यान-4)**
TOTAL MARKS	**: 100 (TH: 60 + IA: 40)**

पाठ्यक्रम परिचय : जीवनी साहित्य केवल किसी व्यक्ति के जीवन का ब्योरा भर नहीं है, बल्कि यह अपने समय के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और साहित्यिक इतिहास को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिंदी जीवनी साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष, उसकी ऐतिहासिक विकास-यात्रा और आधुनिक विमर्शों से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी 'कलम का सिपाही' और 'निराला की साहित्य साधना' जैसी कालजयी साहित्यिक जीवनियों के आलोचनात्मक अध्ययन के साथ-साथ समकालीन परिप्रेक्ष्य में उभरते नए जीवन-विमर्शों (स्त्री, दलित एवं आदिवासी) को गहराई से समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी:

- जीवनी विधा के सैद्धांतिक स्वरूप, विशेषताओं और उसकी ऐतिहासिक विकास-यात्रा को समझ सकेंगे।
- जीवनी तथा अन्य आत्मकथ्य विधाओं के सूक्ष्म अंतर और अंतर्संबंधों की पहचान कर सकेंगे।
- प्रमुख साहित्यिक जीवनियों के माध्यम से जीवनीकारों की दृष्टि, शिल्प, भाषा-शैली और वस्तुनिष्ठता का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- समकालीन दौर में उभरते नए विमर्शों (स्त्री, दलित और आदिवासी) के संदर्भ में जीवनी साहित्य की प्रासंगिकता को रेखांकित कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर विद्यार्थी:

- जीवनी विधा के सैद्धांतिक पक्ष एवं आलोचनात्मक मानदण्डों की स्पष्ट समझ विकसित करेंगे।
- हिंदी की प्रतिनिधि जीवनियों का वस्तुनिष्ठ और आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
- जीवनियों के माध्यम से संबंधित कालखंड के साहित्यिक और सामाजिक इतिहास का सम्यक् बोध प्राप्त करेंगे।
- समकालीन विमर्शों (स्त्री, दलित, आदिवासी) के आलोक में जीवनी साहित्य पर स्वतंत्र शोधपरक चिंतन और लेखन कर सकेंगे।

इकाई–1 : जीवनी विधा का सैद्धांतिक पक्ष

- जीवनी: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- जीवनी की मुख्य विशेषताएँ, जीवनी और आत्मकथा में अंतर
- हिंदी जीवनी साहित्य की विकास यात्रा (भारतेंदु युग से समकालीन दौर तक)

इकाई–2 : साहित्यिक जीवनी

- कलम का सिपाही – अमृतराय

इकाई–3 : व्यक्तित्व एवं कृतित्व आधारित जीवनियाँ

- निराला की साहित्य साधना (प्रथम खंड) – रामविलास शर्मा

इकाई–4 : समकालीन परिप्रेक्ष्य एवं नए विमर्श

- स्त्री-लेखन में जीवनी परंपरा और उसकी चुनौतियाँ
- दलित एवं आदिवासी जीवनियों की अवधारणा एवं प्रमुख रचनाएँ

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. अमृतराय: कलम का सिपाही, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962
2. रामविलास शर्मा: निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1969
3. विष्णु प्रभाकर: आवारा मसीहा, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1974
4. डॉ. चित्रा यादव: हिन्दी का जीवनी साहित्य, विमर्श और विश्लेषण, एम्.बी. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2017
5. डॉ, नगेन्द्र: हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, दिल्ली, 1973
6. हिन्दी जीवनी-साहित्य : सिद्धांत और अध्ययन, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978

Paper Title : हिन्दी आत्मकथा
Paper Code : DSC-505
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60+IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी की 'आत्मकथा विधा' की अवधारणा, उसके क्रमिक विकास और सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी आत्मकथा के सैद्धांतिक पक्षों को समझने के साथ-साथ जीवनी, संस्मरण और डायरी जैसी निकटवर्ती विधाओं से इसके सूक्ष्म अंतरों को पहचान सकेंगे। पाठ्यक्रम में शामिल 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' (हरिवंशराय बच्चन), 'यही सच है' (मन्नू भण्डारी) और 'अक्करमाशी' (डॉ. शरणकुमार लिंबाले) जैसी रचनाओं के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति, अस्मिता और प्रतिरोध के विविध आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन संभव होगा। इसके अलावा, विद्यार्थी आत्मकथात्मक साहित्य के माध्यम से स्त्री, दलित एवं हाशिये के समाज से जुड़े प्रश्नों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे। अंततः, यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में साहित्यिक एवं सामाजिक धरातल पर एक स्वतंत्र, शोधपरक और वस्तुनिष्ठ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

- हिन्दी आत्मकथा की अवधारणा, स्वरूप, विकास-क्रम तथा साहित्यिक महत्त्व का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, डायरी एवं यात्रा-वृत्तांत जैसी निकटवर्ती विधाओं के स्वरूप एवं अंतरों को समझ सकेंगे।
- प्रमुख हिन्दी आत्मकथाओं के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक यथार्थ का विश्लेषण कर सकेंगे।
- स्त्री, दलित, आदिवासी तथा अन्य उपेक्षित समुदायों की आत्मकथाओं के माध्यम से अस्मिता, प्रतिरोध एवं आत्म-अभिव्यक्ति के प्रश्नों का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- हिन्दी आत्मकथा की अवधारणा, स्वरूप एवं विकास-क्रम का विवेचन कर सकेंगे।
- आत्मकथा एवं अन्य आत्मपरक विधाओं का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रमुख हिन्दी आत्मकथाओं का साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

- आत्मकथात्मक साहित्य में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, जाति, वर्ग, लिंग, संस्कृति एवं अस्मिता से जुड़े प्रश्नों की व्याख्या कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्य विषय-

इकाई-1 : हिन्दी आत्मकथा : सैद्धांतिक पक्ष एवं विकास-क्रम

- आत्मकथा का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, महत्त्व एवं विशेषताएँ
- हिन्दी आत्मकथा-लेखन की परम्परा एवं चुनौतियाँ।

इकाई-2 : व्यक्तिगत एवं काव्यात्मक आत्म-अभिव्यक्ति

- क्या भूलूँ क्या याद करूँ - हरिवंशराय बच्चन, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली

इकाई-3 : स्त्री-मनोविज्ञान एवं आधुनिकता

- यही सच है - मन्नू भन्डारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

इकाई-4 : दलित विमर्श, अस्मिता और प्रतिरोध

- मेरा बचपन कन्धों पर (छात्र संस्करण) - श्यौराज सिंह बेचैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी का आत्मकथा साहित्य - डॉ. विश्वबन्धु शास्त्री,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. डॉ. बाबूराव देसाई - हिन्दी आत्मकथा : स्वरूप और साहित्य। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. डॉ. नारायण विष्णु शर्मा - हिन्दी आत्मकथा : सिद्धान्त और विकास। राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. डॉ. भगवानदास वर्मा - हिन्दी आत्मकथा : विकास और मूल्यांकन लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
5. डॉ. कमलेश सिंह - हिन्दी आत्मकथा साहित्य, भावना प्रकाशन, दिल्ली।

PAPER TITLE : हिन्दी संतकाव्य
PAPER CODE : DSC-551
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : 'संत साहित्य' का यह पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिए मध्यकालीन निर्गुण संत काव्यधारा के वैचारिक, सामाजिक और साहित्यिक अवदान को समझने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। यह पाठ्यक्रम कबीरदास, संत रैदास और दादूदयाल जैसे युगप्रवर्तक संतों की मूल रचनाओं के गहन अध्ययन पर केंद्रित है। इसमें केवल संतों की आध्यात्मिक और दार्शनिक चेतना का ही अनुशीलन नहीं किया गया है, बल्कि उनके काव्य शिल्प, उलटबाँसियों तथा तत्कालीन समाज-सुधार के प्रयासों को भी रेखांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह पाठ्यक्रम मध्यकालीन भक्ति आंदोलन को आधुनिक संदर्भों से जोड़ते हुए उसमें अंतर्निहित 'दलित चेतना', 'मानवीय गरिमा' और 'बुनियादी मानवाधिकारों' का एक प्रगतिशील व आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है, जिससे विद्यार्थियों में समकालीन सामाजिक वास्तविकताओं को समझने की एक नई दृष्टि विकसित हो सके।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

- विद्यार्थियों को भक्ति आंदोलन के उदय की परिस्थितियों से परिचित कराना तथा संत काव्य पर नाथ, सिद्ध और बौद्ध दर्शन के प्रभाव का तार्किक विश्लेषण करना।
- विद्यार्थियों को कबीर, रैदास और दादूदयाल की चुनिंदा साखियों और पदों के मूल पाठ से जोड़ना तथा उनमें व्याख्या एवं आलोचना की क्षमता का विकास करना।
- संतों की सधुक्कड़ी भाषा, पंचमेल खिचड़ी, प्रतीक-विधान और विशेष रूप से उलटबाँसियों के अंतर्निहित अर्थ व काव्य-रूपों का शास्त्रीय व व्यावहारिक ज्ञान देना।
- संत साहित्य को केवल मध्यकालीन धार्मिक विमर्श न मानकर, उसमें मौजूद जन्मना जाति व्यवस्था के खंडन, श्रम की प्रतिष्ठा, समतामूलक समाज और मानवाधिकारों की आधुनिक प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

इस पाठ्यक्रम के सफल समापन के बाद विद्यार्थी सक्षम होंगे:

- विद्यार्थी भक्ति आंदोलन के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य और संतों की दार्शनिक पृष्ठभूमि की ऐतिहासिक रूप से विवेचना कर सकेंगे
- विद्यार्थी कबीर की साखियों/पदों, रैदास के पदों और दादूदयाल की रचनाओं का ससंदर्भ अर्थ स्पष्ट करने तथा उनकी साहित्यिक समीक्षा करने में पूरी तरह समर्थ होंगे।

- विद्यार्थी संतों की भाषाई विविधता और उलटबाँसियों के गूढ़ प्रतीकात्मक अर्थों को समझ सकेंगे तथा संत काव्य के कला-पक्ष पर शोधपरक दृष्टिकोण रख सकेंगे।
- विद्यार्थी मध्यकालीन संत साहित्य में मौजूद सामाजिक न्याय, दलित चेतना, मानवीय गरिमा और 'बेगमपुरा' जैसी संकल्पनाओं को आज के वैश्विक मानवाधिकारों और वर्गहीन-जातिहीन समाज के सिद्धांतों के साथ जोड़कर देखने और निबंध/शोध पत्र लिखने योग्य हो सकेंगे।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें :

1. 'मध्ययुगीन काव्य' - सत्यनारायण सिंह (संपादक), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

इकाई 1 : वैचारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक चिंतन

- भक्ति आंदोलन का उदय, तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ।
- निर्गुण संत काव्य पर नाथ, सिद्ध, बौद्ध दर्शन का प्रभाव।
- संत काव्य की प्रवृत्तियाँ - गुरु-महिमा, नाम-स्मरण, रूढ़ियों एवं बाह्याडंबरों का तीखा विरोध, रहस्यवाद और समतामूलक समाज की परिकल्पना।

इकाई 2 : कबीरदास

- साखी: साखी संख्या 1 से 10 तक।
- सबद/पद: पद संख्या 1 से 5 तक।

इकाई 3 : रैदास और दादूदयाल

- **संत रैदास :** पद संख्या - 1 से 10 तक संपूर्ण
- **दादूदयाल (साखी) :** 'दादू नमो...... प्राणमं पारंगतः', 'हस्ति छूटा ...... न वशाय','जेती लहर ...... एक विचार', 'जब लग .... मिलेगा सोई', 'हरि सुमिरण........ चाले सोय','यहु मन कागद ...... हम पास','मन निर्मल .... पूरण परमानंद','जब मन लागे ...... रहै समाय','हीरा मन पर......अविनाशी के संग',
- **दादूदयाल (पद) :** 'बिरहणि कौं सिंगार......मृतक समाना','राम रस मीठा रे......अनत न जाई','हिंदू तुरक न......सुरजन होइ'

इकाई 4 : शिल्प पक्ष, दलित चेतना और मानवाधिकार का मूल्यांकन

- संतों की सधुक्कड़ी भाषा, पंचमेल खिचड़ी, उलटबाँसियों का स्वरूप, प्रतीक-विधान का अध्ययन।
- कबीर और रैदास के काव्य में जाति व्यवस्था का खंडन, श्रम की प्रतिष्ठा, मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय का स्वर।
- मध्यकाल में संतों द्वारा बुनियादी मानवाधिकारों (समानता, स्वतंत्रता आदि) की वकालत; रैदास के 'बेगमपुरा' की आधुनिक मानवाधिकारों के संदर्भ में प्रासंगिकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. उत्तर भारत की सन्त परम्परा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
2. भक्ति काव्य की भूमिका प्रेमशंकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
3. मध्यकालीन बोध का स्वरूप आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
4. मध्यकालीन काव्य : चिन्तन और संवेदना करुणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ नगेन्द्र (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
7. कबीर-मीमांसा - डॉ० रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
8. कबीरदास : विविध आयाम प्रभाकर श्रोत्रिय, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता ।
9. संत रैदास - योगेंद्र सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
10. भारतीय साहित्य के निर्माता रैदास धर्मपाल मैनी, साहित्य अकादेमी ।
11. श्री दादूवाणी - सन्त कविरव स्वामी नारायण दास जी (टीकाकार), श्री दयालु महासभा, जयपुर ।
12. संत कवि दादू: सामाजिक चेतना, दर्शन एवं नीति- डॉ० राजेश कौशिक, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

PAPER TITLE : **हिन्दी कृष्णकाव्य**
PAPER CODE : **DSC-552**
PAPER CREDIT : **4 (व्याख्यान-4)**
TOTAL MARKS : **100 (TH: 60 + IA: 40)**

पाठ्यक्रम परिचय : 'हिन्दी कृष्ण-काव्य' पाठ्यक्रम में कृष्ण-भक्ति आन्दोलन की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक पृष्ठभूमि के साथ हिन्दी कृष्ण-काव्य की परम्परा, विकास और प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन कराया जाता है। इसमें सूरदास, मीराबाई, नरोत्तमदास, हरिऔध तथा धर्मवीर भारती जैसे प्रमुख रचनाकारों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन शामिल है। पाठ्यक्रम कृष्ण-काव्य के प्रेम, भक्ति, वात्सल्य, माधुर्य और सख्य भावों के विविध आयामों को समझने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही कृष्ण-काव्य के सौन्दर्यशास्त्रीय पक्ष, भारतीय सांस्कृतिक चेतना तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता का भी विवेचन किया जाता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में हिन्दी कृष्ण-काव्य की साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परम्परा के प्रति समग्र एवं आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने का उद्देश्य रखता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हिन्दी कृष्ण-काव्य की परम्परा, दार्शनिक पृष्ठभूमि, काव्य-सौन्दर्य तथा सांस्कृतिक महत्ता का अध्ययन कराते हुए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक एवं शोधपरक दृष्टि का विकास करना है। पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी-

- हिन्दी कृष्ण-काव्य की उत्पत्ति, विकास एवं प्रमुख प्रवृत्तियों का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।
- कृष्ण-भक्ति के दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यपरक आधारों को समझ सकेंगे।
- सूरदास, मीराबाई, नंददास, रसखान तथा धर्मवीर भारती जैसे प्रतिनिधि रचनाकारों के कृष्ण-काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- कृष्ण-काव्य की भाषा, शैली, रस, अलंकार एवं काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- हिन्दी कृष्ण-काव्य की परम्परा एवं विकास-क्रम का विवेचन कर सकेंगे।
- कृष्ण-भक्ति के दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आधारों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रमुख कृष्ण-भक्त कवियों एवं उनकी कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- कृष्ण-काव्य की काव्यगत एवं सौन्दर्यगत विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई-1 : **कृष्ण-काव्य : स्वरूप एवं विकास**

- कृष्ण-भक्ति आन्दोलन : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- कृष्ण-भक्ति का दार्शनिक आधार, हिन्दी कृष्ण-काव्य की परम्परा एवं विकास
- कृष्ण-काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- अष्टछाप एवं अन्य सम्प्रदाय निरपेक्ष कवि

इकाई-2 : प्रमुख कृष्ण-भक्त कवि

- सूरदास- वात्सल्य वर्णन (पद सं. 1-20), उद्धव संदेश (पद सं. 36-50-)
- मीराबाई- (पद सं. 1-20)
- नरोत्तमदास- कृष्ण-सुदामा मिलन

इकाई-3 : आधुनिक हिन्दी में कृष्ण-काव्य

- हरिऔध - प्रियप्रवास - (प्रथम सर्ग)
- धर्मवीर भारती - कनुप्रिया - (विप्रलब्धा)

इकाई-4 : कृष्ण-काव्य : सौन्दर्य एवं समकालीन विमर्श

- कृष्ण-काव्य में प्रेम एवं भक्ति
- वात्सल्य, माधुर्य एवं सख्य भाव
- कृष्ण-काव्य का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन
- कृष्ण-काव्य और भारतीय संस्कृति
- कृष्ण-काव्य की समकालीन प्रासंगिकता

मूल ग्रन्थ :

1. सूरदास - सूरसागर - (संपा). धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
2. मीराबाई - मीराबाई पदावली (संपा) आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सदन, प्रयाग।
3. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - प्रियप्रवास, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी
4. नरोत्तमदास-सुदामा चरित, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5. रसखान- रसखान रचनावली, वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली
6. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - प्रियप्रवास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
7. धर्मवीर भारती - कनुप्रिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, सूर-साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हरिवंशलाल शर्मा, सूर और उनका साहित्य,भारत प्रकाशन मन्दिर,अलीगढ़
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी - भक्ति काव्य यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
4. मैनेजर पाण्डेय - भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. शिवकुमार मिश्र - भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. विश्वनाथ त्रिपाठी - मीरा का काव्य, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली
7. नीलम गुप्ता- कनुप्रिया : नव मूल्यांकन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
8. डॉ. उषा बनसोडे- प्रिय प्रवास : एक अनुशीलन, विनय प्रकाशन, कानपुर

Paper Title : समकालीन हिन्दी साहित्य
Paper Code : DSC-553
Paper Credit : 4 (व्याख्यान-4)
Total Marks : 100 (TH-60 + IA-40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को समकालीन हिन्दी साहित्य की वैचारिक, सामाजिक और शिल्पगत विविधता से गहराई से परिचित कराने के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। वर्तमान समय में साहित्य न केवल सामाजिक यथार्थ का दर्पण है, बल्कि यह उत्तर-आधुनिकता, वैश्वीकरण, बाजारवाद तथा स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श जैसे नए अस्मितामूलक प्रश्नों को समझने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम भी है। पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को समकालीन हिन्दी कविता, कहानी और उपन्यास के प्रतिनिधि पाठों के माध्यम से साहित्यिक प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की दृष्टि प्रदान की जाएगी। इसके साथ ही, यह पाठ्यक्रम डिजिटल युग में साहित्य के बदलते आयामों- जैसे साइबर लेखन, सोशल मीडिया, फिल्म/वेब-श्रृंखला रूपांतरण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रभाव का अध्ययन कर विद्यार्थियों में शोधपरक, तुलनात्मक और समीक्षात्मक कौशल विकसित करने पर बल देता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों, विमर्शों, साहित्यिक आंदोलनों एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों से परिचित कराते हुए उनमें आलोचनात्मक, तुलनात्मक एवं शोधपरक दृष्टि का विकास करना है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी-

- समकालीन हिन्दी साहित्य की अवधारणा, स्वरूप, विकास एवं प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।
- समकालीन हिन्दी कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक एवं अन्य गद्य-विधाओं में अभिव्यक्त सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक सरोकारों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श, पर्यावरण-विमर्श, उत्तर-आधुनिकता, वैश्वीकरण तथा बाजारवाद जैसी समकालीन अवधारणाओं का साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कर सकेंगे।
- समकालीन साहित्य के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी प्रतिनिधि कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों, अवधारणाओं एवं विकास-क्रम का विवेचन कर सकेंगे।

- समकालीन हिन्दी साहित्य में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं वैचारिक प्रश्नों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- समकालीन साहित्य की विभिन्न विधाओं एवं प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- समकालीन साहित्य में स्त्री, दलित, आदिवासी, पर्यावरण, वैश्वीकरण, मीडिया एवं अस्मिता-विमर्श जैसे विविध विमर्शों की व्याख्या एवं तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- समकालीन हिन्दी साहित्य पर शोधपरक लेखन, पुस्तक समीक्षा, सेमिनार-पत्र तथा स्वतंत्र आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

इकाई-1 : समकालीन हिन्दी साहित्य : अवधारणा एवं विकास

- समकालीनता : अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा, समकालीन हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
- समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, उत्तर-आधुनिकता, वैश्वीकरण एवं बाजारवाद
- समकालीन साहित्य की भाषा एवं शिल्पगत विशेषताएँ

इकाई-2 : समकालीन हिन्दी साहित्य : नए आयाम, मीडिया एवं तकनीकी (AI)

- समकालीन हिन्दी साहित्य : नए आयाम
- डिजिटल साहित्य एवं साइबर लेखन
- ब्लॉग, वेब-पत्रिकाएँ एवं सोशल मीडिया लेखन
- साहित्य का फिल्म एवं वेब-श्रृंखला रूपान्तरण
- अनुवाद और वैश्विक हिन्दी
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं साहित्य

इकाई-3 : समकालीन हिन्दी कविता : सामाजिक सरोकार एवं जनचेतना

- समकालीन हिन्दी कविता
- मुनासिब काररवाई- धूमिल
- जनता की जमीन पर- लीलाधर जगूड़ी
- आधी रात- कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह (समकालीन कविता- डॉ. मालती तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)

इकाई-4 : समकालीन हिन्दी गद्य : कहानी एवं उपन्यास (संवेदना और यथार्थ)

- समकालीन हिन्दी कहानी एवं उपन्यास
- बदबू- शेखर जोशी
- जिन्दगी और जोंक- अमरकांत
- वापसी- उषा प्रियंबदा
- नौकर की कमीज़- विनोद कुमार शुक्ल, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. नामवर सिंह - कहानी : नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
2. रामस्वरूप चतुर्वेदी - समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य।, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. गंगाप्रसाद विमल - आधुनिकता : साहित्य के संदर्भ में,मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली।
4. मधुरेश - हिन्दी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
5. शंभू गुप्त - कहानी : समकालीन चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. रोहिणी अग्रवाल - समकालीन साहित्य : सरोकार और चुनौतियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकुला।
7. निर्मला जैन - आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

PAPER TITLE : प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य
PAPER CODE : DSC-554
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम का परिचय : वैश्विक पटल पर हिन्दी साहित्य का विस्तार केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रवासियों के संघर्ष, पहचान की खोज और सांस्कृतिक अस्मिता का जीवंत दस्तावेज़ है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को प्रवासी हिन्दी साहित्य के विविध आयामों से परिचित कराता है। गिरमिटिया मज़दूरों के ऐतिहासिक दर्द से लेकर आधुनिक तकनीकी युग के 'ब्रेन ड्रेन' और कॉर्पोरेट विस्थापन तक, यह पाठ्यक्रम साहित्य के माध्यम से वैश्विक हिन्दी परिदृश्य का मूल्यांकन करता है। इसमें मॉरीशस, यू.के., यू.एस.ए. और खाड़ी देशों के प्रमुख रचनाकारों की कृतियों के माध्यम से 'नॉस्टेल्जिया' (घर की याद), सांस्कृतिक द्वंद्व और वैश्विक नागरिकता के सरोकारों को समाजशास्त्रीय दृष्टि से समझने पर बल दिया गया है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

- विश्व फलक पर हिन्दी के प्रसार, वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके महत्व का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
- प्रवासियों के जीवन में अपनी जड़ों से बिछड़ने की पीड़ा, नस्लभेद, सांस्कृतिक घालमेल और नई ज़मीन पर पहचान की चुनौतियों का विश्लेषण करना।
- गिरमिटिया प्रथा के ऐतिहासिक उपनिवेशवाद (जैसे मॉरीशस का संदर्भ) और आधुनिक युग के स्वेच्छा-प्रवास के अंतर को साहित्यिक कृतियों के माध्यम से समझाना।
- प्रवासी जीवन में महिलाओं के विशिष्ट संघर्षों, उनके अकेलेपन और दोहरे सांस्कृतिक दबावों की पड़ताल करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

इस पाठ्यक्रम के सफल समापन के बाद, विद्यार्थी समर्थ होंगे:

- वे वैश्विक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियों और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की गहरी आलोचनात्मक समझ प्रदर्शित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रवासियों की सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं (जैसे- सांस्कृतिक अलगाव, नई पीढ़ी के साथ वैचारिक दूरी) का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- विभिन्न देशों (मॉरीशस, ब्रिटेन, अमेरिका) की पृष्ठभूमि में लिखे गए साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने की शोध-दृष्टि विकसित होगी।

- विद्यार्थी समकालीन वैश्विक परिदृश्य में प्रवासियों के योगदान, संबंधों के बाज़ारीकरण और अपनी ज़मीन की तलाश जैसे मानवीय सरोकारों पर तार्किक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण व्यक्त कर सकेंगे।

इकाई 1: वैचारिक परिप्रेक्ष्य और पृष्ठभूमि

- 'प्रवासी साहित्य' की सैद्धांतिक अवधारणा और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (गिरमिटिया इतिहास से आधुनिक विस्थापन तक) ।
- प्रवासी साहित्य के मुख्य विषय और सरोकार (अस्मिता का संकट, नॉस्टेल्जिया, सांस्कृतिक द्वंद्व और स्त्री विमर्श)। विश्व हिन्दी सम्मेलनों की भूमिका और वैश्विक स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार।

इकाई 2: प्रमुख प्रवासी रचनाकार

- प्रमुख रचनाकारों का परिचयात्मक अध्ययन: अभिमन्यु अनत, तेजेन्द्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, सुषम वेदी, सुधा ओम ढींगरा, जाकिया जुबेरी और पूर्णिमा बर्मन।

इकाई 3: प्रवासी उपन्यास

- लाल पसीना - अभिमन्यु अनत

इकाई 4: प्रवासी कहानियाँ

- कोख का किराया - तेजेन्द्र शर्मा
- साँकल - जाकिया जुबेरी
- कौन-सी ज़मीन अपनी - सुधा ओम ढींगरा
- यों ही चलते हुए - पूर्णिमा बर्मन

पाठ्यपुस्तकें एवं ऑनलाइन लिंक्स :

1. भारत और विश्व पटल पर हिन्दी डॉ० सुशीला गुप्ता (संपा.), अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नयी दिल्ली।
2. लाल पसीना - अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. कोख का किराया - तेजेन्द्र शर्मा
https://www.hindisamay.com/content/1051/1/तेजेंद्र-शर्मा-कहानियाँ-कोख-का-किराया.cspx
4. साँकल - जाकिया जुबेरी
https://www.matrubharti.com/novels/16546/saankal-by-zakia-zubairi
5. कौन-सी ज़मीन अपनी सुधा ओम ढींगरा, भावना प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. यों ही चलते हुए - पूर्णिमा बर्मन

http://www.abhivyakti-hindi.org/lekhak/purnimavarman.htm

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. विश्वपटल पर हिन्दी सूर्यप्रसाद दीक्षित, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. अभिमन्यु अनत का उपन्यास साहित्य डॉ० श्रीचित्रा. वी. एस., विद्या प्रकाशन, कानपुर।
3. तेजेन्द्र शर्मा का रचना-संसार प्रो० प्रदीप श्रीधर, विनय प्रकाशन, कानपुर।
4. साँकल : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पूजा प्रजापति, साहित्य रत्नाकर, कानपुर।
5. हिन्दी का प्रवासी साहित्य डॉ० कालीचरण नेही, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
6. प्रवासी लेखन : नयी ज़मीन नया आसमान अनिल जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
7. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य डॉ० विमलेश कांति शर्मा (संपा.), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

PAPER TITLE : पटकथा एवं संवाद लेखन
PAPER CODE : DSC-555
PAPER CREDIT : 4 (व्याख्यान-4)
TOTAL MARKS : 100 (TH: 60 + IA: 40)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों को पटकथा एवं संवाद लेखन के सैद्धान्तिक आधारों तथा व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराने के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। इसमें पटकथा के स्वरूप, सिद्धान्त, तत्त्व, लेखन-प्रक्रिया तथा भारतीय एवं विश्व सिनेमा में उसके विकास का व्यवस्थित अध्ययन कराया जाता है। साथ ही संवाद-लेखन, चरित्र-निर्माण, दृश्यात्मक भाषा, मौन एवं उपपाठ की अभिव्यक्तिपरक भूमिका का विश्लेषण किया गया है। पाठ्यक्रम में साहित्यिक कृतियों के पटकथा-रूपान्तरण की प्रक्रिया, उसके सैद्धान्तिक आधार, चुनौतियों तथा हिन्दी साहित्य पर आधारित प्रमुख फिल्मों एवं वेब-श्रृंखलाओं के आलोचनात्मक अध्ययन को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त लघु फिल्म, वृत्तचित्र तथा वेब-श्रृंखला के लिए पटकथा एवं संवाद लेखन का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हुए विद्यार्थियों में सृजनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्यावसायिक लेखन-कौशल का विकास करना इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों को पटकथा एवं संवाद लेखन की सैद्धान्तिक समझ तथा व्यावहारिक दक्षता प्रदान करना है। पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी-

- पटकथा, दृश्य-विन्यास एवं संवाद लेखन की मूलभूत अवधारणाओं तथा सैद्धान्तिक आधार को समझ सकेंगे।
- साहित्य, नाटक, उपन्यास एवं कहानी के फिल्म, टेलीविजन तथा वेब-माध्यम में रूपान्तरण की प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकेंगे।
- चलचित्र, दूरदर्शन एवं ओटीटी (OTT) मंचों के लिए प्रभावी पटकथा एवं संवाद लेखन की तकनीकों में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- चरित्र-निर्माण, दृश्य-संरचना, कथानक-विकास एवं संवाद-सृजन की व्यावहारिक क्षमता विकसित करेंगे।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- स्वतंत्र रूप से लघु फिल्म, वृत्तचित्र, टेलीफिल्म अथवा वेब-श्रृंखला की पटकथा तैयार करने में सक्षम होंगे।

- साहित्यिक कृतियों के दृश्य-माध्यम में रूपान्तरण का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- प्रभावी एवं पात्रानुकूल संवाद लेखन की व्यावहारिक दक्षता अर्जित करेंगे।
- पटकथा लेखन से सम्बन्धित तकनीकी शब्दावली एवं उद्योग-मानकों (Industry Standards) को समझ सकेंगे।

इकाई – 1 : पटकथा : स्वरूप, सिद्धान्त एवं विकास

- पटकथा : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप। पटकथा, कहानी, नाटक एवं उपन्यास का अन्तर्सम्बन्ध।
- पटकथा के तत्त्व : कथानक, दृश्य, अनुक्रम, दृश्य-रचना। पटकथा लेखन की प्रक्रिया एवं प्रारूप।
- भारतीय एवं विश्व सिनेमा में पटकथा का विकास।

इकाई – 2 : संवाद लेखन एवं चरित्र-निर्माण

- संवाद : स्वरूप, उद्देश्य एवं विशेषताएँ, प्रभावी संवाद लेखन की तकनीक
- चरित्र-निर्माण एवं चरित्रानुकूल भाषा, मौन, उपपाठ एवं दृश्यात्मक भाषा
- फिल्म, दूरदर्शन एवं वेब-श्रृंखला के संवादों का तुलनात्मक अध्ययन

इकाई – 3 : साहित्य का रूपान्तरण एवं पटकथा

- साहित्य का सिनेमा में रूपान्तरण : सिद्धान्त एवं प्रक्रिया
- कहानी, उपन्यास एवं नाटक का पटकथा में रूपान्तरण
- हिन्दी साहित्य पर आधारित प्रमुख फिल्मों एवं वेब-श्रृंखलाओं का अध्ययन
- रूपान्तरण की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ
- पटकथा का आलोचनात्मक मूल्यांकन

इकाई – 4 : व्यावहारिक पटकथा एवं संवाद लेखन

- लघु फिल्म की पटकथा
- वृत्तचित्र की पटकथा
- वेब-श्रृंखला लेखन की संरचना
- पटकथा प्रस्तुतीकरण

हिन्दी ग्रन्थ

1. असगर वजाहत. पटकथा लेखन. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. मनोहर श्याम जोशी. पटकथा लेखन : सिद्धान्त और व्यवहार. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. विनोद भारद्वाज. सिनेमा : कल, आज और कल. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. जगदीश्वर चतुर्वेदी. जनसंचार माध्यम और हिन्दी. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. विजय अग्रवाल. फिल्म अध्ययन : सिद्धान्त और व्यवहार. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. सत्यजीत रे. Our Films, Their Films (हिन्दी अनुवाद उपलब्ध). Penguin / Orient Blackswan.

नवम छमाही

PAPER TITLE : लघु शोध-प्रबंध (फेज-1)
PAPER CODE : DSR-501
PAPER CREDIT : 20 (व्याख्यान-20)
TOTAL MARKS : 500
(लघु शोध-प्रबंध लेखन: 300 अंक | प्रस्तुति एवं मौखिकी: 200 अंक)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (PG) स्तर पर विद्यार्थियों के भीतर उन्नत शोध-दृष्टि, मौलिक चिंतन और शास्त्रीय विश्लेषणात्मक क्षमता के विकास के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। यह शोध-प्रबंध का पहला चरण (फेज-1) है, जो विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विस्तृत क्षेत्र में स्वतंत्र, तुलनात्मक अथवा अंतर्विषयी अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी शोध की मानक प्रविधियों, संदर्भ-प्रणाली, भाषा-टंकण और डिजिटल प्रस्तुतिकरण जैसी व्यावहारिक और तकनीकी दक्षताओं में पारंगत होते हैं। यह पाठ्यक्रम शोध-नैतिकता एवं वस्तुनिष्ठता का पालन करते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान के मौजूदा क्षेत्र में मौलिक योगदान देने के लिए तैयार करता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- विद्यार्थियों को मानक शोध-विधियों, संरचना, संदर्भ-सूची निर्माण (APA स्टाइल) एवं शोध-प्रबंध लेखन की शास्त्रीय प्रक्रिया से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा, साहित्य अथवा अन्य भाषाओं/विधाओं के साथ तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन करने के लिए सक्षम बनाना।
- शोध-प्रबंध के कंप्यूटर टंकण तथा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन (PPT) के माध्यम से अपनी शोध-सामग्री को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का कौशल विकसित करना।
- चयनित शोध-समस्या पर वस्तुनिष्ठता, मौलिकता और गंभीरता के साथ समीक्षात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता का निर्माण करना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक चोरी (Plagiarism) के प्रति जागरूकता और शोध-नैतिकता (Ethics) का पालन करने की संस्कृति को बढ़ावा देना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes)

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के उपरांत विद्यार्थी:

- हिन्दी भाषा एवं साहित्य से संबंधित विषय का स्वतंत्र अथवा तुलनात्मक/व्यतिरेकी अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

- शोध-प्रबंध की तैयारी के दौरान हिन्दी टंकण तथा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से तकनीकी दक्षता प्रदर्शित कर सकेंगे।
- शोध की मानक प्रविधियों एवं सैद्धांतिक सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुप्रयोग कर सकेंगे।
- वस्तुनिष्ठ एवं आलोचनात्मक दृष्टि के साथ चयनित शोध-विषय का समीक्षात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- शोधपरक एवं शोधान्वेषी दृष्टिकोण द्वारा ज्ञान के मौजूदा क्षेत्र में मौलिक योगदान दे सकेंगे।

लघु शोध-प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुति के नियम व शर्तें:

1. लघु शोध-प्रबंध का विषय हिन्दी भाषा, साहित्य अथवा अन्य भाषा-साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित होना अनिवार्य है।
2. शोध-विषय एवं शोध-निर्देशक का आवंटन छमाही के प्रारंभ में ही विभाग द्वारा किया जाएगा।
3. फेज- 1 का शोध-विषय FYUGP की अष्टम छमाही के शोध-विषय से पूर्णतः पृथक एवं स्वतंत्र होना अनिवार्य है।
4. लघु शोध-प्रबंध की शब्द-सीमा 40,000 से 50,000 शब्द (अनुशंसित) होगी। यह प्रस्तावना, उपसंहार, संदर्भ-ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट के अतिरिक्त न्यूनतम चार अध्यायों में विभाजित होगा।
5. विद्यार्थी को शोध-प्रबंध स्वयं कंप्यूटर पर टंकित कर, मानक शोध-प्रविधि (APA Style) के अनुसार तैयार करके छमाही के अंतिम माह के प्रथम 15 दिनों के भीतर जमा करना होगा।
6. विद्यार्थी को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन (PPT) द्वारा शोध-प्रस्तुति देनी होगी। प्रस्तुति के समय विभागाध्यक्ष, शोध-निर्देशक, विभागीय प्राध्यापक एवं विश्वविद्यालय/महाविद्यालय द्वारा नामित प्रतिनिधि की उपस्थिति अनिवार्य होगी।
7. मूल्यांकन प्रक्रिया (500 अंक):

- लेखन मूल्यांकन (300 अंक): आंतरिक (शोध-निर्देशक) एवं बाह्य परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से।
- प्रस्तुति/मौखिकी मूल्यांकन (200 अंक): त्रिस्तरीय समिति द्वारा—कुलपति/अध्यक्ष प्रतिनिधि (65 अंक), विभागाध्यक्ष (70 अंक) तथा शोध-निर्देशक (65 अंक)।

8. शोधपरक एवं शोधान्वेषी दृष्टिकोण द्वारा ज्ञान के मौजूदा क्षेत्र में मौलिक योगदान दे सकेंगे। मूल्यांकन के समय विद्यार्थी की शोध-नैतिकता (Research Ethics), प्लेगियरिज़्म (Plagiarism) नियंत्रण, वैज्ञानिकता तथा मौलिक उद्भावना-क्षमता को ध्यान में रखा जाएगा।

दशम छमाही

PAPER TITLE : लघु शोध-प्रबंध (फेज-2)
PAPER CODE : DSR-551
PAPER CREDIT : 20 (व्याख्यान-20)
TOTAL MARKS : 500
(लघु शोध-प्रबंध लेखन: 300 अंक | प्रस्तुति एवं मौखिकी: 200 अंक)

पाठ्यक्रम परिचय : यह पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर (PG) स्तर का अंतिम एवं सर्वोच्च अनुसंधानात्मक चरण (फेज-2) है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उच्चस्तरीय स्वतंत्र शोध, सूक्ष्म विश्लेषण तथा मौलिक विचार-स्थापना के योग्य बनाना है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा, साहित्य तथा अंतर्विषयी विषयों से जुड़ी जटिल समस्याओं का समाधान खोजने और नव-उन्मेषकारी शोध-दृष्टि विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी शोध-सामग्री के संकलन, वर्गीकरण, डिजिटलीकरण और मानक शोध-प्रविधि के प्रयोग में पूर्ण दक्षता हासिल करते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध-नैतिकता, निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता के साथ अपने शोध-निष्कर्षों को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन (PPT) तथा मौखिकी (Viva-Voce) के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए तैयार करता है, जिससे वे भविष्य में स्वतंत्र शोधकर्ता और समीक्षक के रूप में स्थापित हो सकें।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा एवं साहित्य के गंभीर, विश्लेषणात्मक तथा अंतर्विषयी/तुलनात्मक अध्ययन के लिए सक्षम बनाना।
- शोध-सामग्री के संकलन, डिजिटलीकरण, कंप्यूटर टंकण तथा डेटा विश्लेषण की उच्चस्तरीय तकनीकी क्षमता विकसित करना।
- मानक शोध-प्रविधि (APA Style) और शोध-संरचना का शुद्धतापूर्वक पालन करते हुए शोध-प्रबंध लेखन की दक्षता प्रदान करना।
- शोध की जटिलताओं को समझते हुए व्यावहारिक शोध-समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना और नए सिद्धांतों तथा मौलिक दृष्टिकोणों की स्थापना करना।
- शोध-नैतिकता और प्लेगियरिज़्म-मुक्त मानकों का पालन करते हुए अपने शोध-निष्कर्षों को मौखिक एवं प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करने का आत्मविश्वास विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के उपरांत विद्यार्थी:

- हिन्दी भाषा एवं साहित्य के उन्नत एवं सूक्ष्म अनुसंधानात्मक अध्ययन में सक्षम होंगे।
- शोध-सामग्री के संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं डिजिटलीकरण की उच्च तकनीकी क्षमता प्रदर्शित करेंगे।
- शोध-पद्धति की जटिलताओं को समझते हुए शोध-समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।
- स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं उच्चस्तरीय आलोचनात्मक चिंतन का विकास कर सकेंगे।
- हिन्दी शोध के क्षेत्र में नए दृष्टिकोण, सिद्धान्त एवं मौलिक स्थापनाएँ प्रस्तुत करने योग्य बनेंगे।

लघु शोध-प्रबंध (फेज-2) लेखन एवं प्रस्तुति के नियम व शर्तें:

1. लघु शोध-प्रबंध का विषय हिन्दी भाषा, साहित्य अथवा अन्य अंतर्विषयी/तुलनात्मक विषय से संबंधित होना अनिवार्य है।
2. शोध-विषय एवं शोध-निर्देशक का आवंटन छमाही के प्रारंभ में ही विभाग द्वारा किया जाएगा।
3. फेज-2 का शोध-विषय अष्टम छमाही तथा नवम छमाही (फेज-1) के शोध-विषयों से पूर्णतः भिन्न और स्वतंत्र होना अनिवार्य है।
4. लघु शोध-प्रबंध की शब्द-सीमा 40,000 से 50,000 शब्द (अनुशंसित) होगी। यह प्रस्तावना, उपसंहार, संदर्भ-ग्रंथ सूची आदि के अतिरिक्त कम-से-कम चार अध्यायों में सुगठित होना चाहिए।
5. विद्यार्थी को शोध-प्रबंध स्वयं कंप्यूटर पर टंकित कर, मानक शोध-प्रविधि (APA Style) के अनुसार तैयार करके छमाही के अंतिम माह के प्रथम 15 दिनों के भीतर जमा करना होगा।
6. विद्यार्थी को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने शोध-निष्कर्षों को प्रस्तुत करना होगा। समिति में विभागाध्यक्ष, शोध-निर्देशक, विभागीय प्राध्यापक एवं विश्वविद्यालय/महाविद्यालय द्वारा नामित प्रतिनिधि की उपस्थिति अनिवार्य होगी।
7. मूल्यांकन प्रक्रिया (500 अंक):
   • लेखन मूल्यांकन (300 अंक): आंतरिक (शोध निर्देशक) एवं बाह्य परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से।
   • प्रस्तुति/मौखिकी मूल्यांकन (200 अंक): मूल्यांकन समिति द्वारा-कुलपति/अध्यक्ष प्रतिनिधि (65 अंक), विभागाध्यक्ष (70 अंक) तथा शोध-निर्देशक (65 अंक)।
8. मूल्यांकन के दौरान शोध की मौलिकता, शोध-नैतिकता, संदर्भ-प्रणाली की शुद्धता एवं विश्लेषणात्मक गुणवत्ता को प्राथमिक मानदंड माना जाएगा।

Four Year Undergraduate Programme

Subject: HINDI

Template for HINDI

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Title	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (Major)	10/12वीं कक्षा में हिन्दी	1	हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल तक)	DSC-101	4	4	0	0	40	60
		2	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	DSC-151	4	4	0	0	40	60
		3	भारतीय काव्यशास्त्र	DSC-201	4	4	0	0	40	60
			आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता	DSC-202	4	4	0	0	40	60
		4	भाषा-विज्ञान	DSC-251	4	4	0	0	40	60
			आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)	DSC-252	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी कथा साहित्य	DSC-253	4	4	0	0	40	60
		5	हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता	DSC-301	4	4	0	0	40	60
			छायावादोत्तर हिन्दी कविता	DSC-302	4	4	0	0	40	60
			प्रयोजनमूलक हिन्दी	DSC-303	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ	DSC-304	4	4	0	0	40	60
		6	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	DSC-351	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी नाटक एवं एकांकी	DSC-352	4	4	0	0	40	60
			प्रादेशिक साहित्य (असमीया)	DSC-354	4	4	0	0	40	60

Template For Common Course (MINOR)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Title	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (For One Major or One Minor Programme)	10/12 वीं कक्षा में हिन्दी	1	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता	DSM-101	4	4	0	0	40	60
		2	आधुनिक हिन्दी कविता	DSM-151	4	4	0	0	40	60
		3	हिन्दी कथा साहित्य	DSM-201	4	4	0	0	40	60
		4	प्रयोजनमूलक हिन्दी	DSM-251	4	4	0	0	40	60
		5	हिन्दी साहित्य का इतिहास	DSM-301	4	4	0	0	40	60
		6	हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि	DSM-351	4	4	0	0	40	60

Template For Common Course (MINOR)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Title	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (For Two Minor Programme)	10/12 वीं कक्षा में हिन्दी	1	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता	DSM-101	4	4	0	0	40	60
		2	आधुनिक हिन्दी कविता	DSM-151	4	4	0	0	40	60
		3	हिन्दी कथा साहित्य	DSM-201	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी साहित्य सिद्धांत	DSM-202	4	4	0	0	40	60
		4	प्रयोजनमूलक हिन्दी	DSM-251	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी साहित्य सिद्धांत	DSM-252	4	4	0	0	40	60
		5	हिन्दी साहित्य का इतिहास	DSM-301	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार	DSM-302	4	4	0	0	40	60
		6	हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि	DSM-351	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार	DSM-352	4	4	0	0	40	60

Template For Common Course (IDC)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Title	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (IDC)	10/12 वीं कक्षा में हिन्दी	1	हिन्दी साहित्य का इतिहास	IDC-101	3	3	0	0	30	45
		2	हिन्दी काव्यधारा	IDC-151	3	3	0	0	30	45
		3	हिन्दी गद्य साहित्य	IDC-201	3	3	0	0	30	45

Template For Common Course (SEC)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Title	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks/ Practical	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (SEC)	10/12 वीं कक्षा में हिन्दी	1	अनुवाद विज्ञान	SEC-101	3	3	0	0	25 (PR.)	50
		2	सम्पादन प्रक्रिया	SEC-151	3	3	0	0	30	45
		3	साहित्य और सिनेमा	SEC-201	3	3	0	0	30	45

Template For Common Course (AEC)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Title	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (AEC)	10/12 वीं कक्षा में हिन्दी	1	हिन्दी व्याकरण एवं संप्रेषण	AEC-101	2	2	0	0	20	30
		2	व्यावहारिक हिन्दी लेखन	AEC-201	2	2	0	0	20	30

Template for HIN (Fourth Year) (FYUGP in Hindi with Honors)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Course name	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (Honours)	HINDI as a MAJOR or MINOR Subject up to 3rd Year	7	अस्मितामूलक विमर्श	DSC-401	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी आलोचना	DSC-402	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी साहित्य अस्तित्ववाद और मनोविज्ञान	DSC-403	4	4	0	0	40	60
			भारतीय साहित्य अथवा	DSC-404	4	4	0	0	40	60
			शोध प्रविधि (RM is Mandatory requirement for those who are selected for Honours with Research)	RM-401	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी नाटक	DSM-401	4	4	0	0	40	60
		8	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा	DSC-451	4	4	0	0	40	60
			आधुनिक हिन्दी काव्य	DSC-452	4	4	0	0	40	60
			लोक साहित्य	DSC-453	4	4	0	0	40	60
			परियोजना कार्य	DSC-454	4	4	0	0	40	60
			साहित्यकार विशेष - प्रेमचन्द	DSE-451	4	4	0	0	40	60

Template for HIN (Fourth Year) (FYUGP in Hindi Honors with Research)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Course name	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
FYUGP in HIN (Honours With Research)	HINDI as a MAJOR or MINOR Subject up to 3rd Year	7	अस्मितामूलक विमर्श	DSC-401	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी आलोचना	DSC-402	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी साहित्य अस्तित्ववाद और मनोविज्ञान	DSC-403	4	4	0	0	40	60
			शोध प्रविधि	RM-401	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी नाटक	DSM-401	4	4	0	0	40	60
		8	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा	DSC-451	4	4	0	0	40	60
			लघु शोध-प्रबंध (Dissertation) (Only for those who are selected for Honours with Research)	DSR-452	12	12	0	0	120	180
			साहित्यकार विशेष - प्रेमचन्द	DSM-451	4	4	0	0	40	60

One Year Postgraduate Programme

Subject: HINDI

Template for HINDI One Year Postgraduate Programme (Course Work)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Course name	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
1-year PG Programme in HIN (Course Work)	FYUGP in HIN (Honours or Honours with Research)	9	हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि	DSC-501	4	4	0	0	40	60
			विभाजन केन्द्रित कथा-साहित्य	DSC-502	4	4	0	0	40	60
			पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी साहित्य	DSC-503	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी का जीवनी साहित्य	DSC-504	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी आत्मकथा	DSC-505	4	4	0	0	40	60
		10	हिन्दी संतकाव्य	DSC-551	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी कृष्णकाव्य	DSC-552	4	4	0	0	40	60
			समकालीन हिन्दी साहित्य	DSC-553	4	4	0	0	40	60
			प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य	DSC-554	4	4	0	0	40	60
			पटकथा एवं संवाद लेखन	DSC-555	4	4	0	0	40	60

One Year Postgraduate Programme

Subject: HINDI

Template for HINDI One Year Postgraduate Programme (Course Work & Research)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Course name	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
1-year PG Programme in HIN (Course Work & Research)	FYUGP in HIN (Honours or Honours with Research)	9	हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि	DSC-501	4	4	0	0	40	60
			विभाजन केन्द्रित कथा-साहित्य	DSC-502	4	4	0	0	40	60
			पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी साहित्य	DSC-503	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी का जीवनी साहित्य	DSC-504	4	4	0	0	40	60
			हिन्दी आत्मकथा	DSC-505	4	4	0	0	40	60
		10	लघु शोध-प्रबंध (Dissertation) (Only for those who will opt PG by Course Work & Research)	DSR-551	20	20	0	0	200	300

One Year Postgraduate Programme

Subject: HINDI

Template for HINDI One Year Postgraduate Programme (Research)

Programme name	Eligibility Criteria of the programme, if any	Semester	Course name	Course code	Credits	Credit distribution of the course			Internal marks	External Marks
						L	T	P		
1-year PG Programme in HIN (Course Work & Research)	FYUGP in HIN (Honours or Honours with Research)	9	लघु शोध-प्रबंध (Dissertation Phase - 1) (For those who will opt for PG Degree by Research Only)	DSR-501	20	20	0	0	200	300
		10	लघु शोध-प्रबंध (Dissertation Phase - 2) (For those who will opt for PG Degree by Research Only)	DSR-551	20	20	0	0	200	300